नाथ पब्लिकेशन

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) व राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB) की विभिन्न परीक्षाओं हेतु उपयोगी पुस्तक

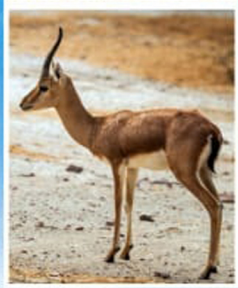

राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था

नव गठित संभागों एवं जिलों के अनुसार

एच.पी. टेलर

नाथ पब्लिकेशन

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) व
राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)
की विभिन्न परीक्षाओं हेतु उपयोगी पुस्तक

राजस्थान का
भूगोल एवं
अर्थव्यवस्था

(नवगठित संभागों एवं जिलों के अनुसार)

-: संपादक :-

एच.पी. टेलर

व्याख्याता (भूगोल)

प्रकाशक :

नाथ पब्लिकेशन

C/o श्रीनाथ रोजगार सेन्टर
कोर्ट रोड़, सीकर (राज.)

लेजर टाइपसैटिंग
सुरेश कुमार प्रजापत
मो. - 7231818713

यद्यपि तथ्यों की सत्यता सुनिश्चित करने में सभी संभव सावधानियाँ रखी गयी हैं तथापि पुस्तक में किसी त्रुटि या अन्य दोषों के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं विक्रेता उत्तरदायी नहीं होंगे। इस प्रकाशन को अथवा इसके किसी अंश को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के किसी भी रूप (फोटोग्राफी, विद्युतग्राफिक, यांत्रिकी अथवा अन्य रूपों) में किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए नहीं छापा जा सकता। किसी भी परिवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र सीकर (राजस्थान) होगा।

Thanks to .....

सत्यपाल सिंह
सहायक वन संरक्षक (ACF)

कुमार अजय
सहायक निदेशक
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

नरेश टूहानियां
ACP (उपनिदेशक)
सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग

विनोद टेलर
R.Ac.S.

पवन भँवरिया
असिस्टेंट प्रोफसर

राकेश भास्कर
असिस्टेंट प्रोफसर

राजीव बगड़िया
असिस्टेंट प्रोफसर

अरविन्द भास्कर
प्रधानाचार्य

राजेश बिजारणियां
प्रधानाचार्य

कैलाश गोदारा
उपप्राचार्य

दिनेश बिजारणियां
असिस्टेंट प्रोफसर

रघुवीर नेहरा
उपप्राचार्य

महेन्द्र पूनियां
व्याख्याता

विद्या कुमारी
व्याख्याता

रमेश कुमार टेलर
व्याख्याता

सरोज जाटमाली
व्याख्याता

सुनिता कुमारी
व्याख्याता

बलदेव ढाका
व्याख्याता

विकास प्रजापत
वरिष्ठ अध्यापक

विनायक टेलर
अध्यापक

महेश कुमार भड़िया
अध्यापक

रामलाल गुलेरिया
शा.शि.

ओमप्रकाश बेनीवाल
अध्यापक

निखिल टेलर
व.स.

कपिल शर्मा
अध्यापक

विकास शर्मा
अध्यापक

हरीश शर्मा
वरिष्ठ अध्यापक

Special Thanks to

My wife **Vinita**
and
daughter **Akshita**

दो शब्द.....

यह कोई **मौलिक** या **कालजयी** रचना नहीं है। इस पुस्तक को तैयार करने का विचार लम्बे समय तक स्वयं के प्रतियोगी परीक्षार्थी के रूप में प्राप्त अनुभवों के कारण उत्पन्न हुआ। इस पुस्तक की आवश्यकता इसलिए महसूस हुई क्योंकि वर्तमान समय में बाजार में इस विषय से संबंधित पुस्तकें या तो बेहद विस्तृत है जिन्हें पढ़कर याद रख पाना अभ्यर्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण है, वही कई पुस्तकें प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को पूर्णत: समाहित नहीं करती तथा उनकी भाषा व लेखन शैली भी बोधगम्य नहीं है। अत: इस विषय पर एक संतुलित पुस्तक का अभाव सा रहा है।

प्रस्तुत पुस्तक **'राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था'** RPSC एवं कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं में राजस्थान भूगोल तथा अर्थव्यवस्था से संबंधित पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इस पुस्तक को मानक व प्रामाणिक पुस्तकों तथा सरकारी स्त्रोतों से तैयार किया गया है ताकि विश्वसनीयता के पैमाने पर खरी उतर सके। पुस्तक की विषयवस्तु को सरल व प्रवाहमय भाषा में प्रस्तुत किया गया है, साथ ही जटिल अवधारणाओं तथा तथ्यों को रेखाचित्रों, फ्लोचार्ट, नक्शे व सारणियों के माध्यम से रूचिकर व बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है।

नवीन गठित जिलों एवं संभागों के गठन के उपरान्त आधिकारिक स्त्रोतों से उपलब्ध जानकारियों का प्रयोग किया गया है तथा नवीन सूचनाओं व आकड़ों से पुस्तक को अद्यतन किया गया है। इस पुस्तक का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि अनावश्यक पाठ्य सामग्री से बचते हुए यथा संभव यह प्रयास किया गया है कि परीक्षापयोगी तथ्य व जानकारी न छूटे।

इस पुस्तक के लेखन में **माता-पिता, ईश्वर** एवं **गुरूजनों** का विशेष आशीर्वाद रहा है तथा उनकी प्रेरणा ने मुझे सतत् ऊर्जावान बनाए रखा।

मुझे पूरा विश्वास है यह पुस्तक आपकी सफलता में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

एच.पी. टेलर
एवं
नाथ पब्लिकेशन टीम

अनुक्रमणिका (Index)

1. राजस्थान : एक परिचय (वैदिक काल से वर्तमान तक) ..... [1 - 9]
   Rajasthan : An Introduction (From Vedic Period to Present)

2. राजस्थान : भूगर्भिक संरचना ..... [10 - 12]
   Rajasthan : Geological Structure

3. राजस्थान : भौगोलिक प्रदेश ..... [13 - 26]
   Rajasthan : Geographical Region

4. राजस्थान : जलवायु एवं मानसून तंत्र ..... [27 - 33]
   Rajasthan : Climate and Mansoon System

5. राजस्थान : अपवाह तंत्र (नदियां एवं झीलें) ..... [34 - 54]
   Rajasthan : Drainage System (Rivers & Lakes)

6. राजस्थान : मृदा एवं मृदा से सम्बंधित समस्याएँ ..... [55 - 61]
   Rajasthan : Soil & Soil's Related Problems

7. राजस्थान : प्राकृतिक वनस्पति ..... [62 - 68]
   Rajasthan : Natural Vegetation

8. राजस्थान : जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण ..... [69 - 78]
   Rajasthan : Biodiversity and Wild Life Conservation

9. राजस्थान : पशुधन एवं डेयरी विकास ..... [79 - 87]
   Rajasthan : Livestoke and Dairy Development

10. राजस्थान : कृषि एवं कृषि जलवायु प्रदेश ..... [88 - 101]
    Rajasthan : Agriculture and Agro Climate Zone

11. राजस्थान : जल संसाधन एवं जल संरक्षण ..... [102 - 105]
    Rajasthan : Water Resources and Water Conservation

12. राजस्थान : सिंचाई एवं पेयजल परियोजनाएं (प्रमुख बांध, तालाब व नहरें) ..... [106 - 120]
    Rajasthan : Irrigation and Drinking Water Projects (Major Dams, Ponds and Canals)

13. राजस्थान : खनिज संसाधन (धात्विक एवं अधात्विक खनिज) ..... [121 - 131]
    Rajasthan : Mineral Resources (Metallic and non Metallic Minerals)

14. राजस्थान : ऊर्जा संसाधन (नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय स्त्रोत) ..... [132 - 140]
Rajasthan : Energy Resources (Renewable and non-Renewable Sources)

15. राजस्थान : उद्योग एवं हस्तशिल्प ..... [141 - 155]
Rajasthan : Industries and Handicrafts

16. राजस्थान : व्यापार ..... [156 - 158]
Rajasthan : Trade

17. राजस्थान : परिवहन ..... [159 - 167]
Rajasthan : Transportation

18. राजस्थान : पर्यटन ..... [168 - 177]
Rajasthan : Tourism

19. राजस्थान : जनगणना-2011 ..... [178 - 183]
Rajasthan : Census-2011

20. राजस्थान : प्रमुख जनजातियां ..... [184 - 192]
Rajasthan : Major Tribes

21. राजस्थान : विशेष क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम ..... [193 - 196]
Rajasthan : Special Area Development Programmes

22. राजस्थान : मरूस्थलीकरण ..... [197 - 198]
Rajasthan : Desertification

23. राजस्थान : सुखा-अकाल, पर्यावरणीय समस्याएं, आपदा-प्रबंधन और महामारियां ..... [199 - 202]
Rajasthan : Famine, Environmental Problems, Disaster Management and Epidemics

24. शब्दावली ..... [203 - 205]
Glossary

25. परिशिष्ट ..... [206 - 207]
Appendix

❖❖❖❖❖

यह पुस्तक आप

सभी दृढ़ संकल्पित

व

परिश्रमी पाठकों को

सादर समर्पित है।

उठो, जागो और तब तक मत रूको,
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाये।

– स्वामी विवेकानन्द

1 राजस्थान : एक परिचय

(वैदिक काल से वर्तमान तक)

- भक्ति और शौर्य का संगम स्थल तथा साहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रिवेणी '**राजस्थान**' हमारे देश का **क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य** है।
- यहां के गौरवमय इतिहास के साथ ही उभरता है मरूस्थल में विस्तृत बालुका स्तूपों एवं रेत के सागर का दृश्य, अरावली की शृंखलाओं का फैलाव तथा चम्बल नदी के बहाव का दृश्य। इसलिए कहा जाता है कि राजस्थान एकमात्र प्रदेश है जहां इतिहास एवं भूगोल **एकाकार** हो गये हैं।
- राजस्थान राज्य की **रीढ़ की हड्डी** कही जाने वाली अरावली पर्वतमाला तथा उससे निकलने वाली जीवनदायिनी सरितायें - बनास, बेड़च, लूनी, साबरमती, चम्बल, बाणगंगा प्रागैतिहासिक काल से कई सभ्यताओं के उत्थान एवं पतन की साक्षी रही है।
- प्राचीन व मध्यकाल में राजस्थान के भिन्न-भिन्न क्षेत्र अपनी विशिष्ट प्रादेशिक पहचान बनाए हुए थे। यहां के विभिन्न क्षेत्रों को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता रहा है।

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों एवं स्थानों के प्राचीन नाम

क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान क्षेत्र
1.	माण्ड/वल्लदेश/दुंगल	जैसलमेर
2.	मारवाड़/मरूवार	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर का क्षेत्र
3.	जांगल देश	बीकानेर और जोधपुर का उत्तरी भाग
4.	शिवि/मेवाड़/मेदपाट/प्राग्वाट	उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा का क्षेत्र
5.	गिहलोट	उदयपुर बसने से पूर्व इस स्थान का नाम
6.	यौद्धेय क्षेत्र	गंगानगर और हनुमानगढ़ के आस-पास का क्षेत्र
7.	मालाणी	बाड़मेर, बालोतरा व जालौर का क्षेत्र
8.	मरुभूमि	जोधपुर
9.	मत्स्य प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली का सम्पूर्ण क्षेत्र
10.	हाड़ौती/हय-हय	कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ क्षेत्र
11.	ढुंढाड़	जयपुर, दौसा व टोंक (ढूंढ नदी का प्रवाह क्षेत्र)
12.	वागड़/वाग्वर प्रदेश/वार्गट/व्याघ्रवाट	डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़
13.	थली	बीकानेर, चूरू का अधिकांश एवं दक्षिणी गंगानगर का क्षेत्र
14.	बांगड़/बांगर	पाली, नागौर, सीकर, झुंझुनूं का पूर्वी भाग व चुरू
15.	शेखावाटी	सीकर, चुरू, झुंझुनूं व नीम का थाना
16.	तोरावाटी प्रदेश	सीकर व झुंझुनूं (कांतली नदी के प्रवाह का क्षेत्र)
17.	मेवात	अलवर, भरतपुर
18.	राठ/अहीरवाट	मुण्डावर (खैरथल-तिजारा), बहरोड़, बानसूर (कोटपुतली-बहरोड़)
19.	माल खेराड़	मालपुरा (टोंक)
20.	खेराड़ प्रदेश	जहाजपुर (भीलवाड़ा)
21.	मेरवाड़ा	अजमेर में टॉडगढ़ के आसपास का पहाड़ी क्षेत्र
22.	सपाड़	सवाईमाधोपुर व करौली का मध्यप्रदेश को स्पर्श करने वाला भाग
23.	सपादलक्ष	अजमेर, डीडवाना-कुचामन व सांभर का क्षेत्र
24.	बरड़	बूंदी जिले का पश्चिमी पथरीला क्षेत्र
25.	काँठल	देवलिया और प्रतापगढ़ (माही नदी के किनारे)
26.	मालवा/मालव देश	प्रतापगढ़, झालावाड़ व बाँसवाड़ा
27.	मेवल	डूंगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य का भाग
28.	उत्तमाद्री	बिजौलिया व उसके आसपास का क्षेत्र
29.	चन्द्रावती/आर्बूद	सिरोही व आबू के आसपास का क्षेत्र
30.	गौड़वाड़	दक्षिण पूर्वी बाड़मेर, जालौर व पश्चिमी सिरोही, पाली
31.	गुर्जरात्रा/गुर्जर प्रदेश	जोधपुर का दक्षिणी भाग तथा पाली का समीपवर्ती क्षेत्र
32.	शूरसेन/गुरूसेन/बृजभूमि	भरतपुर, धौलपुर, करौली तथा पूर्वी अलवर का क्षेत्र
33.	डांग क्षेत्र	धौलपुर, करौली व सवाईमाधोपुर का बीहड़ क्षेत्र

34.	कुरू देश/कुरू क्षेत्र	अलवर का उत्तरी भाग
35.	मेरू	अरावली पर्वतीय प्रदेश
36.	खींचीवाड़ा	झालावाड़
37.	चांदन गाँव	महावीर जी
38.	अहिच्छत्रपुर	नागौर
39.	चुंघेर	अनूपगढ़
40.	ढ़ेबर	जयसमंद झील (सलूम्बर)
41.	उपकेश पट्टन	ओसियाँ
42.	सिहाड़	नाथद्वारा
43.	खिज्राबाद	चित्तौड़गढ़
44.	रातीघाटी	बीकानेर
45.	कोठी	धौलपुर
46.	चित्रकुट	चित्तौड़गढ़
47.	चाटसू/चम्पावती	चाकसू
48.	अजयमेरु	अजमेर
49.	भटनेर	हनुमानगढ़
50.	रामनगर	श्रीगंगानगर
51.	मांच	जमवारामगढ़
52.	रूणेचा	रामदेवरा (जैसलमेर)
53.	माण्डव्यपुर	मण्डोर (जोधपुर)
54.	सरण वाही नगर	सिरोही
55.	आश्रम पट्टन	केशवरायपाटन
56.	जाबालीपुर व स्वर्ण गिरी	जालौर
57.	सत्यपुर	सांचौर (जालौर)
58.	भिल्लमाल/श्रीमाल	भीनमाल (जालौर)
59.	शिवपुरी	सिरोही
60.	दीर्घवती	डीग (भरतपुर)
61.	तीर्थराज	पुष्कर (अजमेर)
62.	विराटनगर	बैराठ
63.	गोपालपाल	करौली
64.	भद्रावती	भाण्डारेज (दौसा)
65.	श्रीपंथ/शोणितपुर	बयाना (भरतपुर)
66.	आलौर/साल्वपुर	अलवर
67.	वृंदावती	बूंदी
68.	जलालाबाद	जालौर
69.	योगिनीपट्टन	जावर (सलूम्बर)
70.	ब्रज नगर	झालरापाटन (झालावाड़)
71.	मध्यमिका	नगरी (चितौड़गढ़)

राजस्थान के नामकरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

◈ राजस्थान प्रदेश को अलग-अलग कालखण्डों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता रहा है -

- इसे ऋग्वेद में **'ब्रह्मावर्त'** के नाम से तथा रामायण काल मे **'मरूकान्तर'** कहा गया है।
- 'राजस्थान' शब्द का लिखित उल्लेख सबसे पहले **बसंतगढ़ शिलालेख (सिरोही)** में मिलता है जिसमें **'राजस्थानाया - दित्य'** शब्द का प्रयोग किया गया है।
- **'मुहणौत नैणसी री ख्यात'** नामक पुस्तक, पहली पुस्तक है जिसमें **'राजस्थान'** शब्द का उल्लेख मिलता है।
- मरूस्थलीय इलाका होने के कारण यह प्रदेश **मरू/मरूदेश/मरूप्रदेश** के नाम से भी जाना जाता रहा है।
- सर्वप्रथम इस प्रदेश के लिए **'राजपूताना'** शब्द का प्रयोग **जॉर्ज थॉमस** ने किया था।
- **'राजस्थान' शब्द का प्रयोग** इस भू-भाग के लिए सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक **'द एनाल्स एण्ड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान'** (दूसरा नाम **'सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंण्डिया'**) में किया। जिसका प्रकाशन 1829 ई. में हुआ था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने पुरानी बहियों के आधार पर इस प्रदेश को **रजवाड़ा/रायथान** नाम भी दिया था।
- राजस्थान के एकीकरण के दौरान 25 मार्च, 1948 को दूसरे चरण में पहली बार **'राजस्थान'** शब्द जुड़ा।
- एकीकरण के दौरान 30 मार्च, 1949 को वृहत्त राजस्थान संघ में अधिकांशः रियासतों के विलय हो जाने के कारण 30 **मार्च** को **राजस्थान दिवस** के रूप में मनाते है।
- भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र के लिए राजस्थान नाम को संवैधानिक मान्यता 26 जनवरी, 1950 को मिली।
- राजस्थान का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर, 1956 में अस्तित्व में आया।

◈ 11वीं से 18वीं शताब्दी के बीच राजस्थान में कई राजवंशों का उत्थान और पतन हुआ। राजपूत राजाओं की रियासतों व ठिकानों की अधिकता के कारण ब्रिटिशकाल में राजस्थान **राजपूताना** के नाम से जाना जाता था।

◈ आजादी के बाद वर्तमान राजस्थान, राजपूताना की **19 रियासतों, 3 चीफ शीप** और केन्द्र शासित - **अजमेर-मेरवाड़ा** के मिलने से अस्तित्व में आया। राजस्थान एकीकरण के चरण क्रमानुसार प्रस्तुत है-

- **राजस्थान का क्षेत्रफल कांगो रिपब्लिक देश (3.42 लाख वर्ग कि.मी.) के क्षेत्रफल के बराबर है।**
- कांगो रिपब्लिक के अलावा निम्न देशों का क्षेत्रफल भी राजस्थान के क्षेत्रफल के लगभग बराबर है –

  पोलैंड (3.12 लाख वर्ग कि.मी.), वियतनाम (3.31 लाख वर्ग कि.मी.), फिनलैण्ड (3.37 लाख वर्ग कि.मी.), जर्मनी (3.57 लाख वर्ग कि.मी.), जापान (3.77 लाख वर्ग कि.मी.), नार्वे (3.85 वर्ग कि.मी.)
- राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से जापान से थोड़ा छोटा, इंग्लैण्ड से दुगुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुणा, श्रीलंका से पांच गुणा, इजरायल से 17 गुणा बड़ा है।
- राजस्थान का आकार कर्नाटक व गुजरात से दो गुना, ओडिशा व तमिलनाडु से ढाई गुना, बिहार से 3 गुना, केरल से 5 गुना पंजाब व हरियाण से 7 गुना बड़ा है।

राजस्थान : आकृति एवं आकार

- राजस्थान की आकृति **पतंगाकार/विषमकोणीय चतुर्भुज** जैसी है। (सबसे पहले **T.H. हेण्डले** ने बतायी।)
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई 826 कि.मी. है तथा पूर्व से पश्चिम की ओर लम्बाई 869 कि.मी. है।
- इस प्रकार राजस्थान की उत्तर-दक्षिण एवं पूर्व पश्चिम – लम्बाई में अन्तर 43 कि.मी. का है।
- पूर्वी राजस्थान से पश्चिमी राजस्थान की ओर जिलों का क्षेत्रफल बढ़ता जाता है और जनसंख्या घटती जाती है।
- राज्य का सबसे बड़ा शहर जयपुर तथा सबसे छोटा शहर बोरखेड़ा (बांसवाड़ा) है।
- **राजस्थान के विभिन्न जिलों की आकृति** –

जिला	आकार
दौसा	धनुषाकार
टोंक	अंग्रेजी के H अक्षर के समान
चित्तौड़गढ़	घोड़े की नाल के समान/इल्ली के समान
राजसमंद	तिलक के समान
जैसलमेर	सप्तबहुभुजाकार/अनियमित बहुभुज के समान

राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय सीमाऐं –

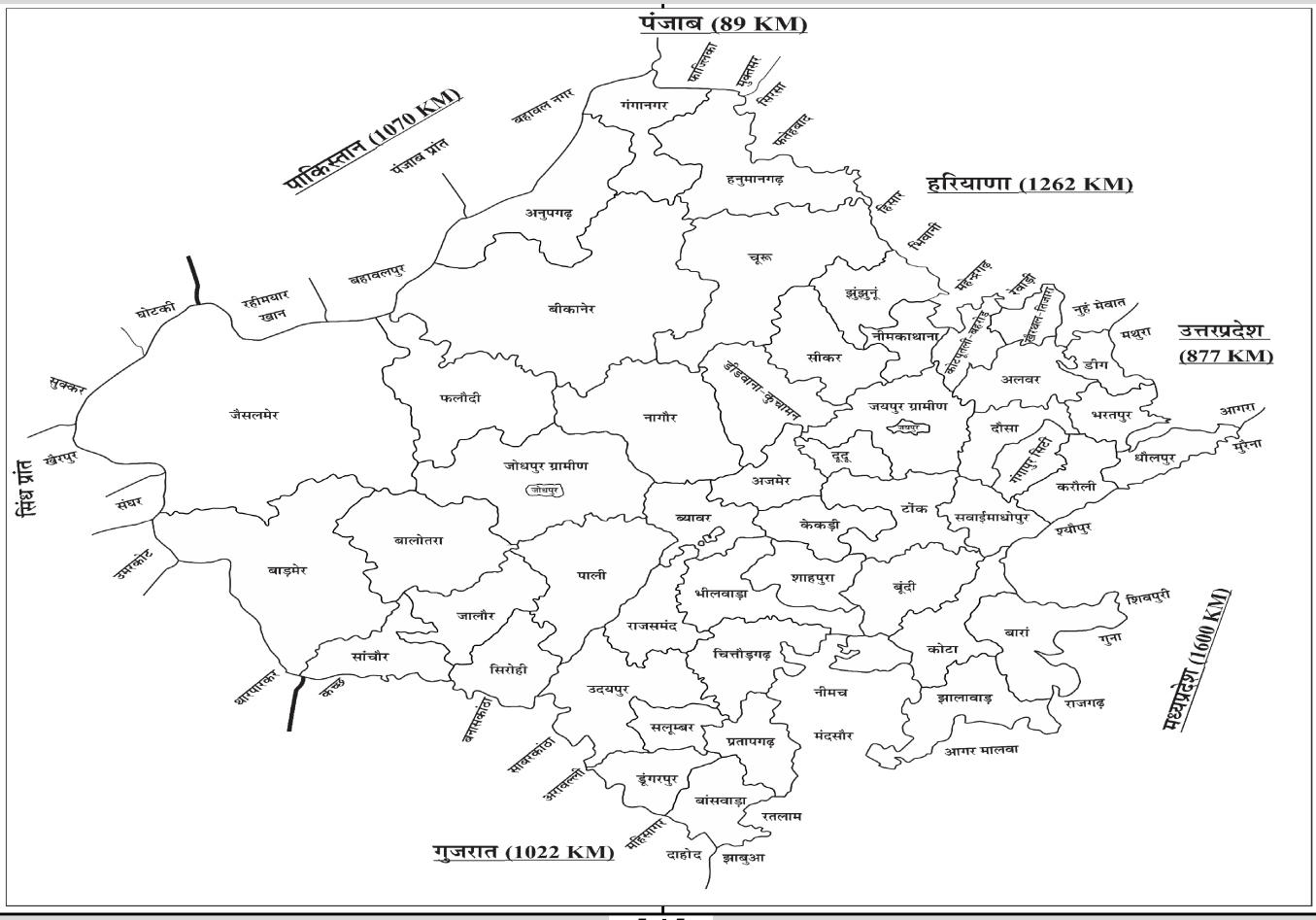

2 राजस्थान : भूगर्भिक संरचना

- राजस्थान की भूगर्भिक संरचना भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में विशिष्ट एवं विविधताओं से युक्त है।
- इन विविधताओं में जहाँ एक तरफ अरावली पर्वतमाला है जो कि **प्री-केम्ब्रियन युग** अथवा **आर्कियन महाकल्प** की है, तो वहीं दूसरी ओर वायु द्वारा जमा की गई मृदा भी है।
- अरावली पर्वतमाला का निर्माण प्राचीन ग्रेनाइट, नीस शैल के साथ-साथ **देहली** और **विन्ध्यन समूह** की शैलों से हुआ है।
- राज्य में हाड़ौती का पठार, मालवा का पठार, पश्चिमी मरूस्थल तथा अन्य विविध शैलों के साथ अन्य विविधताएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।
- अफ्रीका, आस्ट्रेलिया के बाद राजस्थान के जालौर, पाली तथा सिरोही में पृथ्वी के निर्माण के समय की चट्टानों का पता चला है जो कि आर्कियन या प्रोटोजोइक कालखण्ड की है। यही कारण है कि अरावली में खनिज भण्डारों से समृद्ध है।
- राजस्थान के मरूस्थलीय क्षेत्र में चट्टानों की उत्पत्ति **जुरासिक** से इयोसिन युग की है। अतीत में यहाँ एक विशाल समुद्र था जो कि दक्षिणी-पश्चिमी दिशा में खिसकता रहा व प्लीस्टोसीन युग में जलवायु परिवर्तन के कारण यहाँ मरूस्थल का विस्तार हो गया।
- राजस्थान की भू-गर्भिक संरचना में भौमकीय कालानुक्रम में परिवर्तन आए हैं, जो यहाँ की शैल संरचना से स्पष्ट होते हैं।
- यहाँ की भू-गर्भिक संरचना का वर्णन क्रमश: **आद्य महाकल्प, पुराजीवी महाकल्प, मध्यजीवी महाकल्प** एवं **नवजीवी महाकल्प** (भू-गर्भिक युगों) के रूप में किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि नवीनतम कल्प दस लाख वर्ष पूर्व का है, जबकि आद्य महाकल्प 4,250 से 45,000 लाख वर्ष पहले का है।
- चट्टानों के वर्गीकरण के क्रम में आधारभूत वर्गीकरण **हेरोन** द्वारा प्रस्तुत किया गया था।
- **नीस (Gneiss)** चट्टानें राजस्थान में भूगर्भिक चट्टानों में सबसे प्राचीनतम चट्टानें है तथा यह भू-गर्भ के बेसमेंट यानि कि आधार का निर्माण करती हैं।
- नीस चट्टानों के ऊपर प्री केम्ब्रियन युग की अरावली, देहली तथा मालानी रायलो समूह की चट्टाने मिलती हैं।
- प्रत्येक 'कल्प में निर्मित शैल खण्ड/संरचना का संक्षेप विवरण राज्य की भू-गर्भिक संरचना स्पष्ट करने हेतु प्रस्तुत है -

आद्य महाकल्प (Archean Eon)

- **आद्य कल्प की चट्टानें** पृथ्वी तल की सबसे प्राचीन चट्टानें हैं, जिनकी आयु करीब 60 करोड़ वर्ष पूर्व की मानी जाती हैं। ये चट्टानें **नीस, ग्रेनाइट** तथा **शिस्ट शैलों** के अंशों से बनी हैं।
- इस महाकल्प को राजस्थान के संदर्भ में क्रमश: प्री अरावली तथा प्री-कैम्ब्रियन में बांटा गया है -

1. आर्कियन/प्री-अरावली -

- आर्कियन एक **ग्रीक भाषा** का शब्द है जिसका अर्थ होता है **'शुरूआत'** या **'उत्पत्ति'**
- प्री-अरावली शैल समूह देश का ही नहीं वरन् विश्व के **प्राचीनतम** पर्वत समूहों में से एक है।
- हैरोन ने अपने भूवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर आर्कियन से प्री-केम्ब्रियन को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है।

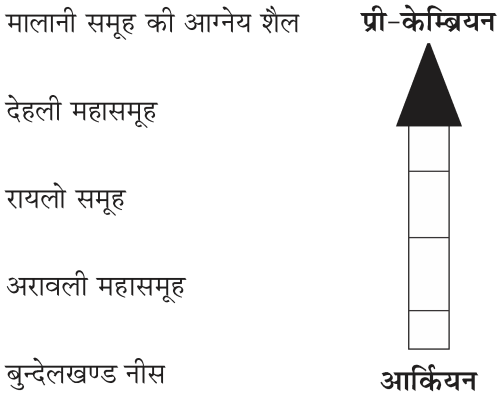

- **बुन्देलखण्ड नीस** भारत में सबसे **प्राचीनतम नीस** है जिसका विस्तार पूर्वी राजस्थान से बुन्देलखण्ड तक 610 किमी. लम्बाई व 210 किमी. चौड़ाई में है।
- इसमें मुख्यत: **ग्रेनाइट चट्टान** मिलती है।
- राजस्थान में इसका विस्तार **बेड़च घाटी** में चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा के बीच है।

2. प्री-केम्ब्रियन (Pre-Cambrian) -

- इस कालखण्ड को दो भागों में बाँटा गया है -
  1. अरावली महासमूह (सुपर ग्रुप)
  2. देहली महासमूह (सुपर ग्रुप)

(i) लाठी बेसिन –

- स्थिति – जोधपुर, पोखरण, बाड़मेर तथा उत्तर व उत्तर- अरावली पर्वत के सहारे, नाचना का दक्षिण-पश्चिम में लाठी गाँव।

(ii) जैसलमेर बेसिन –

- जैसलमेर लाइमस्टोन, भदेसर सैण्डस्टोन, पर्णद्वार सेण्डस्टोन, साकु सेण्डस्टोन, खुईयाला लाइमस्टोन

(iii) **बाड़मेर बेसिन –**

- मण्डाई एवं फतेहगढ़ (जैसलमेर) से बाड़मेर तक विस्तृत

(iv) **पलाना-गंगानगर, शेल्फ –**

- इसका निर्माण मेसोजोईक महाकल्प के अंत में हुआ।

3. सेनोजोईक (नवीन महाजीवी महाकल्प)

(i) टर्शरी युग (तृतीयक महाकल्प)

(ii) क्वार्टनरी युग (चतुर्थक महाकल्प)

(i) टर्शरी युग – राजस्थान में यह शैल समूह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, फलौदी, जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर में विस्तृत है। राजस्थान में मिलने वाले पेट्रोलियम प्राकृतिक गैस व लिग्नाईट के भण्डार इसी काल के हैं।

(ii) क्वार्टनरी युग – इस महाकल्प के अवसाद पश्चिमी व उत्तर-पश्चिमी राजस्थान में नदीय अवसाद व रेत के टीलों के रूप में मिलते हैं। इसका निर्माण प्रवाहित जल तथा वायु के अवसादों के उत्तरोतर निक्षेपण से हुआ है।

डेकन ट्रेप –

- ◈ डेकन ट्रेप भारत के पश्चिमी हिस्से में एक प्रदेश है जहाँ की भूवैज्ञानिक संरचना क्रिटिशियस युग के ज्वालामुखी लावा के जमाव के कारण बनी बेसाल्ट चट्टानों की है।
- ◈ यह राजस्थान में **हाड़ौती व मेवाड़ के दक्षिणी-पूर्वी भाग** में है यह भीलवाड़ा, अरावली तथा विन्ध्यन महासंघ की चट्टानों से ढका है।
- ◈ इस ट्रेप को पठारी बेसाल्ट भी कहते हैं, क्योंकि इसका मुख्य भाग बेसाल्ट का है।

राजस्थान के संदर्भ में भू-गर्भिक समय सारणी

महाकल्प	कल्प (युग)	समुदाय	शैल समूह
मध्यजीवी (मैसोजोइक) महाकल्प	ट्रियासिक जुरासिक क्रिटिशियस	लाठी सीरिज (जैसलमेर व बाड़मेर बेसिन)	ऑकल वुड फॉसिल्स पार्क
पुराजीवी (पैलियो जोईक) महाकल्प	विंध्यन महासमूह परमियन कार्बोनिफेरस युग	निम्बाहेड़ा (चित्तौड़) से सासाराम (बिहार) तक (चित्तौड़गढ़-कोटा-स.माधोपुर-करौली-धौलपुर-आगे उत्तरप्रदेश बाप बोल्डर बेड भादूरा बालूकाशम	नागौर बेसिन एवं बिरमानिया बेसिन जैसलमेर का दक्षिणी भाग फलौदी (बालुका पत्थर, चूना पत्थर)
आद्य (आर्कियन) महाकल्प	प्रीकेम्ब्रियन युग इस काल में **अरावली** की उत्पत्ति होती हैं।	अरावली महामूह (दक्षिणी-पश्चिमी व दक्षिणी राजस्थान में) देहली महासमूह (उत्तर-पूर्वी राजस्थान में) मालानी की चट्टाने (बाड़मेर)	झाड़ोल व उदयपुर समूह रायलू, अलवर, अजबगढ़ शैल समूह

राजस्थान की जटिल भू-गर्भिक संरचना का संक्षिप्त विवरण

1. भीलवाड़ा महासमूह –

- चट्टानें – बुंदेलखण्ड नीस व पट्टित नीस
- विस्तार – उदयपुर, चित्तौड़गढ़ के साथ-साथ दक्षिणी राजस्थान
- **विविध रंगों के ग्रेनाइट** की प्रधानता।

2. अरावली महासमूह –

- चट्टानें – मृत्तिकामय चट्टानें जिसमें क्वार्टजाइट, ग्रिट्स, फाइलाइट्स, लाइम स्टोन व मिश्रित नीस आते हैं।
- विस्तार – उत्तर में कांकरोली से दक्षिण में चम्पानेर तक

3. देहली महासमूह –

- चट्टानें – केल्साइट, क्वार्टजाइट्स, ग्रिट और शिस्ट
- विस्तार – उत्तर-पूर्व में देहली से दक्षिण पश्चिम में ईडर तक

4. मालाणी श्रेणी –

- इन चट्टानों का निर्माण रायोलाइटिक लावा से हुआ है।
- यह आग्नेय समूह की चट्टानें हैं।

5. विन्ध्य श्रेणी –

- चट्टाने – बलुआ पत्थर, चूना पत्थर व शैल की प्रधानता
- विस्तार – पूर्वी राजस्थान, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान तथा जोधपुर व जालौर
- जालौर ग्रेनाइट, सिवाना और एरिनपुरा ग्रेनाइट शैलें इसी से सम्बन्धित है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश –

- यह थार के मरूस्थल का ही एक भाग है।
- थार मरूस्थल का 86% भाग भारत में तथा 14% भाग पाकिस्तान में है।
- भारत में स्थित थार मरूस्थल का 62% भाग राजस्थान में है। इसके अलावा गुजरात, हरियाणा, पंजाब में इसका शेष 38% भाग विस्तृत है।
- पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश राजस्थान में लगभग **209142** वर्ग कि.मी. में फैला है।
- राजस्थान के **19 जिलों** (जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, सांचौर, पश्चिम ब्यावर,जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, डीडवाना-कुचामन, पाली, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, अनुपगढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं, सीकर) तथा **5 संभागों** (बीकानेर, जोधपुर, पाली, सीकर व अजमेर) में मरूस्थलीय विस्तार देखने को मिलता है।

इस प्रदेश का विस्तार –
25° उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक
69°30' पूर्वी देशान्तर से 75°45' पूर्वी देशांन्तर तक

- यह विश्व का एकमात्र मरूस्थल है जो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं से निर्मित है। इस मरूस्थल को बदलती हुई जलवायु परिस्थितियों का परिणाम भी कहा जाता है।

अरावली विकास कार्यक्रम - 1974-75 से प्रारम्भ, इसमें राजस्थान के 16 जिलों के 120 विकास खण्डों में जापान (OECF ओवरसीज इकोनोमिक कॉपोरेशन फंड) की सहायता से चलाया जा रहा है।

अरावली वृक्षारोपण योजना - 1 अप्रैल, 1992 से प्रारम्भ की गई, 31 मार्च 2000 तक जापान की OECF के सहयोग से राजस्थान के 10 जिलों में संचालित थी।

मगरा क्षेत्र विकास कार्यक्रम - 2005-06 में शुरू किया गया, जो 5 जिलों (अजमेर, भीलवाड़, पाली, चित्तौड़गढ़ एवं राजसमंद)के 16 विकास खण्डों में क्रियान्वित है।

पूर्वी मैदानी प्रदेश

- यह मैदानी प्रदेश अरावली के पूर्व में विस्तृत है।
- राजस्थान का पूर्वी मैदानी भाग चम्बल, बनास, बाणगंगा, माही एवं उनकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित है, जो विस्तृत रूप में गंगा के मैदान का ही हिस्सा है।
- इस मैदान की दक्षिणी पूर्वी सीमा विन्ध्य पठार द्वारा बनाई जाती है।
- जिले - अलवर, कोटपूतली-बहरोड़, खैरथल-तिजारा, डीग, भरतपुर, जयपुर, जयपुर ग्रामण, दूदू, दौसा, टोंक, धौलपुर, करौली, गंगापुरसिटी, बूंदी, सवाईमाधोपुर, शाहपुरा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, सलुम्बर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा।
- **मिट्टी** - जलोढ़ व दोमट (कांप/कछारी), जो सर्वाधिक उपजाऊ है।
- जलवायु - आर्द्र जलवायु
- प्रमुख फसल - गेहूँ, जौ, चना व सरसों।
- औसत वर्षा - **50 सेमी से 80 सेमी।**
- सामान्य ढाल - पूर्व की ओर
- औसत ऊँचाई - 200 से 500 मीटर के बीच
- सिंचाई - कुओं एवं नलकूपों द्वारा अधिक होती है
- प्रमुख नहरें - भरतपुर व गुडगाँव नहर।
- यह राजस्थान का सर्वाधिक जनसंख्या घनत्त्व एवं सर्वाधिक कृषि वाला भाग है।
- यह राजस्थान का सर्वाधिक उपजाऊ भौतिक भाग है, इसलिए इसे **'खाद्यान्न का कटोरा'** भी कहा जाता है।
- इस प्रदेश को राज्य का हृदय स्थल भी कहा जाता है।
- पूर्वी मैदानी प्रदेश को मुख्यत: चार भागों में विभाजित किया जाता है-

  (i) चम्बल बेसिन

  (ii) छप्पन बेसिन/माही बेसिन

  (iii) बनास बेसिन

  (iv) बाणगंगा बेसिन

(i) चम्बल बेसिन

- यह चम्बल नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित मैदानी भाग है जो झालावाड़, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर जिलों में विस्तृत है।
- चम्बल बेसिन उत्खात स्थलाकृति हेतु पूरे भारत में विख्यात है।
- इस बेसिन का लगभग 4500 वर्ग किमी. क्षेत्रफल है जो बीहड़ों से प्रभावित है।
- **डांग/उत्खात स्थलाकृति (Bad land Topography)** - चम्बल नदी के आसपास स्थित ऊँची-नीची कृषि के अयोग्य भूमि को उत्खात स्थलाकृति कहते हैं, इसे स्थानीय भाषा में डांग कहते हैं। सर्वाधिक डांग भूमि करौली में है। इसलिए करौली को **'डांग की रानी'** कहा जाता है।
- चम्बल बेसिन में ही करौली के पठार की अनियमित पहाड़ियां है। जिन्हें **डांग लैण्ड** कहा जाता है।
- **बीहड़** - चम्बल के प्रवाह के कारण मिट्टी में अत्यधिक कटाव (अवनालिका अपरदन) से गहरी घाटियाँ बन गई हैं, जो **'बीहड़'** कहलाती है। ये बीहड़ चम्बल नदी के सहारे कोटा से धौलपुर तक विस्तृत है।

  बीहड़ - **डाकुओं की शरणस्थली** कहलाते हैं। राजस्थान के कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, धौलपुर जिले बीहड़ प्रभावित है। **सर्वाधिक बीहड़ भूमि - धौलपुर में है।**
- चम्बल बेसिन में काली जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है।

डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम - 1994-95 में राजस्थान के 8 जिलों (सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, व भरतपुर) में 21 पंचायत समितियों के 357 ग्राम पंचायतों में प्रारम्भ की गई।

उद्देश्य - इस क्षेत्र का आर्थिक-सामाजिक विकास करना, डाकुओं से मुक्ति दिलाना व पर्यावरण का विकास करना।

(ii) छप्पन बेसिन/माही बेसिन

- यह माही नदी का प्रवाह क्षेत्र है जो मध्यप्रदेश से निकलकर इस क्षेत्र से गुजरती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है। अत: यह क्षेत्र माही नदी ओर उसकी सहायक नदियों द्वारा सिंचित क्षेत्र है।
- माही बेसिन में बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, दक्षिणी पूर्वी उदयपुर व सलुम्बर आदि जिले आते है।
- यह क्षेत्र असमतल है तथा सर्वत्र छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं। पहाड़ियों के मध्य संकीर्ण घाटियाँ एवं कहीं विस्तृत समतल क्षेत्र है। यह क्षेत्र पहाड़ियों से युक्त तथा कटा-फटा तथा गहराई तक विच्छेदित होने के कारण इसे स्थानीय भाषा में **'वागड़'** नाम से पुकारा जाता है।
- यहाँ लाल चिकनी मिट्टी का प्रसार अधिक है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशों का तुलनात्मक अध्ययन

भौतिक प्रदेश	अंग/अवशेष	निर्माण का काल एवं बनने का क्रम	क्षेत्रफल	ऊँचाई में क्रम एवं औसत ऊँचाई	मिट्टी	जलवायु एव वर्षा	फसलें	जनसंख्या	खनिज चट्टाने	विशेषताएँ
पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश	टैथिस सागर	**प्लीस्टोसीन**/ नियोजोईक महाकल्प (चतुर्थ) (प्लीस्टोसीन के अन्त में)	61.11%	चतुर्थ (150–380 मीटर)	एंटीसोल व एरिडोसॉल (रेतीली बलुई)	शुष्क व अर्द्धशुष्क (20–50 सेमी)	बाजरा, मोठ, ग्वार	40%	अवसादी कोयला खनिज तेल	अरावली का वृष्टी छाया प्रदेश विश्व का सबसे युवा मरूस्थल सर्वाधिक धनी मरूस्थल सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरूस्थल 58.5% बालूका स्तूप युक्त एवं 41.5% बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश सर्वाधिक दैनिक तापान्तर वाला प्रदेश
अरावली पर्वतीय प्रदेश	गौडवान लैण्ड	**प्री-कैब्रीयन**/एजोईक महाकल्प (प्रथम)	9%	प्रथम (930 मीटर)	इनसेप्टी सॉल्स (पर्वतीय)	उप आर्द्र (50–90 सेमी)	ज्वार, मक्का	10%	क्वार्टजाइट व ग्रेनाइट	महान जल विभाजक रेखा भारत का अप्लेशियन प्राचीनतम पर्वतमाल अबूल फजल ने ऊँट की गर्दन कहा। राजस्थान की जीवन रेखा वर्तमान में अवशिष्ट है। योजना प्रदेश है। सर्वाधिक अभयारण्यों तथा नदियों के उद्गम स्थल वाला भौतिक प्रदेश
पूर्वी मैदानी प्रदेश	टैथिस सागर	**प्लीस्टोसीन**/ नियोजोईक महाकल्प (तृतीय) (प्लस्टोसीन के शुआत में)	23%	तृतीय (200–500 मीटर)	अल्फी सॉल्स (जलोढ/ दोमट कछारी)	आर्द्र (50–80 सेमी)	गेंहू, जौ, चना	39%	बलुआ पत्थर लाल पत्थर	सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश डांग/उत्खात स्थलाकृति वाला क्षेत्र बीहड़ क्षेत्र, खादर क्षेत्र खाद्यान्न का कटोरा
दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश	गौडवान लैण्ड	**क्रिटेशियस**/मिसाजोइक(द्वितीय)	6.89%	द्वितीय (450–600 मीटर)	वर्टीसोल्स (काली/रेगुर कपासी)	अति आर्द्र (80–120 सेमी)	सोयाबीन, कपास, मसाले अफीम	11%	बैसाल्ट चूना पत्थर कोटा स्टोन	प्रचलित नाम – हाड़ौती का पठार संक्रांति प्रदेश महान सीमा भ्रंश

⊡⊡⊡⊡⊡

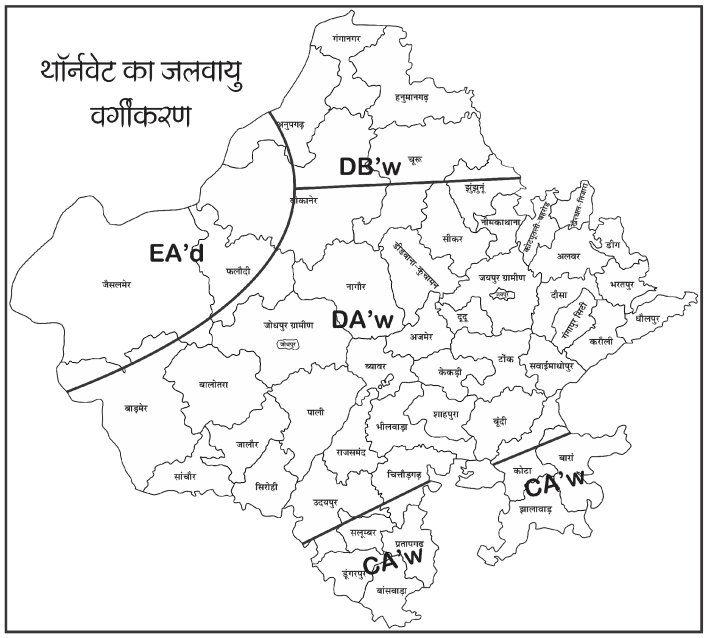

◈ **ट्रीवार्था का जलवायु वर्गीकरण -**

(i) Aw (उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश)

(ii) Bwh (मरूस्थलीय या शुष्क जलवायु प्रदेश)

(iii) Bsh (उपोष्ण कटिबंधीय स्टेपी जलवायु)

(iv) Caw (उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु)

प्रतिनिधि जिला - BWh - जैसलमेर

Bsh - नागौर

Caw - सवाईमाधोपुर

Aw - डूंगरपुर

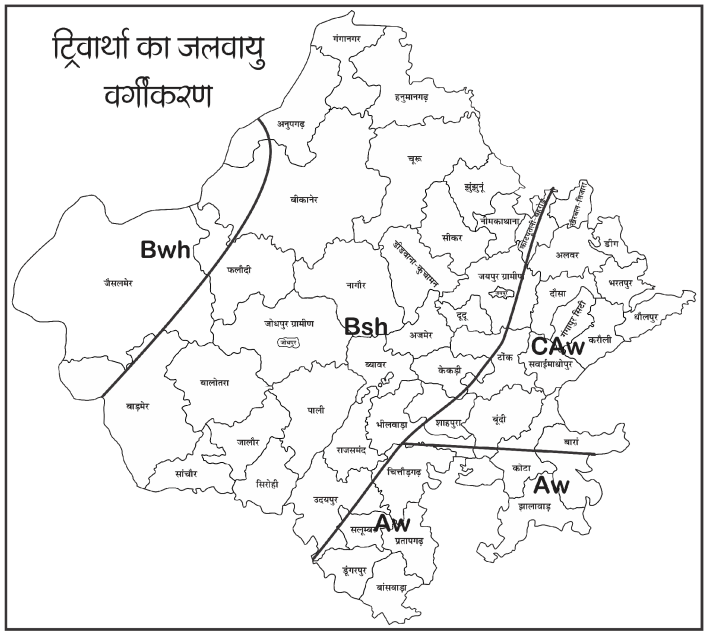

राजस्थान की जलवायु संबंधी महत्त्वपूर्ण तथ्य - एक नजर में

तापमान -

- राजस्थान का औसत वार्षिक तापमान 38°C है।
- सबसे ठण्डा महीना - जनवरी
- सबसे ठण्डा जिला - चूरू
- सबसे ठण्डा स्थान - माऊण्ट आबू
- सबसे गर्म महीना - जून
- सबसे गर्म जिला - चूरू
- सबसे गर्म स्थान - फलौदी

◈ राजस्थान में सर्वाधिक वार्षिक तापान्तर - चूरू जिले में

◈ राजस्थान में सर्वाधिक दैनिक तापान्तर - जैसलमेर जिले में

◈ राजस्थान में न्यूनतम वार्षिक तापान्तर - डूंगरपुर जिले में

◈ राजस्थान में न्यूनतम दैनिक तापान्तर - डूंगरपुर

राजस्थान में अब तक रिकॉर्ड किया गया सर्वाधिक तापमान-

गंगानगर - 50.6 °C (14.06.1934 में)

अलवर - 50.6 °C (10.05.1956 में)

धौलपुर - 50.6 °C (03.06.1995 में)

बाड़मेर - 49.9 °C (09.05.1995 में)

चूरू - 49.8 °C (09.06.1993 में)

◈ ग्रीष्म ऋतु में राजस्थान में न्यूनतम तापमान वाला स्थान माउण्ट आबू तथा जिला सिरोही है।

◈ राज्य का अधिकांश भाग शीतोष्ण कटिबंध (उपोष्ण) के अन्तर्गत आता है।

◈ कर्क रेखा राज्य के डूंरगपुर एवं बांसवाड़ा जिले से गुजरती है **अतः राज्य का 1% भाग उष्ण कटिबंध में आता है तथा शेष 99% भाग उपोष्ण कटिबंध में आता है। इसी कारण राजस्थान की जलवायु उपोष्ण जलवायु है।**

◈ राज्य का **सबसे गर्म दिन 21 जून** को होता है।

◈ राज्य का **सबसे ठण्डा दिन 22 दिसम्बर** को होता है।

◈ राजस्थान में शीतकाल में जमने वाली एकमात्र झील **नक्की झील** है। (सिरोही में)

◈ राजस्थान का **औसत वार्षिक तापमान 38°C** है।

◈ 21 जून को सूर्य की सीधी किरणे **डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा** जिलों पर पड़ती है।

22 दिसम्बर - इस दिन सूर्य की किरणे मकर रेखा पर सीधी पड़ती है राजस्थान में इस दिन सबसे लम्बी रात एवं छोटी अवधि का दिन तथा सबसे ठण्डा दिन होता है।

21 मार्च - इस दिन सूर्य की किरणें विषुवत रेखा पर सीधी पड़ती है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर दिन-रात बराबर होते है। इसे बसंत विषुव कहते है।

21 जून - इस दिन सूर्य की किरणे कर्क रेख पर सीधी पड़ती है। राजस्थान में इस दिन सबसे लम्बा दिन, छोटी अवधि की रात तथा सबसे गर्म दिन होता है।

23 सितम्बर - इस दिन सूर्य की किरणें विषुवत रेखा पर सीधी पड़ती है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर दिन रात बराबर होते है। इसे शरद विषुव कहते है।

◈ **धौलपुर में लाल बलुआ पत्थर के चट्टानी धरातल के कारण तापमान अधिक रहता है।**

◈ चूरू में अधिक तापमान रहने के कारण - कम वर्षा, चूना युक्त धरातल, न्यूनतम वन क्षेत्र व कम सिंचित क्षेत्र

◈ हालांकि राजस्थान विषम जलवायु वाला प्रदेश है परन्तु राजस्थान का उदयपुर जिला एकमात्र जिला है जिसकी जलवायु **सम जलवायु** है।

आर्द्रता -

- सर्वाधिक आर्द्रता वाला महीना - अगस्त
- सर्वाधिक आर्द्रता वाला जिला - झालावाड़ (कोटा संभाग सर्वाधिक आर्द्रता वाला संभाग)
- सर्वाधिक आर्द्रता वाला स्थान - माउण्ट आबू
- न्यूनतम आर्द्रता वाला महीना - **अप्रैल**
- न्यूनतम आर्द्रता वाला जिला - जैसलमेर (जोधपुर संभाग न्यूनतम आर्द्रता)
- न्यूनतम आर्द्रता (सबसे शुष्क) वाला स्थान - फलौदी

वाष्पीकरण दर -

- सर्वाधिक वाष्पीकरण वाला जिला - जैसलमेर
- सर्वाधिक वाष्पीकरण वाला माह - जून
- न्यूनतम वाष्पीकरण वाला जिला - डूंगरपुर
- न्यूनतम वाष्पीकरण वाला माह - दिसम्बर

वर्षा -

- सर्वाधिक वर्षा वाला संभाग - कोटा
- सर्वाधिक वर्षा वाला जिला - (i) झालावाड़ (ii) बांसवाड़ा (iii) बारां
- सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान - माउण्ट आबू (सिरोही)
- न्यूनतम वर्षा वाला जिला - (i) जैसलमेर (ii) गंगानगर (iii) बीकानेर
- न्यूनतम वर्षा वाला संभाग - जोधपुर
- न्यूनतम वर्षा वाला स्थान - सम (जैसलमेर)

◈ राज्य की 90% वर्षा **दक्षिण-पश्चिम मानसून** से होती है।

◈ राज्य में सबसे पहले मानसून (अरब सागर की शाख) **बांसवाड़ा जिले** से प्रवेश करता है। अतः राजस्थान में बासंवाड़ा मानसून का प्रवेश कहलाता है।

◈ **राज्य की अधिकांश वर्षा बंगाल की खाड़ी की शाखा से होती है।** जबकि राजस्थान में **सबसे पहले वर्षा, मानसून की अरब सागरीय शाखा** (10% वर्षा) से होती है।

◈ **मावठ** - शीतकाल में उत्तर पश्चिमी हवाओं/भूमध्यसागरीय पश्चिमी विक्षोभों/जैट स्ट्रीम से राज्य के उत्तरी व पश्चिमी भागों में होने वाली वर्षा को स्थानीय भाषा में मावठ के नाम से जाना जाता है।

- **मावठ** - मावठ का उद्गम भूमध्य सागर से होता है।
- भूमध्य सागरीय चक्रवात (पश्चिमी विक्षोभ) ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान से होते हुये उत्तरी पश्चिमी भारत में प्रवेश करते है।
- उत्तरी पश्चिमी भारत में यह राजस्थान, पंजाब व हरियाणा में हल्की वर्षा करते है जिन्हें 'मावठ' कहा जाता है।
- मावठ का समय दिसम्बर व जनवरी माह होता है।
- मावठ की वर्षा जनवरी माह में सर्वाधिक होती है।
- मावठ को **गोल्डन ड्रॉप्स/सुनहरी बूंद (Golden Drops)** कहा जाता है। क्योंकि रबी की फसलें के लिये यह वरदान है।
- मावठ से सर्वाधिक लाभान्वित होने वाली फसले है - **चना व गेंहू**
- मावठ का कारण - **जेट् स्ट्रीम**

◈ राज्य में वर्षा के औसत **दिन 29** है, **सर्वाधिक वर्षा झालावाड़** में 40 दिन व **न्यूनतम जैसलमेर** में 5 दिन है, माउण्ट आबू में 48 दिन व बांसवाड़ा में 38 दिन है।

◈ राज्य में सर्वाधिक वर्षा दक्षिणी भाग में न्यूनतम वर्षा पश्चिमी भाग में होती है।

◈ राजस्थान की औसत वार्षिक वर्षा तथा **अजमेर जिले** की औसत वार्षिक वर्षा लगभग समान है।

◈ **राजस्थान के 15 जिले राज्य की औसत वार्षिक वर्षा 57.51 cm से कम वर्षा प्राप्त करते है।**

◈ राजस्थान में **मानसून के प्रत्यावर्तन (लौटना) का समय अक्टूबर से दिसम्बर माह माना जाता है।**

◈ **राजस्थान का चेरापूंजी - झालावाड़**

◈ राजस्थान में मानसून की आगमन की सामान्य तिथि - 15 जून मानी गयी है। *(स्रोत आर्थिक समीक्षा)*

◈ **वृष्टि छाया प्रदेश - राज्य का उत्तर व पश्चिमी भाग अरावली का वृष्टिछाया प्रदेश कहलाता है।** क्योंकि बंगाल की खाड़ी का मानसून अरावली पर्वत से टकराकर पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी भाग में ही वर्षा करता है। उत्तरी तथा पश्चिमी भाग सूखा रह जाता है।

◈ राजस्थान की **समुद्रतल से औसत ऊंचाई 370 मीटर है।**

◈ **दोगड़ा** - मानसून पूर्व/प्री मानसून की वर्षा दोगड़ा महलाती है। यह वर्षा मई-जून में होती है। दोगड़ा स्थानीय भाषा का शब्द है।

◈ राजस्थान में वर्षा की सर्वाधिक परिवर्तनशीलता वाला क्षेत्र **उत्तर-पश्चिमी** क्षेत्र है। जबकि सबसे कम परिवर्तनशीलता वाला **दक्षिणी-पूर्वी** क्षेत्र है।

- **नौनेरा (नवनेरा) बाँध** - कालीसिंध नदी पर कोटा के नौनेरा स्थान पर यह बाँध निर्माणधीन है। यह बाँध **पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना** का हिस्सा है।
- नदी जोड़ो परियोजना में सर्वप्रथम कालीसिंध व बेतवा को जोड़ा जाना प्रस्तावित है।

पार्वती नदी -

- उद्गम - विध्यांचल पर्वत श्रेणी में **सेहोर क्षेत्र** (मध्यप्रदेश)
- राजस्थान में प्रवेश - **करियाहट** (बारां) से
- प्रवाह - कोटा व बारां जिले में
- समापन - **पाली घा**ट (सवाई माधोपुर) के पास कोटा की तरफ से दाहिने किनारे पर चम्बल में मिल जाती है।
- राजस्थान में प्रवेश करते समय पार्वती नदी बारां-मध्यप्रदेश की सीमा तथा चम्बल में मिलने से पहले कोटा-मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- पार्वती की सहायक नदियाँ - अंधेरी, रेतरी, बैंथली व बिलास

बनास नदी तंत्र -

- बनास राजस्थान का सबसे बड़ा नदी बेसिन है जिसके अन्तर्गत राज्य के कुल क्षेत्रफल का 13.4 प्रतिशत भाग है।
- बनास अपवाह तंत्र का सर्वाधिक भाग भीलवाड़ा (20%) में है उसके पश्चात अजमेर (12%), चित्तौड़गढ़ (12%), जयपुर (14%), राजसमंद (10%), सवाईमाधोपुर (10%), टोंक (15%), उदयपुर (5%) तथा दौसा (2%) में है।

बनास -

- उपनाम - **वशिष्ठी, वर्णाशा (वन की आशा)**
- उद्गम - **वेरों का मठ(कुम्भलगढ़ के निकट खमनौर की पहाड़ियाँ, राजसमंद)**
- बनास की कुल लम्बाई 512 किमी. है। (पूर्व में इसकी लम्बाई 480 किमी. मानी जाती थी।)
- बनास नदी पूर्णतः राजस्थान में बहती है। **यह पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे बड़ी नदी है।**

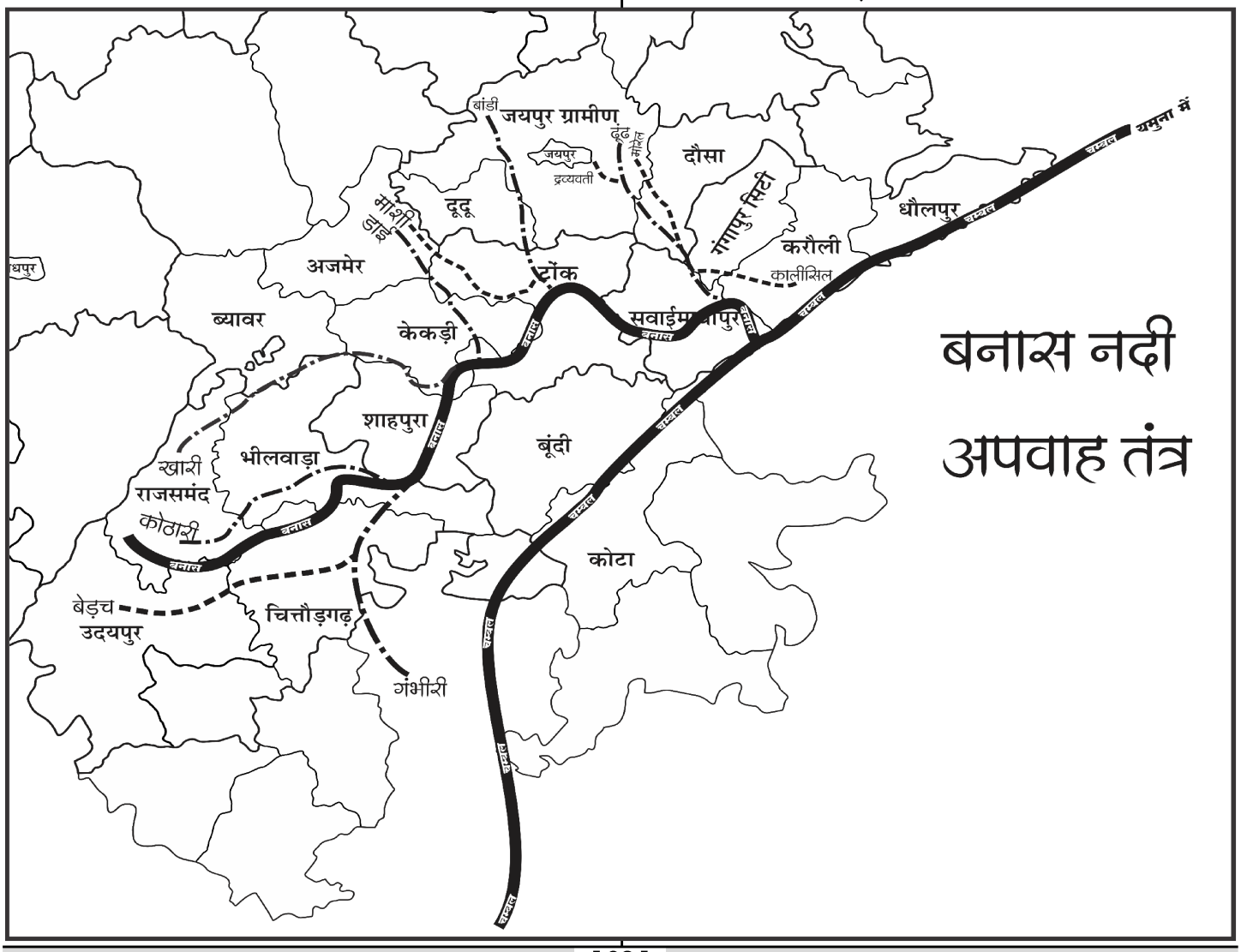

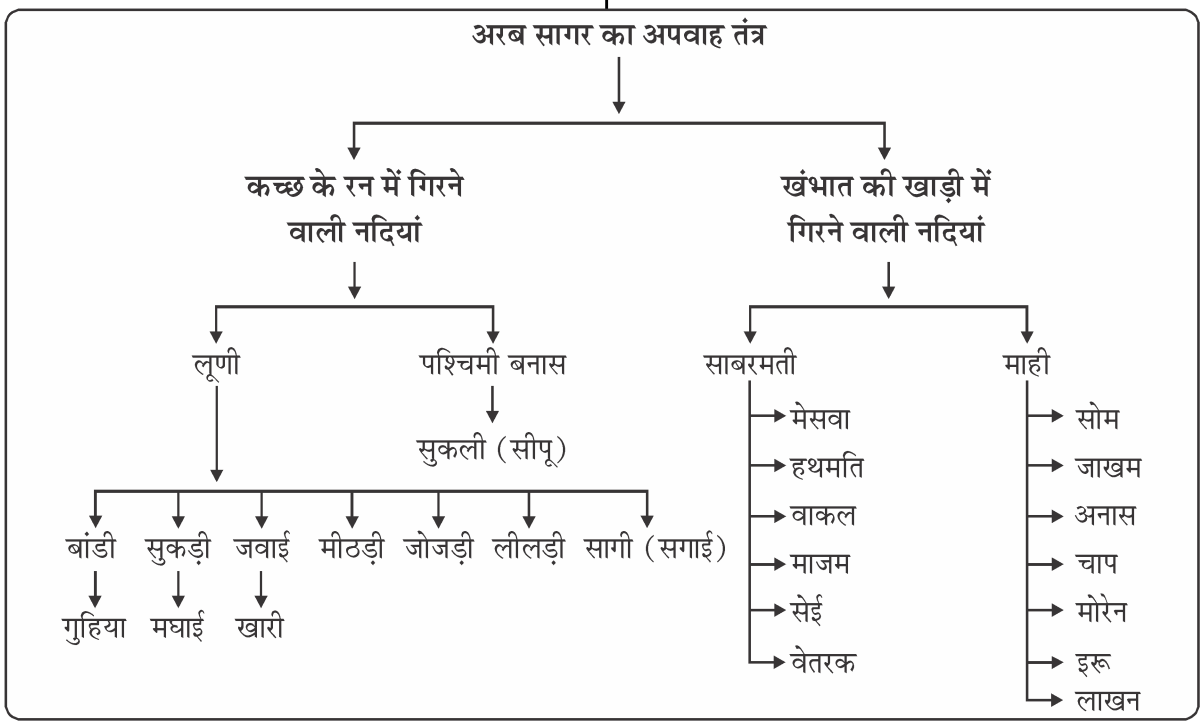

माही नदी तंत्र -

माही नदी -

- उपनाम - **आदिवासियों की गंगा/वागड़ की गंगा/कांठल की गंगा/दक्षिणी राजस्थान की स्वर्णरेखा**
- उद्गम - **मेहद झील (धार जिला, मध्यप्रदेश)** अमरोरू की पहाड़ियों से।
- लम्बाई- **576 कि.मी.** (राजस्थान में **171 कि.मी.**)
- प्रवेश **खांदू गाँव (बाँसवाड़ा)** से
- प्रवाह - बाँसवाडा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर,
- समापन - खम्भात की खाड़ी (अरब सागर) में।
- माही नदी **उलटे 'यू' के** आकार में बहती है।
- माही राजस्थान की एकमात्र नदी है, जिसका प्रवेश एवं निकास दोनों ही दक्षिण दिशा से होता है।
- प्रवेश के बाद दक्षिण से उत्तर की ओर बहती हुई पुनः दक्षिण की ओर मुड़कर गुजरात (महीसागर जिले) में प्रवेश करती है।
- **यह नदी कर्क रेखा को दो बार काटती है,**
- इसके प्रवाह के मैदान को प्रतापगढ़ में **कांठल का मैदान** व बांसवाड़ा में **छप्पन का मैदान** कहते हैं।
- माही नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व गुजरात तीन राज्यों में बहती है।

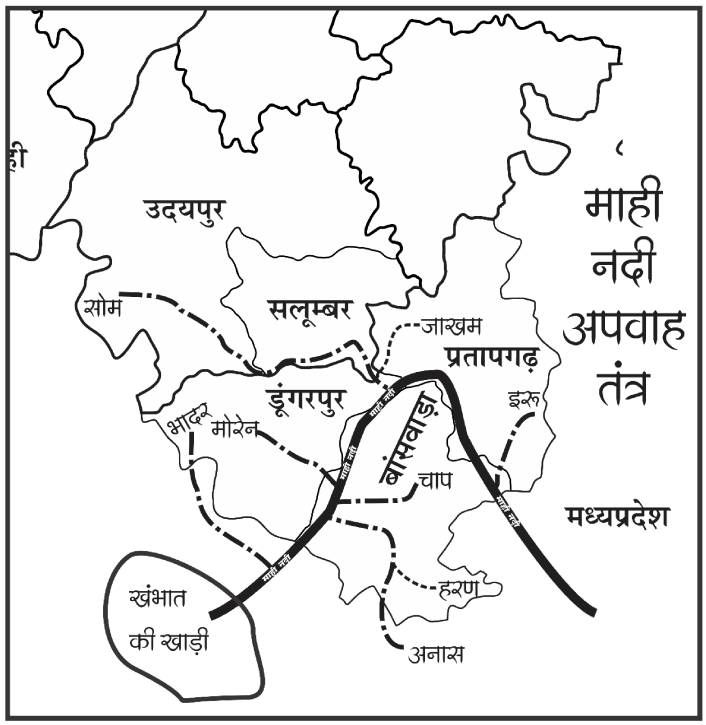

- यह नदी माही बजाज सागर बाँध के बाद पहले बाँसवाड़ा-प्रतापगढ़ की सीमा तथा बेणेश्वर के बाद बाँसवाड़ा - डूंगरपुर की सीमा बनाती है।
- माही नदी पर दो तीर्थ स्थल बेणेश्वर व गलियाकोट स्थित है जो डुंगरपुर में है।
- **बाँसवाड़ा जिला तीन तरफ से माही नदी से घिरा हुआ है।**

- राजस्थान में नदियों के सर्वाधिक **उप-बेसिन** के आधार पर क्रम -
  (i) लूनी (प्रथम), (ii) बनास,
  (iii) चम्बल, (iv) माही
- राजस्थान की नदियों का **अपवाह क्षेत्र** के अनुसार अवरोही क्रम - चम्बल, लूनी, माही, साबरमती, बनास
- **जल ग्रहण क्षेत्र** के आधार पर राजस्थान की नदी प्रणालियों का अवरोही क्रम - लूनी, बनास, चम्बल, माही, बाणगंगा, घग्घर, गंभीर
- नदियों में **उपलब्ध जल की मात्रा** के अनुसार अवरोही क्रम - माही, चम्बल, बनास, लूनी।
- नदी बेसिनों में **उपलब्ध सतही जल की स्थिति** के अनुसार अवरोही क्रम - चम्बल, बनास, माही, लूनी, साबरमती, बाणगंगा।

झीलें

- राजस्थान में अधिकतर झीलें खारी हैं, परन्तु यहां मीठे पानी की झीले भी पायी जाती है जिनकी अपनी अलग छटा है।

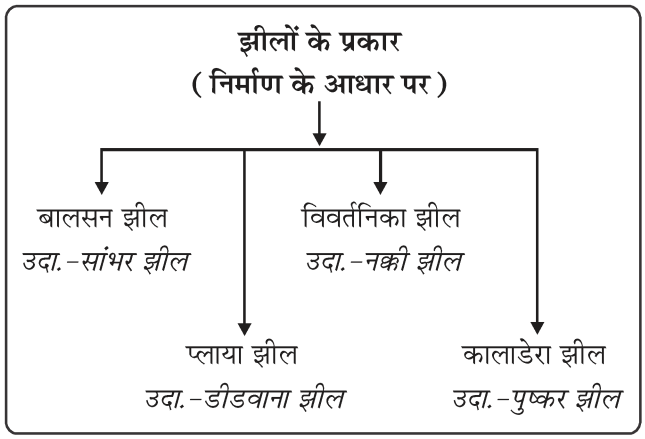

- राजस्थान की अधिकतर झीलें आन्तरिक प्रवाह प्रणाली के अन्दर आती है।
- राजस्थान की झीलों को दो भागों में विभाजित किया जाता है -

1. **खारे पानी की झीलें** - सांभर, डीडवाना झील, पचपदरा झील, लूणकरणसर झील आदि।
2. **मीठे पानी की झीलें** - पिछोला, फतहसागर, उदयसागर आदि।

- राजस्थान में खारे पाने की सर्वाधिक झीलें डीडवाना-कुचामन जिले में है।

खारे पानी की झीलें -

सांभर झील- फूलेरा (जयपुर ग्रामीण) -

- यह झील 27° से 29° उत्तरी अक्षांश तथा 74° से 75° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।
- सांभर झील समुद्र तल से लगभग 367 मी. की ऊंचाई पर स्थित है। इस झील का कुल क्षेत्रफल 150 वर्ग किमी. तथा जलग्रहण क्षेत्र 2500 किमी. है।
- यह झील जयपुर से 65 कि.मी. दूर स्थित है। इसका विस्तार जयपुर ग्रामीण, डीडवाना-कुचामन, अजमेर तीनों जिलों में है।
- इस झील का निर्माण चौहान शासक **वासुदेव** ने करवाया था।
- यह भारत की खारे पानी की **दूसरी सबसे बड़ी व सबसे प्राचीन झील** है तथा आंतरिक जल क्षेत्र की भारत की सबसे बड़ी झील है।
- यह झील दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग 32 किमी. लम्बी तथा 3 से 12 किमी. चौड़ी है। इस झील के पश्चिम में शुष्क जलवायु एवं पूर्व में अर्द्ध शुष्क जलवायु पायी जाती है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से यह **राजस्थान की सबसे बड़ी झील** है।
- सांभर झील आंतरिक अपवाह का क्षेत्र है।
- सांभर लेक अपवाह क्षेत्र चार जिलों (जयपुर ग्रामीण, अजमेर, डीडवाना-कुचामन व सीकर) में स्थित है। इस अपवाह क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 5702.62 वर्ग किमी. है। इस प्रवाह क्षेत्र में से चार नदियां आकर इस झील में गिरती है।
- **झील में गिरने वाली नदियाँ** -
  - मेन्था (उत्तर दिशा से)
  - रूपनगढ़ (दक्षिण दिशा से)
  - खारी (डीडवाना-कुचामन की तरफ से)
  - खंडेला (सीकर की तरफ से)
- बांडी नदी का एक नाला भी इस में गिरता है।
- सांभर झील '**बालसन**' का उदाहरण है।
- इस झील में सर्वाधिक नमक बहाकर लाने वाली **मेन्था** नदी है।
- देश के कुल उत्पादन का लगभग **8.70% नमक** सांभर झील से प्राप्त होता है।
- राजस्थान का 80% नमक इस झील से प्राप्त होता है।
- यहाँ नमक उत्पादन का कार्य **सांभर साल्ट लिमिटेड** (केन्द्र सरकार) करती है। जो हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड की सहायक कम्पनी है। इसमें केन्द्र की 60% व राज्य की 40% हिस्सेदारी है। इसकी स्थापना 30 सितम्बर 1964 को की गई थी।
- यहां **क्यार** व **रेस्तां** विधि से नमक बनाया जाता है।
- सांभर झील में शीत ऋतु में उतरी एशिया व रूस से **फ्लेमिंगों पक्षी** आते है।
- सांभर में साल्ट म्यूजियम स्थित है, यह राजस्थान का एकमात्र साल्ट म्यूजियम है।
- फिल्म PK की शूटिंग भी यहीं हुई थी।
- रामसर साईट - सांभर झील को 23 मार्च 1990 को रामसर साईट में शामिल किया गया, ये राजस्थान की दूसरी रामसर साईट है।
- शाकम्भरी माता का मंदिर सांभर झील किनारे स्थित है।

4. रामसागर झील – धौलपुर
5. तालाब शाही – धौलपुर
6. पीथमपुरी झील – नीम का थाना
7. उम्मेद सागर झील – जोधपुर
8. घड़सीसर झील – जैसलमेर
9. बुझ झील – जैसलमेर
10. रामदेवरा झील – जैसलमेर
11. चौपड़ा झील – पाली
12. रंग सागर झील – डूंगरपुर
13. आनंद सागर झील – बांसवाड़ा
14. झील का बारां – भरतपुर
15. राम सागर झील – धौलपुर
16. गुलाब सागर – जोधपुर
17. महिला बाग का झालरा – जोधपुर
18. थेला झील – अलवर
19. बुढ़ा जोहड़ झील – अनुपगढ़
20. बीसलसर झील – अजमेर
21. फूलसागर झील – अजमेर
22. कृष्ण सागर झील – झालावाड़

◈ **केन्द्रीय झील संरक्षण योजना** – (NLCP) राजस्थान की 6 झीलों (पुष्कर, आनासागर, फतेहसागर, पिछोला, मान सागर, नक्की झील) को केन्द्र सरकार ने इस योजना में शामिल किया है।

–: यह भी जाने :–

जयपुर की जीवनरेखा	–	अमानीशाह नाला/द्रव्यवती नदी
राजसमंद की जीवनरेखा	–	नंदसमंद बाँध
भरतपुर की जीवनरेखा	–	मोती झील
अजमेर की जीवनरेखा	–	नारायण सागर बाँध
राजस्थान की जीवनरेखा	–	इंदिरा गाँधी नहर
बीकानेर की जीवनरेखा	–	लूणकरणसर लिफ्ट नहर
जोधपुर की जीवनरेखा	–	राजीव गाँधी लिफ्ट नहर
गंगानगर की जीवनरेखा	–	गंगनहर
मारवाड़ की जीवनरेखा	–	नर्मदा नहर

◈ **प्रमुख तालाब** –

(i) काला तालाब – सवाईमाधोपुर
(ii) सुख तालाब – सवाईमाधोपुर
(iii) जंगली तालाब – सवाईमाधोपुर
(iv) खारी तालाब – भीलवाड़ा
(v) सरेरी तालाब – भीलवाड़ा
(vi) शुक्र तालाब – नागौर
(vii) पुंजेल तालाब – डूंगरपुर

⊡⊡⊡⊡⊡

-: क्या आप जानते है :-

1. **बालू मृदा** - उच्च तापमान निम्न वर्षा, निम्न आर्द्रता वाले क्षेत्रों में ग्रेनाइट तथा बलुआ पत्थर चट्टानों के क्षरण से थार के मरूस्थल में निर्मित हुई।
2. **लाल मिट्टी** - दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में उच्च तापमान,निम्न वर्षा, मध्य आर्द्रता वाले क्षेत्रों में रवेदार आग्नेय व कायान्तरित शैलों जैसे ग्रेनाइट, नीस व क्वार्टजाइट शैलों के क्षरण से लाल मिट्टी का निर्माण हुआ।
3. **काली मिट्टी** - दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्रों में **बैसाल्ट** व **लावा के क्षरण** से काली मिट्टी का निर्माण हुआ।
4. **जलोढ़ मृदा** का निर्माण अवसादी चट्टानों के अपरदन से हुआ। इसमें ह्युमस की मात्रा सर्वाधिक होती है।

राजस्थान की मिट्टीयों का अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण -

1. एन्टीसोल्स (पीली भूरी मृदा) -

- नव विकसित मृदा, पश्चिमी राजस्थान के शुष्क भागों में राजस्थान के **सर्वाधिक क्षेत्र** में पाई जाती है।
- उपमृदा कण - टोरी सागेंटस, इस्ट फ्लवेन्टस
- **जिले** - पश्चिमी राजस्थान के लगभग सभी जिले।

2. एरिडीसोल्स (शुष्क मिट्टी) बलुई/लवणीय/अम्लीय मृदा -

- यह शुष्क जलवायु की खनिज मृदा समूह है तथा यह शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में पायी जाती है।
- एरिडीसोल्स का उपमृदा कण **ऑरथिड** है जिसमें से केम्बो ऑरथिड्स, केल्सी ऑरथिड्स, सेलोरथिड्स और पेलिऑरथिड्स उपसमूह राजस्थान में पाये जाते है।
- **जिले** - सीकर, नीमकाथाना, चूरू, झुन्झुनूं, नागौर, डीडवाना-कुचामन, जोधपुर ग्रामीण, पाली, जालौर, सांचौर

3. इंसेप्टीसोल्स (आर्द्र मिट्टी) -

- लाल रंग व लेटेजनिक होती है तथा अर्द्धशुष्क से उपआर्द्र जलवायु प्रदेशों में अरावली के पूर्वी भाग में पायी जाती है।
- उपमृदा कण - उस्टोक्रेप्टस
- **जिले** - सिरोही, पाली, राजसमंद, उदयपुर, सलुम्बर, भीलवाड़ा, शाहपुरा, चित्तौड़गढ़ में मुख्य रूप से तथा जयपुर ग्रामीण, सवाई माधोपुर व झालावाड़ में कहीं-कहीं मिलती है।

4. अल्फी सोल्स (जलोढ़ मिट्टी) -

- उपआर्द्र से आर्द्र जलवायु में पायी जाती है।
- नदी प्रवाह के क्षेत्र (बेसिन) की मिट्टी है। अत: इसमें उपजाऊपन अधिक होता है।
- इसकी ऊपरी सतह में मटियारी मिट्टी की प्रतिशत मात्रा अधिक होती है।
- उपमृदा कण - हेपलुस्टालाफस
- **जिले** - जयपुर ग्रामीण, दौसा, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, भरतपुर, डीग, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी, करौली, धौलपुर, टोंक भीलवाड़ा, शाहपुरा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, उदयपुर, सलुम्बर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, प्रतापगढ़ आदि।

5. वर्टी सोल्स (काली मिट्टी) -

- आर्द्र से अति आर्द्र जलवायु में पाई जाती है।
- इस मिट्टी में अत्यधिक **क्ले** उपस्थित होने के कारण **मटियारी मृदा** की सभी विशेषताऐं पायी जाती है।
- यह काली और **चरनोजम** मिट्टी होती है।
- उपमृदा कण - उस्टरर्स
- **जिले** - दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में हाड़ौती का पठार, कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ में मुख्य रूप से तथा सवाईमाधोपुर भरतपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा में सीमित रूप से पायी जाती है।

कृषि विभाग के अनुसार राजस्थान की मिट्टियों का वर्गीकरण

◈ **कृषि विभाग ने राजस्थान की मिट्टियों को 14 भागों में वर्गीकृत किया है** -

क्र.सं.	मृदा का प्रकार	जिले
1.	**साइरोजम**	गंगानगर, अनुपगढ़
2.	**रेवेरिना**	गंगानगर, अनुपगढ़
3.	**जिप्सीफेरस**	बीकानेर
4.	मरूस्थलीय मृदा	गंगानगर, अनुपगढ़, चूरू, झुंझुनूं, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, बाड़मेर, बालोतरा, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी एवं सीकर
5.	ग्रे-ब्राउन जलोढ मृदा	जालौर, सांचौर, पाली नागौर, डीडवाना-कुचामन्, ब्यावर, अजमेर एवं सिरोही
6.	नान केल्सिल ब्राउन मृदा	जयपुर ग्रामीण, सीकर, नीमकाथाना, झुंझुनूं, नागौर, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, अलवर, कोटपूतली-बहरोड़ एवं खैरथल-तिजारा

7.	नवीन जलोढ़ मृदा/नये मूल की जलोढ़ मृदा	अलवर, खैरथल तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, डीग, सवाईमाधोपुर, भरतपुर एवं जयपुर
8.	पीली-भूरी मृदा	जयपुर ग्रामीण, टोंक, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा,चित्तौड़गढ़ एवं उदयपुर
9.	नवीन भूरी मूदा	भीलवाड़ा एवं अजमेर
10.	पर्वतीय मृदा	उदयपुर एवं कोटा
11.	लाल-लोम	डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा
12.	काली गहरी मध्यम मृदा	कोटा, बूंदी, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, भरतपुर एवं झालावाड़
13.	**कैल्सी ब्राउन मरूस्थली मृदा**	जैसलमेर एवं बीकानेर
14.	मरूस्थल एवं बालूका स्तूप	जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर एवं बीकानेर

राजस्थान की विभिन्न नदी बेसिनों में पायी जाने वाली मृदा-

1. चम्बल बेसिन - काली व लाल
2. बनास बेसिन - भूरी मटियार दोमट
3. माही बेसिन - लाल व काली
4. लूनी बेसिन - भूरी दोमट
5. बाणगंगा बेसिन - भूरी जलोढ़
6. घग्घर बेसिन - भूरी मटियार (बाढ़ निर्मित)
8. छप्पन का मैदान - लाल व दोमट काली

राजस्थान में मिट्टी से संबंधित प्रमुख समस्याऐं -

1. **मृदा अपरदन/अपक्षरण**
2. **भूमि का अम्लीय, क्षारीय व लवणीय होना।**
3. **सेम की समस्या**
4. **भूमि की उर्वरा शक्ति का ह्रास होना (भूमि अवनयन)**
5. **खरपतवार की समस्या**
6. **मरूस्थलीकरण**

मृदा अपरदन -

- ◈ जल, वायु, हिमपात के तीव्र प्रवाह से मिट्टी का एक स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर एकत्रित हो जाना। मृदा अपरदन कहलाता है।
- ◈ **मृदा के अपरदन को 'रेगंती हुयी मृत्यु'** तथा **मिट्टी का क्षय रोग कहते है।**
- ◈ मृदा अपरदन को **कृषि का पहला शत्रु** भी कहा जाता है।
- ◈ राजस्थान में दो प्रकार मृदा अपरदान पाया जाता है - (i) जल अपरदन (ii) वायु अपरदन
- ◈ राजस्थान में सर्वाधिक अपरदन वायु द्वारा होता है।
- ◈ जल द्वारा राजस्थान में मिट्टी अपरदन **सर्वाधिक चम्बल नदी** द्वारा हाड़ौती पठार में पाया जाता है।

(i) **जल अपरदन -**

- पानी बहाव से मिट्टी का अपरदन
- राज्य की 4 लाख हैक्टर भूमि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इससे प्रभावित है।
- राजस्थान में सर्वाधिक जल अपरदन वाला जिला **कोटा** है।
- सर्वाधिक जल अपरदन **चम्बल** एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा किया जाता है उसके पश्चात **घग्घर** नदी दूसरे स्थान पर है।
- चम्बल एवं उसकी सहायक नदियों ने हजारों हैक्टर कृषि भूमि को बीहड़ों में बदल दिया है।
- सम्पूर्ण **हाड़ौती पठार** जल अपरदन से प्रभावित है।
- जल अपरदन के प्रकार - (A) लम्बवत/अवनालिका अपरदन
  (B) चादरी अपरदन

A. अवनालिका अपरदन/लम्बवत अपरदन (Gully Erosion) -

- नदी जल के तीव्र प्रवाह से मिट्टी का कटाव गहराई तक (नालीनुमा) होता है।
- **राजस्थान में सर्वाधिक अवनालिका अपरदन करने वाली नदी चम्बल है।**
- **इसके पश्चात गंभीर, झेरेल, ढूंढ, बाणगंगा आदि भी अवनलिका अपरदन करने वाली नदियाँ है।**
- राज्य में घग्घर, चम्बल, बनास व बाणगंगा नदी में सर्वाधिक बाढ़ आती है।
- राजस्थान में सर्वाधिक अवनालिका अपरदन से प्रभावित जिला **कोटा** है।
- अवनालिका अपरदन द्वारा निर्मित स्थलाकृतियों **बीहड़** या **उत्खात** स्थलाकृति कहलाती है।
- राजस्थान में बीहड़ प्रभावित जिले क्रमशः **कोटा, सवाईमाधोपुर, बूंदी, धौलपुर, करौली** है।
- प्रतिशत की दृष्टि सर्वाधिक बीहड़ भूमि **धौलपुर** में तथा क्षेत्रफल के आधार पर सर्वाधिक बीहड़ **भूमि कोटा** और उसके बाद सवाईमाधोपुर में है।

7 राजस्थान : प्राकृतिक वनस्पत्ति

- प्रकृति प्रदत्त उपहारों में प्राकृतिक वनस्पति एक महत्वपूर्ण उपहार है, जो प्रदेश के प्राकृतिक पर्यावरण को निर्धारित एवं नियन्त्रित करता है। राजस्थान की प्राकृतिक संरचना इस प्रकार की है कि यहां भारत के अन्य राज्यों की तुलना में वनों का विस्तार अपेक्षाकृत कम है। राज्य में वनों का विस्तार सीमित है किन्तु यह वन विस्तार सभी जिलों में समान न हो कर भिन्नता रखता है। वनों के विस्तार में कमी तथा विस्तार में भिन्नता के लिये न सिर्फ भौगोलिक कारक उत्तरदायी है बल्कि मानवीय कारक भी उत्तरदायी है।
- राजस्थान में वन संरक्षण की प्रथम योजना आजादी से पूर्व 1910 में तत्कालीन जोधपुर (रियासत) ने बनाई थी तथा शिकार पर सर्वप्रथम प्रतिबंध **टोंक रियासत** ने 1901 में लगाया था।
- राजस्थान **वन विभाग** की स्थापना **1949-50** में की गयी थी।
- राजस्थान की **प्रथम वन एवं पर्यावरण नीति 18 फरवरी, 2010 में जारी की गयी थी।** जिसमें 20 प्रतिशत वन क्षेत्र का लक्ष्य रखा गया था।
- राजस्थान वन एवं पर्यावरण नीति घोषित करने वाला देश का पहला राज्य है।

राजस्थान वन विभाग के नवीनतम आंकड़े -

(स्रोत : प्रशासनिक प्रतिवेदन, वन विभाग 2022-23)

- राज्य में वन क्षेत्र 32869.69 वर्ग कि.मी. है जो राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रफल का **9.60%** भाग है।
- भारत के कुल वनों का 3.10% भाग राज्य में है।
- राज्य में **प्रति व्यक्ति औसतन वनावरण एवं वृक्षावरण 0.037 हैक्टयर** प्रति व्यक्ति है।
- अभिलेखित वन (Recorded Forest) क्षेत्र की दृष्टि से राजस्थान का **स्थान 15 वाँ** है।
- राजस्थान का कुल वनावरण एवं वृक्षावरण **25387.96 वर्ग किमी** है जो राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्र का 7.42% है। इनमें से 16654.96 वर्ग कि.मी. वनावरण क्षेत्र तथा 8733 वर्ग कि.मी. वृक्षावरण क्षेत्र है।
- राज्य के कुल वनावरण 16654.96 वर्ग किमी. में से लगभग 12560 वर्ग किमी. अभिलेखित वन के अन्तर्गत आता है जबकि 4095 वर्ग किमी. अभिलेखित वन के बाहर का वनावरण शामिल है।

ध्यान रहे : 10% से अधिक वन सघनता वाले क्षेत्र को वनावरण तथा 10% से कम वन सघनता वाले क्षेत्र को वृक्षावरण कहा जाता है।

प्रशासनिक दृष्टि से वनों का वर्गीकरण

क्र.सं.	वनों का प्रकार	विशेषताऐं	सर्वाधिक प्रसार वाले जिले	प्रतिशत
1.	**आरक्षित वन (Reserved Forest)**	यह वन राजकीय सम्पत्ति है। कटाई, पशु चराई पर पूर्णत: प्रतिबंध (राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य)	उदयपुर, चित्तौड़गढ़, अलवर	**37.05%** (12176.24 वर्ग किमी)
2.	**रक्षित सुरक्षित वन (Protected Forest)**	कटाई व पशु चराई के लिये वन विभाग से अनुमति/ठेका लिया जाता है। (मृगवन, आखेट निषिद्ध क्षेत्र)	बारां, कारौली, उदयपुर	**56.55%** (18588.39 वर्ग किमी)
3.	**अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest)**	कटाई व पशु चराई पर कोई प्रतिबंध नहीं होता (पवित्र वन तथा ओरण)	बीकानेर, गंगानगर, जैसलमेर	**6.40%** (2105.03 वर्ग किमी)
			कुल योग	**32869.69 वर्ग किमी**

- राजस्थान का **राज्य वृक्ष-खेजड़ी** एवं **राज्य पुष्प रोहिड़ा** है।
- राजस्थान में **38 प्रादेशिक वन मण्डल है तथा वन्यजीव मण्डल 16 है।** (स्रोत - प्रशासनिक प्रतिवेदन 2022-23)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा वन मण्डल - जोधपुर वन मण्डल
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा वन मण्डल - सिरोही वन मण्डल
- सर्वाधिक वन क्षेत्र वाला वन मण्डल - उदयपुर मण्डल

- ◈ इनके **लाल सुर्ख रंग के फूलों के कारण इन्हें 'फ्लेम ऑफ द फोरेस्ट'/ 'जंगल की ज्वाला'** कहा जाता है।
- ◈ उपयोग - प्राकृतिक रंग बनाने में।
- ◈ इनका वानस्पतिक नाम - **ब्यूटिया मोनोस्पर्मा** है।
- ◈ **राजसमंद, चित्तौड़** में इनकी अधिकता है इसके अलावा सिरोही, उदयपुर, सलूम्बर, ब्यावर, अजमेर, केकड़ी गंगापुरसिटी, सवाईमाधोपुर, अलवर, जयपुर, टोंक में भी पाये जाते है।
- ◈ इन वनों में अन्य वृक्ष के रूप में झड़बेर, कंकेरी, हिगोंटा, हर्जन व अरूंज के वृक्ष भी मिले है।
- ◈ पलाश की लकड़ी का जलानें एवं **कोयला बनाने** में प्रयोग होता है।

(iii) चंदन वन - हल्दीघाटी, नाथद्वारा (राजसमंद)

(iv) बांस के वन - प्रचुर वर्षा वाले क्षेत्रों में इसका विस्तार पाया जाता है।

- **बांसवाड़ा का नाम बांस के वनों की अधिकता के कारण पड़ा है।**
- यह वन आबू पर्वत (सिरोही), बांसवाड़ा, उदयपुर, सलुम्बर, चित्तौड़गढ़, कोटा, अलवर व भरतपुर जिले में पाये जाते है।
- **बांस को 'आदिवासियों का हरा सोना' कहा जाता है।** इसका उपयोग कागज निर्माण, टोकरी, चारपाई, झोपड़ी, फर्नीचर निर्माण में किया जाता है।

(v) धोकड़ा वन - सर्वाधिक सवाईमाधोपुर में इसके अलावा बूंदी, चित्तौड़गढ़, भरतपुर व अलवर जिलों में भी पाये जाते है।

(vi) खैर के वन - उत्पत्ति जयसमंद के आस-पास काफी मात्रा में, इसके अलावा झालावाड़, कोटा, टोंक, चित्तौड़गढ़ जिलों में

(vi) बबूल के वन

(viii) सागवान के वन

वनों से प्राप्त औषधि

वनस्पति	प्राकृतिक क्षेत्र	उपयोग
चिरमी	पूर्वी राजस्थान	हृदय रोग, गर्भपात
खेर	उदयपूर, डूंगरपुर	टेक्सटाइल उद्योग
गुग्गल	अजमेर	वसा, गठिया व रक्तचाप नियंत्रण
हिंगोड़ा	हाड़ौती- मेवाड़	खांसी, दंत रोग, गर्भनिरोधक
वज्रदन्ती	हाड़ौती - मेवाड़	दंत रोग में लाभ
जंगली प्याज	जोधपुर, बाड़मेर	फेफड़ों का संक्रमण
ब्राह्मी	उदयपुर, बांसवाड़ा	मस्तिष्क के लिए
शंखपुष्पी	जोधपुर, बाड़मेर	यादाश्त में वृद्धि
सालर	जयपुर	बिच्छू काटने पर
अर्जुन	झालावाड़	हृदय रोग
रोहिड़ा	पश्चिमी जिले	यौन रोग
काली मूसली	दक्षिणी जिले	पौरुष शक्ति में वृद्धि
सफेद मूसली	दक्षिणी जिले	पौरुष शक्ति में वृद्धि
अश्वगंधा	नागौर	प्रतिरोधक शक्ति
केली	चित्तौड़गढ़	गर्भनिरोधक
डांडा थोर	सम्पूर्ण राज्य	गर्भनिरोधक
ग्वारपाठा	सांभर क्षेत्र	सौन्दर्य प्रसाधनों में

-: यह भी जाने :-

खेजड़ी -

- ◈ वानस्पतिक नाम - **प्रोसोपिस सिनेरेरिया**
- ◈ उपनाम - **जांटी, शमी वृक्ष (ग्रन्थों में), सीमलो, राजस्थान का गौरव, राजस्थान का कल्पवृक्ष/थार का कल्पवृक्ष**
- ◈ सर्वाधिक खेजड़ी - नागौर जिले में,
- ◈ सर्वाधिक खेजड़ी वाला क्षेत्र - शेखावाटी
- ◈ खेजड़ी के फूल - नीमझर/मींझर, हराफल - सांगरी
- ◈ खेजड़ी पर 1988 में डाक टिकट (60 पैसे का) जारी किया गया।
- ◈ खेजड़ी 31 अक्टूबर, 1983 को राज्यवृक्ष घोषित, दशहरे पर इसकी पूजा की जाती है। खेजड़ली गांव (जोधपुर) में 1730 में अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 लोगों ने खेजड़ी को बचाने के लिये पेड़ों से चिपककर अपना बलिदान दिया था।
- ◈ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी खेजड़ली में विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला भरता है।
- ◈ 12 सितम्बर, 1978 में पहली बार खेजड़ली दिवस मनाया गया था। तब से प्रतिवर्ष 12 सितम्बर का यहां **खेजड़ली दिवस** मनाया जाता है।
- ◈ **माटो** - बीकानेर के राजचिह्न में खेजड़ी वृक्ष दर्शाया गया है इसे माटो कहा जाता है।
- ◈ **थार शोभा** - केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर द्वारा विकसित खेजड़ी की कांटे रहित किस्म।

रोहिड़ा -

- ◈ वानस्पतिक नाम - **टिकोमेला अण्डूलेटा**
- ◈ उपनाम - रेगिस्तान/मरूस्थल का सागवान, **मरूटीक,** मरूशोभा
- ◈ 31 अक्टूबर, 1983 को रोहिड़ा का फूल राज्य पुष्प घोषित, रोहिड़े के फूल को **मारवाड़ टीक** भी कहते है। इसकी लकड़ी से फर्नीचर बनता है।
- ◈ पश्चिमी राजस्थान में सर्वाधिक पाया जाता है।

- ◈ इमारती लकड़ी वाले वृक्ष - सागवान, सालर, रोहिड़ा, शीशम
- ◈ जलाने की लकड़ी वाले वृक्ष - धोकड़ा, खैर, बबूल, खेजड़ी

8 राजस्थान : जैव विविधता एवं वन्य जीव संरक्षण

- राजस्थान में स्वतंत्रता पूर्व 1910 में **जोधपुर रियासत** में वन संरक्षण की योजना बनाई गई थी। 1935 में **अलवर रियासत** में वन अधिनियम बनाया गया।
- स्वतंत्रता के पश्चात **1949-50** को राजस्थान में **वन विभाग** की स्थापना की गई।
- 1954 में **वन्य जीव बोर्ड** का गठन हुआ।
- स्वतंत्रता के पश्चात् 23 अप्रैल, 1951 को राजस्थान में **'राजस्थान वन्य पशु एवं पक्षी संरक्षण अधिनियम-1951'** लागू किया गया। जिसमें वन्य जीवों हेतु आरक्षित क्षेत्र घोषित करने की व्यवस्था की गई।
- 1955 में प्रथम बार राज्य के 5 रियासती शिकारगाहों में शिकार पर प्रतिबंध लगाकर वन्य जीवों के लिए आरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया।
- राजस्थान सरकार द्वारा भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 को **1 सितम्बर 1973** को लागू किया गया। जिसके तहत वन्य जीवों के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया। यह अधिनियम केन्द्र में **9 सितम्बर 1972** को ही लागू हो गया था।
- संसद द्वारा 42वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा वन्य जीव विषय को समवर्ती सूची का विषय बना दिया जिसके तहत अब केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों इस विषय पर कानून बना सकती है। इसी के तहत केन्द्र सरकार के अधीन राष्ट्रीय पार्क तथा राज्य सरकार के अधीन अभयारण्य, आखेट निषिद्ध क्षेत्र व मृगवन आदि संरक्षित किये जाते है।
- नये राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव अभयारण्य क्षेत्र के लिए राज्य विधानसभा प्रस्ताव बनाकर संसद को भेजती है। संसद द्वारा पारित होने पर वह लागू होता है। लेकिन आखेट निषेध क्षेत्र राज्य सरकार के स्तर पर लागू किये जाते है।
- राजस्थान की **प्रथम वन नीति 18 फरवरी, 2010** को केबिनेट द्वारा अनुमोदित की गई। इस नीति के अनुसार राज्य के सम्पूर्ण भूभाग के 20 प्रतिशत भाग को वृक्षाच्छादित करने का लक्ष्य रखा है।
- बाघ परियोजना (टाइगर प्रोजेक्ट) के तहत राजस्थान की पहली बाघ परियोजना **रणथम्भौर बाघ परियोजना** थी जिसे 1973 में प्रारम्भ किया गया था। दूसरी, तीसरी व चौथी बाघ परियोजना क्रमशः सरिस्का बाघ परियोजना (1978-79) एवं मुकन्दरा हिल्स बाघ परियोजना (2013) तथा रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व (2022) थी।

-: यह भी जाने :-

गोडावण

- वैज्ञानिक नाम - **क्रायोटिस नाइग्रीसेप्स** (Choriotis Nigriceps)
- उपनाम- सोहन चिड़िया, गुधनमेर, गुराथिन, हुकना, **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड,** माल मोरड़ी, शर्मिला पक्षी।
- 1980 में इस पर केन्द्र सरकार द्वारा डाक टिकट जारी किया गया।
- 21 मई, 1982 में इसे राजस्थान का **राज्यपक्षी** घोषित किया गया।
- राजस्थान में गोडावन मुख्यतः **राष्ट्रीय मरुउद्यान**, (जैसलमेर) **सोंकलिया** (अजमेर), **सोरसन** (बारां) में पाया जाता है। गोडावण सेवण घास में अंडे देता है।

चिंकारा

- वैज्ञानिक नाम - **गजेला बनेट्टी**
- यह छोटा हिरण (एंटीलोप) के उपनाम से विख्यात है।
- 12 दिसम्बर, 1983 को इसे राजस्थान का वन्य श्रेणी में राज्य पशु घोषित किया गया।
- राष्ट्रीय मरू उद्यान व नाहरगढ़ अभयारण्य में चिंकारा काफी संख्या में विचरण करते है।

ऊंट

- वैज्ञानिक नाम - **कैमेल्स ड्रोमेडेरियस**
- 2014 में ऊंट को राजस्थान का **घरेलू श्रेणी** में राज्य पशु घोषित किया गया।
- इसे रेगिस्तान का जहाज भी कहते है।
- प्रथम विश्व युद्ध में महाराजा गंगा सिंह ने ऊंटो की सेना **(गंगा रिसाला)** बनाई थी। जिसे बाद में BSF में **उष्ट्रकोर** के नाम से शामिल कर लिया गया।
- श्रृंगार गीत **गोरबंद** भी ऊंटों से संबंधित है।
- ऊंट की खाल पर की जाने वाली कलाकारी को **उस्ता कला** कहा जाता है तथा ऊंट की खाल से बनाये गये शीतल जल के पात्र को **कॉपी** कहते है।
- ऊंट के नाक में डाले जाने वाले लकड़ी से बने आभूषण को **गिरबाण** कहा जाता है तथा पीठ पर **पलाणा** (खटाल्या) रखा जाता है।

जैव विविधता/वन्य जीव संरक्षण

1. स्वः स्थाने संरक्षण (In. Situ)
(जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में संरक्षित करना)
उदाहरण : वन्य जीव अभयारण्य, राष्ट्रीय उद्यान बाघ परियोजना, रामसर साइट, कन्जर्वेशन रिजर्व, आखेट निषेध क्षेत्र, जैव मण्डल

2. बाह्य स्थाने संरक्षण (Ex-Situ)
(जीवों को प्राकृतिक आवास से बाहर संरक्षित करना)
उदाहरण : जन्तुआलय, मृगउद्यान, पशु जीन बैंक, एक्वेरीयम

राजस्थान में वन्य जीव संरक्षण की दिशा में किये जा रहे प्रयास -

◈ राज्य की विषम जलवायु व सीमित वन क्षेत्र होने के उपरान्त भी राजस्थान में वन्य जीव संरक्षण के सतत् प्रयासो के परिणाम स्वरूप राज्य में 3 राष्ट्रीय उद्यान, 5 टाइगर रिजर्व, 26 अभयारण्य एवं 36 कजर्वेशन रिजर्व स्थित है। इन सभी संरक्षित क्षेत्रों का कुल क्षेत्रफल 11204.24 वर्ग किमी. है।

◈ **वर्तमान में राजस्थान में -**

टाइगर रिजर्व - 5
राष्ट्रीय उद्यान - 3
वन्य जीव अभयारण्य - 26
कंजर्वेशन रिजर्व - 36
आखेट निषिद्ध क्षेत्र - 33
मृगवन - 7
जन्तुआलय - 5
वन्य जीव मण्डल - 16
रामसर स्थल - 2

टाइगर रिजर्व -

◈ वर्तमान में राजस्थान में बाघ संरक्षण हेतु 5 टाईगर रिजर्व है-

क्र.सं	टाइगर रिजर्व	जिले	क्षेत्रफल
1.	रणथम्भौर टाईगर रिजर्व (1973)	सवाई माधोपुर, करौली, बूँदी, टोंक	1530.23 वर्ग किमी.
2.	सरिस्का टाईगर रिजर्व (1978)	अलवर, जयपुर ग्रामीण, कोटपूतली-बहरोड़	1213.34 वर्ग किमी
3.	मुकुन्दरा हिल्स टाईगर रिजर्व (2013)	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़	1135.78 वर्ग किमी.
4.	रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व (2022)	कोटा, बूंदी	1496.49 वर्ग किमी
5.	धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व (2023)	धौलपुर, करौली	599.65 वर्ग किमी
योग			**5975.48 वर्ग किमी**

नोट : रणथम्भौर टाइगर रिजर्व राजस्थान का सबसे बड़ा टाइगर रिजर्व है जबकि धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व सबसे छोटा टाइगर रिजर्व है।

राष्ट्रीय उद्यान -

◈ राष्ट्रीय उद्यान केन्द्र सरकार द्वारा संचालित होते हैं। वर्तमान में राजस्थान में 3 राष्ट्रीय उद्यान हैं।

क्र.सं.	राष्ट्रीय उद्यान	जिले	क्षेत्रफल
1.	रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (1980)	सवाई माधोपुर	282.03 वर्ग किमी.
2.	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1981)	भरतपुर	28.73 वर्ग किमी
3.	मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान (2012)	कोटा, चित्तौड़गढ़	297.6 वर्ग किमी.
योग			**608.38 वर्ग किमी.**

रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान - सवाईमाधोपुर

- यह राजस्थान का **प्रथम राष्ट्रीय** उद्यान व **प्रथम टाइगर प्रोजेक्ट** है।
- वन्य जीव अभयारण्य का दर्जा - 1955 में
- टाईगर प्रोजेक्ट में शामिल - 1973 में
- राष्ट्रीय उद्यान घोषित - 1 नवम्बर 1980 को
- रणथम्भौर को **'भारतीय बाघों का घर'** (Land of Tiger) कहा जाता है।

थाना), जवाई बांध, बस्सी व सीतामाता अभ्यारण्य को भी इस प्रोजेक्ट में शामिल करके यहां पर्यटन प्रोत्साहन के लिए सफारी शुरू करने पर विचार चल रहा है।

- **प्रोजेक्ट ऐलीफैन्ट** – इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र सरकार की आर्थिक सहायता से जयपुर में **हाथी गांव (कुण्डा गांव)** में पालतु हाथियों का प्रबंधन किया जा रहा है।
- वी.पी. समिति – 2005 में राज्य सरकार को वन्य जीव संरक्षण के लिए उपाय सुझाने के लिए घटित समिति।
- कूमट कमेटी – रणथम्भौर टाइगर रिजर्व में शिकार के कारण बाघो की घटित संख्या के समाधान के लिए 1992 में घटित कमेटी।
- शिकार पर प्रतिबंध लगाने वाली पहली रियासत **टोंक** (1901 में) थी।

शुभंकर –

- राज्य की वन्य जीव प्रजातियों को बचाने व वन्य जीवों के सरंक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए 2016 में प्रत्येक जिले में पाये जाने वाले महत्त्वपूर्ण जीवों को उस जिले का शुभंकर घोषित किया गया है।

जिलों से संबंधित वन्य जीव (शुभंकर)

जिला	वन्यजीव
अजमेर	खरमोर
झंझुनूं	काला तीतर
अलवर	सांभर
जालौर	भालू
बाँसवाड़ा	जल पीपी
झालावाड़	गागरोनी तोता
बारां	मगर
जोधपुर	कुरजां
बाड़मेर	मरु लोमड़ी
करौली	घड़ियाल
भरतपुर	सारस
कोटा	ऊदबिलाव
भीलवाड़ा	मोर
नागौर	राजहंस
बीकानेर	भट्ट तीतर
पाली	तेंदुआ
बूंदी	सुर्खाब
राजसमंद	भेड़िया
चित्तौड़गढ़	चौसिंगा
प्रतापगढ़	उड़न गिलहरी
चूरू	काला हिरण
सवाईमाधोपुर	बाघ
दौसा	खरगोश
श्रीगंगानगर	चिंकारा
धौलपुर	पंछीरा (इंडियन स्क्रीमर)
सीकर	शाहीन
सिरोही	जंगली मुर्गी
डूंगरपुर	जंगली धोक
टोंक	हंस
हनुमानगढ़	छोटा किलकिल
उदयपुर	बिज्जू
जैसलमेर	गोडावण
जयपुर	चीतल

- कैलाश सांखला को **'टाइगर मैन ऑफ इंडिया'** कहा जाता है। यह जोधपुर निवासी है तथा राजस्थान में **'बाघ परियोजनाओं के जन्मदाता'** के रूप में जाने जाते है। इनके द्वारा **'दा टाइगर'** एवं **'दा रिर्टन ऑफ टाईगर'** नामक पुस्तकें लिखी गई है।

प्रमुख दिवस –

- रामसर दिवस – 2 फरवरी
- जीव जन्तु पखवाड़ा – 14–31 जनवरी
- वन्य जीव सप्ताह – 1–7 अक्टूबर

प्रमुख वन्य जीव संरक्षण अधिनियम –

1972 – वन्य जीव संरक्षण अधिनियम
1973 – बाघ संरक्षण अधिनियम
1975 – मगरमच्छ अधिनियम
1980/88 – वन सरंक्षण अधिनियम
1986 – पर्यावरण संरक्षण अधिनियम
1992 – हाथी संरक्षण अधिनियम
2002 – जैव विविधता संरक्षण अधिनियम
2009 – गांगेय सूस संरक्षण अधिनियम
2014 – ऊँट संरक्षण अधिनियम

9 राजस्थान : पशुधन एवं डेयरी विकास

- राजस्थान की प्राकृतिक परस्थितियां जहां एक ओर कृषि के लिए अपेक्षाकृत प्रतिकूल रही है, वही पशुपालन के लिए अनुकूल है। सम्पूर्ण पश्चिमी राजस्थान में पशुपालन मुख्य उद्यम रहा है और आज भी आजीविका का प्रमुख साधन है।
- राजस्थान पशुधन की दृष्टि से **समृद्ध** है।
- राजस्थान में पशुओं का वितरण असमान है यद्यपि राज्य में सभी जिलों में पशु पर्याप्त है।
- भारत में **प्रथम पशुगणना** दिसम्बर **1919 से अप्रैल 1920** के मध्य हुई थी।
- स्वतंत्रता के पश्चात पहली बार **1951** में पशुगणना की गई।
- **राज्य पशुपालन विभाग** की स्थापना - 1957 ई. में की गई।
- 18वीं पशुगणना (2007) **पहली बार नस्ल के आधार पर** की गयी जनगणना थी। 19वीं पशुगणना 2012 में हुई।

20वीं पशुगणना - 16 अक्टूबर 2019

- 20वीं पशुगणना 1 अक्टूबर, 2018 से ऑनलाइन माध्यम से की गई थी। इसके गणना के आंकड़े 16 अक्टूबर, 2019 को जारी किये गये।
- राजस्थान में पशु गणना का कार्य **राजस्व मंडल अजमेर** में स्थापित पशुगणना प्रकोष्ठ द्वारा करवाया जाता है। यह **प्रति 5 वर्ष** बाद किया जाता है।
- देश में पशुधन की दृष्टि से राजस्थान का स्थान - **द्वितीय स्थान** (कुल पशुधन का **10.60%** राजस्थान में है।)
- **राजस्थान का ऊँट, बकरी, गधों में प्रथम स्थान है तथा कुल पशु सम्पदा और भैंस वंश में दूसरे स्थान पर है।**
- पशुगणना 2012 में कुल पशुधन - 577 लाख था।
- **पशुगणना 2019 में राजस्थान में कुल पशुधन - 568 लाख है। (2012 की तुलना में 1.66 प्रतिशत की कमी)**
- राजस्थान में पशुओं में सर्वाधिक प्रतिशत -

  बकरियाँ - 36.6 प्रतिशत
  गाय - 24.4 प्रतिशत
  भैंस - 24.1 प्रतिशत
  भेड़ - 13.9 प्रतिशत

- 20वीं पशुगणना के अनुसार राज्य में पशुओं का घटताक्रम - बकरी > गाय > भैंस > भेड़ > ऊँट
- राज्य की सकल घरेलू उत्पाद (GSDP) में **10% योगदान** पशुपालन का है।
- **राजस्थान का पशु घनत्त्व 166 प्रति वर्ग किमी. है। (20वीं पशुगणना)**
- प्रति हजार जनसंख्या पर पशु संख्या - 828

20वीं पशुगणना-2019 (एक नजर में)

क्र.सं.	पशु का नाम	संख्या (लाखों में) 2019	भारत में राजस्थान का स्थान	भारत का प्रतिशत	राजस्थान में सर्वाधिक वाला जिला	राजस्थान में न्यूनतम वाला जिला	पशु गणना 2012 की तुलना में 2019 में वृद्धि
1.	गौवंश	139.12	**6वाँ**	7.23%	बीकानेर	धौलपुर	4.41%
2.	भैंस	136.93	**दूसरा**	12.47%	जयपुर	जैसलमेर	5.53%
3.	भेड़	79.04	**चौथा**	10.64%	बाड़मेर	बांसवाड़ा	-12.95%
4.	बकरी	208.4	**प्रथम**	14.00%	बाड़मेर	धौलपुर	-3.81%
5.	घोड़े	0.34	**तीसरा**	9.84%	जालौर	डूँगरपुर	-10.85%
6.	खच्चर	0.01	**9वाँ**	1.59%	अलवर	टोंक	-60.33%
7.	गधे	0.23	**प्रथम**	18.91%	बाड़मेर	टोंक	-71.31%
8.	ऊँट	2.13	**प्रथम**	84.43%	जैसलमेर	प्रतापगढ़	-34.69%
9.	सुअर	1.55	**17वाँ**	1.71%	जयपुर	डूँगरपुर	-34.87%
10.	मूर्गियाँ	146.23	**17वाँ**	1.72%	-	-	82.23%

बालोतरा, बाड़मेर, पाली, नागौर, सिरोही, सांचौर व जालौर में पायी जाती है।

कांकरेज गाय प्रजनन केन्द्र- चौहटन (बाड़मेर)

2. **थारपारकर(थारी)/मालानी** - इसका मूल स्थान मालानी या मालाणी क्षेत्र (बाड़मेर) है।

जैसलमेर, बालोतरा, बाड़मेर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, सांचौर, जालौर में पायी जाती है। सर्वाधिक **रोग प्रतिरोधक क्षमता** वाली नस्ल है। इसे '**थारी**' भी कहते है।

मालाणी की सर्वाधिक खरीद-फरोख्त मल्लीनाथ पशु मेला, तिलवाड़ा (बालोतरा) में होती है।

थारपारकर गाय प्रजनन केन्द्र - चांदन (जैसलमेर)

3. **राठी - राजस्थान की कामधेनू कहलाती है।**

यह राजस्थान में गाय की सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। यह लालसिन्धी व साहीवाल की मिश्रित नस्ल है।

राठी का मूल स्थान - राठ क्षेत्र (उत्तर पूर्वी राजस्थान)

यह गाय की सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है।

अनुपगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, चूरू में सर्वाधिक पायी जाती है।

राठी गाय प्रजनन केन्द्र - नोहर (हनुमानगढ़)

4. **हरियाणवी** - राजस्थान के सर्वाधिक भाग में पायी जाने वाली नस्ल है। मुख्यत: हरियाणा के सीमावर्ती जिलों में पायी जाती है।

हरियाणवी गाय प्रजनन केन्द्र - कुम्हेर (भरतपुर)

5. **सांचौरी** - जालौर व सिरोही में सर्वाधिक पायी जाती है। कांकरेज से मिलती जुलती नस्ल है। सांचोरी गाय प्रजनन केन्द्र - सांचौर

6. **मालवी** - उत्पति स्थल - मालव प्रदेश (मध्यप्रदेश)

जिले - झालावाड़, बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, कोटा।

इसकी टांगे छोटी व मजबूत होती है।

चन्द्रभागा व गोमती सागर पशु मेले मालवी नस्ल की बिक्री हेतु प्रसिद्ध हैं। यह मुख्यत: भारवाही नस्ल है।

मालवी गाय प्रजनन केन्द्र - डग (झालावाड़)

7. **नागौरी** - नागौर, उ.पू. जोधपुर, नोखा (बीकानेर), रूपनगढ़ (अजमेर)
उत्पति स्थल- **सुहालक प्रदेश (नागौर)**

नागौरी नस्ल के बैल अति उत्तम किस्म के होते हैं। इस नस्ल की गाय कम दूध देती है।

नागौरी नस्ल के बैल कृषि कार्य के लिये सर्वोत्तम होते है।

नागौरी गाय प्रजनन केन्द्र - नागौर

8. **गिर** - अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, शाहपुरा व भीलवाड़ा।

मूल रूप से गुजरात के गिर (सौराष्ट्र) की नस्ल है। यह गाय की चितकबरी नस्ल है। यह द्विप्रयोजनीय नस्ल है। इसे अजमेर में **अजमेरा** तथा शेष राजस्थान में **रैंडा** कहते है।

गिर बछड़ा पालन केन्द्र - रामसर (अजमेर)

9. **मेवाती/कोठी** - अलवर, भरतपुर, डीग में।

मेवाती गाय प्रजनन केन्द्र- बस्सी (जयपुर ग्रामीण), हल जोतने व बोझा ढ़ोने हेतु उपयुक्त नस्ल है।

10. **साहिवाल नस्ल** - यह मूलत: पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त की नस्ल है। राजस्थान के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों में पायी जाती है।

राजस्थान में पाई जाने वाली कुछ विदेशी नस्लें -

1. **जर्सी** - मूलत: अमेरिका की नस्ल है, मध्य व पूर्वी राजस्थान में पायी जाती है। इसका कद छोटा होता है। इसके दुध में फैट की मात्रा कम होती है।

2. **हॉलिस्टिन फ्रिजियन** - मूलत: हॉलैण्ड/नीदरलैण्ड की नस्ल है। मध्य व पूर्वी राजस्थान में पायी जाती है। गायों में सर्वाधिक दूध देने वाली नस्ल है। राजस्थान में डेयरी व्यवसाय के लिये सर्वाधिक यही नस्ल पाली जाती है।

3. **स्विस ब्राउन** - मूलत: स्विट्जरलैण्ड की नस्ल है, चमड़े के लिए विश्व प्रसिद्ध है। राजस्थान में इसकी संख्या नगण्य है।

4. **रेड डेन** - मूलत: डेनमार्क की नस्ल है। राजस्थान में इसकी संख्या नगण्य है।

संस्थाएँ -

- राजस्थान **गौसेवा संघ** अजमेर में है।
- राजस्थान **गो सेवा आयोग** का गठन **1995** में जयपुर में किया गया था।
- राज्य में **गोपालन विभाग** की स्थापना 13 मार्च, 2014 में की गई। (अब इसका नाम बदलकर गोपालन निदेशालय कर दिया है।)
- राजस्थान का प्रथम **गौ अभयारण्य नापासर (बीकानेर)** में बनाया जाना प्रस्तावित है।
- देश का पहला गौमूत्र रिफाईनरी बैंक - सांचौर (3 मई, 2015)
- राज्य की सबसे बड़ी गौशाला आनन्दवन, पथमेड़ा (सांचौर) में स्थित है।
- राजस्थान पिंजरापोल गौशाला संघ राज्य की गौशालाओं की शीर्ष संस्था है।
- राष्ट्रीय कामधेनु विश्वविद्यालय - पथमेड़ा (सांचौर)
- गौमुत्र से आर्गेनिक फिनाईल बनाने के लिए राज्य का पहला संयंत्र हींगोनिया गौशाला (जयपुर)

10 राजस्थान : कृषि एवं कृषि जलवायु प्रदेश

- भारतीय अर्थव्यवस्था की तरह राजस्थान की अर्थव्यवस्था भी मूलत: कृषि पर निर्भर है। राज्य के कुछ भौगोलिक क्षेत्रफल में से आधा कृषि उपयोग में आता है। यद्यपि अन्य राज्यों की तुलना में यहां कृषि की आदर्श दशाएँ उपलब्ध नहीं हैं फिर भी प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों में यहां कृषि का पर्याप्त विकास हुआ है। इसमें यहां की सिंचाई सुविधाओं में विस्तार की महत्ती भूमिका रही है।
- **राजस्थान के सकल मूल्य वर्धन (GSVA) में कृषि व सम्बद्ध क्षेत्रों का योगदान**-
  1. स्थिर कीमतों पर **28.85%**
  2. प्रचलित कीमतो पर **28.95%**
- राजस्थान की अर्थव्यवस्था में कृषि व सम्बद्ध गतिविधियों का GSVA में क्षेत्रवार योगदान -

विवरण	फसल क्षेत्र	पशुधन क्षेत्र	वानिकी क्षेत्र	मत्स्य क्षेत्र
स्थिर मूल्यों पर	13.20%	12.32%	2.86%	0.12%
प्रचलित मूल्यों पर	13.32%	13.44%	2.09%	0.11%

राजस्थान की कृषि की विशेषताएं

1. मानसून पर निर्भरता
2. खाद्यान्न फसलों की अधिकता
3. जीविकोपार्जन का साधन
4. सिंचाई के साधनों की कमी
5. मानवश्रम का ज्यादा उपयोग
6. नवीन कृषि तकनीकों व प्रौद्योगिकी का कम उपयोग
7. कृषि जोतो का बड़ा आकार
8. मिश्रित कृषि

10वीं कृषि गणना (2015-16)

- कृषि गणना भारत में हर 5 वर्ष में कृषि एवं सहकारिता विभाग द्वारा की जाती है। वर्तमान में 2015-16 की कृषि गणना भारत की 10वीं कृषि गणना थी। (2015-16 के बाद कृषि गणना नहीं हुई है)
- कृषि गणना की संदर्भ अवधि जून-जुलाई है।
- राजस्थान के कुल कृषित क्षेत्रफल का 32 प्रतिशत भाग ही सिंचित क्षेत्र है।
- राजस्थान में **औसत कृषि जोत 2.73 हैक्टेयर** है। जबकि भारत में औसत कृषि जोत 1.41 हैक्टेयर है।
- भारत के कुल कृषि योग्य भूमि (कृषित क्षेत्रफल) में राजस्थान का हिस्सा 13.88% है।
- **राजस्थान में कृषि जोतों का सबसे बड़ा औसत आकार बाड़मेर जिले में जबकि कृषि जोतों का सबसे छोटा औसत आकार डूंगरपुर जिले में पाया जाता है।**
- देश में कृषि जोतों की दृष्टि से राजस्थान का स्थान देश में 8वाँ है।
- राजस्थान में कुल कृषि जोतों का क्षेत्रफल 208.73 लाख हैक्टेयर है।
- राजस्थान में कुल कृषि जोतों की संख्या 76.55 लाख है। जिसमें से कुल पुरूष जोतो की संख्सा 68.8 लाख है।
- **महिला जोत धारक** -
  (i) कुल महिला जोत का क्षेत्रफल - 16.55 लाख हैक्टेयर (गत 5 वर्षों में 24.44% वृद्धि)
  (ii) कुल महिला जोतों की संख्या - 7.75 लाख (गत 5 वर्षों में 41.94 प्रतिशत वृद्धि)
  (iii) औसत महिला जोत का क्षेत्रफल - 2.13 हैक्टेयर
- राजस्थान में शुद्ध बोया जाने वाला क्षेत्रफल 179.03 लाख हैक्टेयर (52.22 प्रतिशत) है।
- राजस्थान में कृषि का बोया जाने वाला सर्वाधिक क्षेत्रफल बाड़मेर व द्वितीय सर्वाधिक क्षेत्रफल बीकानेर में है।
- राजस्थान में कृषि का बोया जाने वाला न्यूनतम क्षेत्रफल राजसमंद व द्वितीय न्यूनतम क्षेत्रफल डूंगरपुर में है।
- राजस्थान में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्रफल वाला जिला गंगानगर जबकि न्यूनतम सिंचित क्षेत्रफल वाला जिला राजसमंद है।
- जिले के कुल कृषि क्षेत्र के आधार पर सर्वाधिक सिंचित प्रतिशत वाला जिला गंगानगर (84.91प्रतिशत) जबकि न्यूनतम सिंचित प्रतिशत वाला जिला चूरू (20.45 प्रतिशत) है।
- राजस्थान में सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र वाली फसलें क्रमश: गेहूं, राई, सरसों, चना, धनिया, कपास है।

◈ **राजस्थान में भू-उपयोग** – राज्य का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 342.87 लाख हैक्टेयर है।

राजस्थान में भू उपयोग विवरण

भूमि का नाम	प्रतिशत
वानिकी	8.08%
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	52.34%
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग	5.86%
ऊसर/व्यर्थ भूमि तथा कृषि के अयोग्य भूमि	6.91%
स्थायी चारागाह तथा अन्य गोचर भूमि	4.86%
वृक्षों के झुण्ड तथा बाग	0.09%
बंजर भूमि	10.87%
अन्य चालू पड़त भूमि	6.10%
चालू पड़त भूमि	4.89%

◈ राजस्थान में सर्वाधिक व्यर्थ व बंजर भूमि वाला जिला जैसलमेर जबकि न्यूनतम व्यर्थ व बंजर भूमि वाला जिला – हनुमानगढ़ है।

◈ सर्वाधिक गोचर और चारागाह भूमि वाला जिला बाड़मेर जबकि न्यूनतम गोचर और चारागाह भूमि वाला जिला गंगानगर हैं।

◈ सर्वाधिक खाद्यान्न फसलें व न्यूनतम व्यापारिक फसलें बोने वाले जिले क्रमशः डूंगरपुर, बाँसवाड़ा है।

◈ न्यूनतम खाद्यान्न फसलें व अधिकतम व्यापारिक फसलें बोने वाला जिला – गंगानगर

◈ राजस्थान में खरीफ फसलों में सर्वाधिक क्षेत्र बाजरा का है जबकि रबी फसलों में सर्वाधिक क्षेत्र गेंहू का है।

◈ सर्वाधिक पड़त/परती भूमि वाला जिला जोधपुर जबकि सर्वाधिक लवणीय भूमि वाला जिला पाली है।

◈ न्यूनतम पड़त/परती भूमि वाला जिला – प्रतापगढ़

◈ हरी सब्जियों की दृष्टि से उत्पादन में प्रथम स्थान – सीकर

◈ समग्र फलों की दृष्टि से उत्पादन में प्रथम स्थान – झालावाड़

◈ मादक पदार्थों की दृष्टि से उत्पादन में प्रथम स्थान – जालौर

◈ देश में मसालों उत्पादन में राजस्थान का स्थान – द्वितीय

◈ बीजीय मसालों में राजस्थान का स्थान – प्रथम

◈ सुगंधित पुष्प व औषधीय मसालों के उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है।

◈ तिलहन में खरीफ फसलों में मूंगफली, तिल, सोयाबीन, अरण्डी तथा रबी फसलों में राई, सरसों, तारामीरा, अलसी सम्मिलित है।

कृषि के प्रकार

1. **मिश्रित कृषि** – कृषि के साथ-साथ पशुपालन
2. **बारानी कृषि** – असिंचित क्षेत्र में की जाने वाली कृषि, जो पूर्णतः वर्षा पर आधारित हो बारानी कृषि कहलाती है। यह 2 प्रकार की होती है –

   (i) शुष्क कृषि – जैसलमेर, बीकानेर में।

   (ii) आर्द्र कृषि – बारां, झालावाड़, कोटा में।
3. **मोनो कल्चर** – एक क्षेत्र विशेष में एक वर्ष में एक फसल प्राप्त करना।
4. **ड्यूओ कल्चर** – एक वर्ष में 2 फसल प्राप्त करना।
5. **ओलीगो कल्चर** – एक वर्ष में 3 फसल प्राप्त करना।
6. **रिले कल्चर**– एक वर्ष में 4 फसल प्राप्त करना।
7. **ट्रक कृषि** – प्रशीतक गाड़ियों द्वारा एक दिन में फल-सब्जियों को बाजार तक पहुँचाना।
8. **स्थानांतरित कृषि** – राजस्थान में इस कृषि को वालरा कहते हैं।

◈ राजस्थान के दक्षिणी भाग में आदिवासी बाहुल क्षेत्रों में सर्वाधिक स्थानान्तरित कृषि की जाती है, राजस्थान में सर्वाधिक स्थानान्तरित कृषि करने वाली जनजाति भील हैं।

◈ **वालरा** – राजस्थान में गरासियों द्वारा की जाने वाली स्थानान्तरित कृषि।

◈ **चिमाता** – भीलों द्वारा पहाड़ी जंगलो को जलाकर की जाने वाली स्थानान्तरित कृषि।

◈ **दजिया** – भीलों द्वारा मैदानी भागों को जलाकर की जाने वाली कृषि दजिया कहलाती है।

कृषि फसलों का वर्गीकरण

(A) मौसम के आधार पर –

1. **खरीफ** –

   उपनाम – **वर्षाकालीन/स्यालू/सावणू**

   जून-जुलाई में बोयी जाती है, सितम्बर-अक्टूबर में (दीपावली पर) कटाई होती है। यह वर्षाकाल की कृषि है जो दक्षिणी पश्चिमी मानसून पर निर्भर रहती है।

   फसलें – चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, कपास, गन्ना, मूंगफली, सोयाबीन, अरण्डी, तिल, अरहर, उड़द, मूंग, मोठ, चवला, लोबिया, ग्वार, चारा आदि।

2. **रबी** –

   उपनाम – **शीतकालीन/उनालू**

   अक्टूबर-नवम्बर में बोयी जाती है, मार्च-अप्रैल में (होली पर) कटाई होती है।

- राजस्थान में कुल कृषि मंडियाँ – 154
- सर्वाधिक कृषि मंडियाँ – गंगानगर (10)
- न्यूनतम कृषि मंडियाँ – जैसलमेर, धौलपुर, सिरोही, राजसंमद (प्रत्येक में 1 मंडी)
- राज्य की सबसे बड़ी पुष्प मंडी – मुहाना मंडी, जयपुर

राजस्थान की विशिष्ट कृषि मंडियाँ

किनू व माल्टा मंडी	गंगानगर
गाजर विशिष्ट मंडी	साधुवाली (गंगानगर)
प्याज विशिष्ट मंडी	रसीदपुरा (सीकर), अलवर
टमाटर मंडी	बस्सी (जयपुर ग्रामीण)
मटर मंडी	बसेड़ी (जयपुर ग्रामीण)
टिण्डा मंडी	शाहपुरा (जयपुर ग्रामीण)
आंवला मंडी	चौमु (जयपुर ग्रामीण)
अमरुद मंडी	सवाईमाधोपुर
मिर्च मंडी	टोंक
धनिया मंडी	रामगंज (कोटा)
लहसून मंडी	छीपाबड़ौद (बारां)
संतरा मंडी	भवानी मंडी (झालावाड़)
अश्वगंधा मंडी	झालरापाटन (झालावाड़)
मक्का विशिष्ट मंडी	निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
अजवायन मंडी	कपासन (चित्तौड़गढ़)
ईसबगोल मंडी	भीनमाल (जालौर)
जीरा विशिष्ट मंडी	बाड़मेर
जीरा मंडी	मेड़ता सिटी (नागौर) भदवासिया (जोधपुर)
मेहन्दी मंडी	सोजत (पाली)
सोनामुखी मंडी	सोजत (पाली)
फूल मंडी	पुष्कर (अजमेर)
मुंगफली मंडी	बीकानेर
दलहन विशिष्ट मंडी	मदनगंज (अजमेर)
लघु वन उपज मंडी	सवीना (उदयपुर)
हर्बल मंडी	उदयपुर (आयुर्वेद औषधियों के संरक्षण, संवर्धन एवं विपणन हेतु)
ज्योतिबा फुले कृषि उपज मंडी	आगणवा (जोधपुर)
अनार मंडी	सायला (जालौर)
सौंफ विशिष्ट मंडी	बिलाड़ा (जोधपुर ग्रामीण)

महत्त्वपूर्ण कृषि क्रांतियाँ

गुलाबी क्रांति	प्याज, औषधि व झींगा मछली का उत्पादन
सिल्वर (रजत) क्रांति	अण्डा उत्पादन
सफेद क्रांति/ऑपरेशन फ्लड	दुग्ध उत्पादन
हरित क्रांति	खाद्यान्न उत्पादन
भूरी क्रांति	खाद्यान्न प्रसंस्करण व उर्वरक उत्पादन
बादामी क्रांति	मसालों के उत्पादन
पीली क्रांति	तिलहन उत्पादन/सरसों उत्पादन
नीली क्रांति	मत्स्य पालन
लाल क्रांति	माँस एवं टमाटर उत्पादन
गोल क्रांति	आलू उत्पादन
इन्द्रधनुषी क्रांति	सभी क्रांतियो पर निगरानी हेतु नई राष्ट्रीय कृषि नीति 2008 के तहत
प्रोटीन क्रांति	दहलन उत्पादन
खाकी क्रांति	चमड़ा उत्पादन से
सुनहरी क्रांति	फूल, सब्जी व बागवानी उत्पादन
स्वर्णिम/गोल्डन फाइबर क्रांति	जूट उत्पादन
सिल्वर फाइबर क्रांति	कपास उत्पादन
सेफ्रोन क्रांति	केसर उत्पादन

कृषि के वैज्ञानिक प्रकार

विटी कल्चर	अंगूरो का व्यापारिक स्तर पर उत्पादन/द्राक्ष कृषि
पिसी कल्चर	व्यावसायिक स्तर पर मछली पालन
एपीकल्चर	मधुमक्खी पालन
मेरी कल्चर	व्यावसायिक उद्देश्य से समुद्री जीव उत्पादन
फ्लोरी कल्चर	फूलों की खेती
हार्टी कल्चर	बागवानी एवं व्यावसायिक स्तर पर फलों की कृषि
वर्मी कल्चर	केंचुए से खाद उत्पादन (वर्मी कम्पोस्ट)
आर्बोरी कल्चर	वृक्षों व झाड़ियों की कृषि
ओलेरी कल्चर	सब्जी उत्पादन
सेरी कल्चर	रेशम कीट पालन व रेशम उत्पादन
सिल्वी कल्चर	वनों के संरक्षण व संवर्द्धन की क्रिया/वनों की कृषि
हाईड्रोकल्चर	पानी में बिना मिट्टी की कृषि
ओलिव कल्चर	जैतुन की कृषि
ओलिगो कल्चर	जमीन पर फैलने वाली बेलों की कृषि

11 राजस्थान : जल संसाधन एवं जल संरक्षण

◈ राजस्थान जल संसाधनों की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा राज्य है। भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य होने के बावजूद जल संसाधन की मात्रा केवल **1.16 प्रतिशत** ही पाई जाती है।

◈ भूमिगत जल से राजस्थान में 90 प्रतिशत पेयजल के लिए तथा 73 प्रतिशत सिंचाई के लिए आपूर्ति होती है।

◈ जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा जीवन-शैली में परिवर्तन के परिणामस्वरूप पानी का संकट गहराता जा रहा है जिससे प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता कम होती जा रही है।

◈ राजस्थान में **वर्षा की कमी, अनियमितता, असामयिक एवं खण्ड वृष्टि से सतही जल की उपलब्धता काफी कम है।**

◈ सतही जल का ज्यादातर विस्तार दक्षिणी एवं दक्षिणी-पूर्वी भाग में है, जहाँ चम्बल एवं बनास नदियों का प्रवाह तंत्र फैला है।

◈ पश्चिमी मध्य राजस्थान में सतही जल काफी कम है क्योंकि यहाँ नदियों की संख्या नगण्य है। अत्यधिक तापमान एवं कम आर्द्रता के कारण वाष्पीकरण सतही जल की मात्रा को और घटा देता है।

◈ राजस्थान में उपलब्ध कुल जल संसाधन को दो भागों में विभक्त किया गया है-

(1) सतही जल संसाधन (Surface Water Resources)

(2) भूजल संसाधन (Ground Water Resources)

(1)सतही जल संसाधन (Surface Water Resources) -

- राजस्थान में सदावाहिनी नदियाँ कम हैं तथा अधिकांश क्षेत्रफल वर्षा पोषित क्षेत्र होने के कारण सतही जल की उपलब्धता कम है।
- सतही जल का मुख्य वितरण दक्षिणी तथा दक्षिणी-पूर्वी भाग में है जहाँ चम्बल तथा बनास नदियों के जलग्रहण के कारण सतही जल की अधिकता पायी जाती है। इसके अलावा यहाँ कुछ झीलों व नहरों में भी सतही जल मिलता है।
- पश्चिमी तथा उत्तर पश्चिमी राजस्थान में सतही जल की कमी पायी जाती है। यहाँ लूनी एवं इसकी सहायक नदियों का प्रवाह क्षेत्र है जिनमें वर्षाकालिक प्रवाह पाया जाता है।
- दक्षिण राजस्थान में माही, पश्चिमी बनास एवं साबरमती नदियों में यद्यपि जल का प्रवाह वर्ष के अधिकांश समय में रहता है, परन्तु मुख्य प्रवाह इनमें भी वर्षाकाल में ही रहता है। अत: यहां अपेक्षाकृत सतही जल की उपलब्धता औसत रहती है।
- सतही जल की औसत उपलब्धता की दृष्टि से चम्बल तथा बनास का राज्य में प्रथम एवं द्वितीय स्थान है।

(2) भूजल संसाधन (Ground Water Resources)

- राजस्थान में कुल भूजल की उपलब्धता 11.256 बिलियन घन मीटर (BCM) है जिससे राज्य के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों की 91 प्रतिशत घरेलू जल की आवश्यकतायें पूरी होती है। शेष 9 प्रतिशत घरेलू आवश्यकता की पूर्ति सतही जल से होती है।
- सतही जल के स्रोत नहरी तंत्र (IGNP) मुख्यत: 1 GNP माही, चम्बल, बीसलपुर जलाशय तथा नर्मदा नहर से प्राप्त होने वाले जल तक ही सीमित है। इसलिए घटती गुणवत्ता एवं मात्रा के बाद भी राज्य में भूजल ही मुख्य आवश्यकता पूरी करता है।
- सिंचाई के लिए एवं उद्योगों में आवश्यक जल की माँग लगभग 77 प्रतिशत भूजल से पूरी होती है।

भूजल की गुणवत्ता -

◈ प्रदेशों में भूजल के अधिक दोहन एवं सतही जल की कमी के अतिरिक्त जल की गुणवत्ता भी एक बड़ी समस्या है। भूमिगत जल की गहराई बढ़ने तथा दोहन से जल की गुणवत्ता में निरन्तर कमी आती जा रही है।

◈ जल में **फ्लोराइड, नाइट्रेट** एवं **घुलनशील लवण (TDS)** की मात्रा में निरन्तर वृद्धि से गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है तथा उसका मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव दिखाई दे रहा है। भूजल की गुणवत्ता में कमी ज्यादातर टोंक, नागौर, चूरू, बाड़मेर, पाली, सिरोही, जालौर एवं राजसमन्द में अधिक है। जहाँ फ्लोराइड, नाइट्रेट एवं TDS की मात्रा निर्धारित सीमा से अधिक पाई जाती है।

राजस्थान में भूजल गुणवत्ता

(Groundwater Quality in Rajasthan)

संवर्ग	राजस्थान में प्रमुख प्रभावित
केवल फ्लोराइड	जयपुर, टोंक, नागौर, अजमेर, भीलवाड़ा, सिरोही और पाली
केवल लवणता	चूरू, भरतपुर, बाड़मेर, झुंझुनूँ, नागौर और अजमेर ।
केवल नाइट्रेट	जयपुर, नागौर, बाड़मेर, उदयपुर, जोधपुर, चूरू, अलवर और टोंक।

◈ इसका मुख्य कार्य सरकारी विभागों, स्वयंसेवी संस्थाओं एवं शोध संस्थाओं में सहयोग स्थापित करना है।

सतगुरु वाटर डवलपमेंट फाउन्डेशन

◈ इसकी स्थापना **1974** में **दाहोद (गुजरात)** में हुई थी।

◈ यह एक स्वयंसेवी संस्थान है जिसका कार्य क्षेत्र गुजरात एवं राजस्थान में है। इसका मुख्य उद्देश्य जन सहभागिता, पूर्ण जल संसाधनों का विकास एवं समुदाय को आवश्यक सेवाएँ उपलब्ध कराना है तथा **माही नदी** क्षेत्र इस संस्था में वाटरसेड कार्यों, वर्षा जल संरक्षण एवं मेसनरी कार्यों में सहयोग करना है।

सम्भव ट्रस्ट (Sambhav Trust)

◈ यह राजस्थान के **बाड़मेर एवं जैसलमेर** जिलों में कार्यरत ट्रस्ट है जो स्थानीय लोगों के साथ जल संसाधनों के विकास पर कार्य करता है।

सरकारी संस्थान -

◈ राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड - **जोधपुर**

- स्थापना - 1950 भारत सरकार द्वारा, बाद में 1955 में राजस्थान सरकार को सौंप दिया गया।
- 1978 में इसका नाम **'राजस्थान भू-जल विभाग'** कर दिया गया।

◈ राजस्थान जल विकास लिमिटेड - जयपुर (स्थापना-1984)

◈ सिंचाई प्रबंधन व प्रशिक्षण संस्थान (IMTI) - कोटा

◈ हाइड्रोलोजी एण्ड वाटर मैनेजमेन्ट इंस्टीट्यूट - बीकानेर

वेल्स ऑफ इंडिया (Wells of India)

◈ **यू.के.** आधारित चेरीटेबल संस्था है जिसका कार्यालय **उदयपुर** में है। यह संस्था स्थानीय लोगों एवं गैर-सरकारी व संस्थाओं के सहयोग से कार्य करती है।

◈ इसकी स्थापना 1987 में हुई थी। इसका कार्य क्षेत्र अरावली पर्वत, थार मरुस्थल तथा सांभर झील है।

राजस्थान राज्य जल नीति-2010

◈ राजस्थान राज्य जल नीति 17 फरवरी, 2010 में लागू की गई। इस नीति में जल क्षेत्र की निम्न समस्याओं पर चर्चा की गई -

1. जल की माँग एवं आपूर्ति में बढ़ता असन्तुलन
2. जल की उपलब्धता की अनिश्चितता
3. जल तक पहुँच में असमानता
4. जल संसाधनों की अल्प कार्य दक्षता
5. भूजल संसाधनों का गिरता स्तर एवं जल की गुणवत्ता में गिरावट
6. सेवा में उच्च लागत, लागत की कम वसूली एवं रख-रखाव पर व्यय की कमी
7. उपभोक्ताओं में स्वामित्व का अभाव

◈ **राज्य जल नीति : एक्शन प्लान** -

1. जल आपूर्ति एवं विकास (प्राथमिकता क्रम - पेयजल, घरेलू एवं वाणिज्यिक उपयोग, कृषि, ऊर्जा उत्पादन, पर्यावरण पारिस्थितिकी उपयोगार्थ, उद्योग, अन्य उपयोग)
2. एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन (IWRM)
3. सिंचाई जल
4. जल संसाधन : आधारभूत ढाँचा
5. जल संरक्षण
6. जल गुणवत्ता
7. पर्यावरण
8. जल शुल्क
9. विधिक अधिकार
10. क्षमता सुधार
11. अनुसंधान
12. अनुसंधान
13. राज्य जल नीति एवं कार्ययोजना की मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन

जल संरक्षण

◈ जल संरक्षण से तात्पर्य जल के उचित एंव विवेकपूर्ण उपयोग के साथ-साथ उसे भविष्य के लिए संरक्षित करना है।

◈ राजस्थान जैसे रेगिस्तानी प्रदेश मे जहाँ वर्षा बहुत कम होती है तथा बारहमासी नदियों का अभाव है वहां जल संरक्षण के लिये वर्षों से परम्परागत जल संरक्षण की विधियां उपयोग में ली जा रही है।

◈ पश्चिमी राजस्थान में प्राचीन समय से ही यहां के निवासी टाँका, खडिन, जोहड़ आदि का निर्माण कर वर्षा जल संग्रहण एवं जल सरंक्षण करते हैं।

◈ राजस्थान में पानी के कई परम्परागत स्त्रोत है जैसे - तालाब, नाड़ी, टोबा, झालरा, सागर, सरोवर, आदि। इनके अलावा यहाँ के सेठों - साहूकारों ने भी विभिन्न भागों मे कलात्मक बावड़ियों, कुओं, तालाबों एवं कुण्डों का निर्माण करवाया है।

◈ वर्तमान में **'रूप टॉप जल संचयन'** एवं **'वाटर हार्वेस्टिंग'** तकनीकें जल संचयन के लिये बहुत ज्यादा प्रचलित है।

◈ जल संरक्षण के आधुनिक तरीकों में बांध बनाना सबसे प्रमुख है।

◈ राजस्थान सरकार जल संरक्षण को बढ़ावा देने केलिए किसानों को डिग्गी, फार्म पौंड व जल हौज के निर्माण पर अनुदान देती है।

जल संरक्षण की परम्परागत विधियां एवं तकनीकियाँ

1. **खड़ीन** - खेत के किनारे मिट्टी की पाल बाँधकर वर्षा जल को कृषि भूमि पर संग्रहित करने की एक परम्परागत तकनीक है। खड़ीन वस्तुतः कृषि भूमि होती है जो जैसलमेर जिले में मध्यकाल में

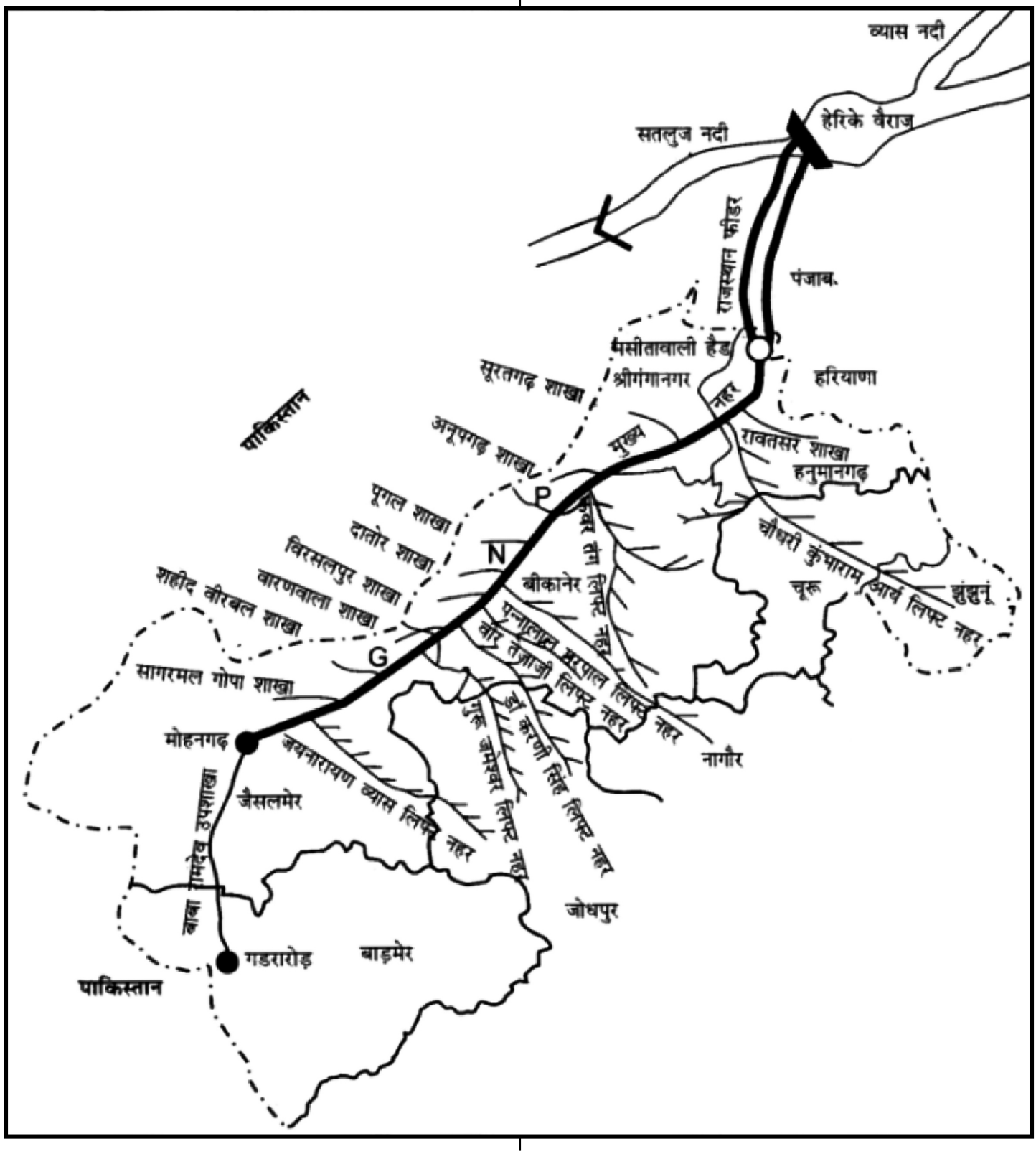

व्यास नदी
हेरिके बैराज
सतलुज नदी
राजस्थान फीडर
पंजाब
मसीतावाली हैड
हरियाणा
सूरतगढ़ शाखा
श्रीगंगानगर
पाकिस्तान
अनूपगढ़ शाखा
मुख्य
नहर
रावतसर शाखा
हनुमानगढ़
P
पूगल शाखा
दातोर शाखा
N
बिरसलपुर शाखा
वारणवाला शाखा
शहीद बीरबल शाखा
बीकानेर
चौधरी कुंभाराम आर्य लिफ्ट नहर
चूरू
झुंझुनूं
G
सागरमल गोपा शाखा
नागौर
मोहनगढ़
जैसलमेर
जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर
जोधपुर
गडरारोड़
बाड़मेर
पाकिस्तान

IGNP की लिफ्ट नहरें

क्र.सं.	पुराना नाम	परिवर्तित नाम	लाभान्वित जिले	विशेष विवरण
1.	नोहर गंधेली साहवा लिफ्ट नहर	चौधरी कुम्भाराम लिफ्ट नहर	हनुमानगढ़, चुरू, बीकानेर, झुंझुनूं, नीम का थाना	• झुंझुनूं को केवल पेयजल मिलता है।
2.	बीकानेर-लूणकरणसर लिफ्ट नहर	कंवरसेन लिफ्ट नहर	बीकानेर, गंगानगर, अनुपगढ़	• IGNP की **सबसे पहले निर्मित लिफ्ट नहर** है व सातों लिफ्ट नहरों में **सबसे लम्बी लिफ्ट नहर** (151.64 कि.मी.) है।
				• बीकानेर की जीवन रेखा
3.	गजनेर लिफ्ट नहर	पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर	बीकानेर, नागौर, डीडवाना-कुचामन	• जायल गांव (नागौर) में डिफ्लोरराइडीकरण पेयजल परियोजना चलाई गई है।
4.	बांगड़सर लिफ्ट नहर	वीर तेजाजी लिफ्ट नहर	बीकानेर	• यह IGNP की **सबसे छोटी लिफ्ट नहर** है।
5.	कोलायत लिफ्ट नहर	डॉ. करणीसिह लिफ्ट नहर	बीकानेर, फलौदी	
6.	फलौदी लिफ्ट नहर	गुरू जम्भेश्वर लिफ्ट नहर	बीकानेर, फलौदी, जैसलमेर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण	
7.	पोकरण लिफ्ट नहर	जयनारायण व्यास लिफ्ट नहर	फलौदी, जैसलमेर	
8.	भैंरूदान चालानी लिफ्ट नहर (प्रस्तावित)			

नोट :

(i) **चौधरी कुम्भाराम लिफ्ट** नहर की सहायक नहरों व वितरिकाओं सहित कुल लम्बाई 666 किमी. है। **यह IGNP की सबसे लम्बी लिफ्ट नहर है।**

ध्यान रहे : बिना सहायक नहरों के सबसे लम्बी लिफ्ट नहर **कंवर सेन** लिफ्ट नहर है।

(ii) कंवर सेन लिफ्ट नहर का उद्घाटन 1968 में तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया द्वारा किया गया था। यह लिफ्ट नहर बिरधवाल हैड (गंगानगर) से निकाली गई है। बीकानेर शहर के पास इसी नहर से बीछवाल और शोभासर जलाशयों का निर्माण किया गया है, जिससे बीकानेर शहर को पेयजल आपूर्ति होती है। इसलिए इसे **'बीकानेर की जीवन रेखा'** कहा जाता है।

◈ **उपनिवेशन :** राजस्थान सरकार में उपनिवेशन विभाग का कार्य इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में कृषि भूमि का विकास एंव आवंटन करना है।

IGNP की पेयजल हेतु लिफ्ट नहर -

1. **कुंवर सेन लिफ्ट नहर** - बीकानेर, गंगानगर में पेयजल आपूर्ति
2. **गंधेली साहवा लिफ्ट नहर** - जर्मनी के सहयोग से **आपणी योजना** शुरू की गई है जिसमें चूरू, हनुमानगढ़, झुंझुनूं, नीम का थाना व सीकर को पेयजल सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है।
3. **राजीव गांधी लिफ्ट नहर** - यह जोधपुर की कायलाना झील में पानी डालती है। इस नहर से जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण व बाड़मेर के कुछ गांवों को पेयजल उपलब्ध करवाया जायेगा। इसका नया नाम राजीव गांधी जलोत्थान नहर रखा गया है इसे **जोधपुर की जीवन रेखा** भी कहा जाता है।
4. **नागौर लिफ्ट नहर** - पन्नालाल बारूपाल लिफ्ट नहर के अन्तिम छोर से 200 क्यूसेक पानी इसके लिये छोड़ा गया है। इस लिफ्ट नहर से नागौर जिले के लगभग 500 गांवों में पेयजल उपलब्ध करवाया जा रहा है।

◈ IGNP का सम्पूर्ण निर्माण 2 चरणों में पूर्ण हुआ है -

1. प्रथम चरण में **हरिके बैराज** से 393 किमी. नहर का निर्माण हुआ जिसमें 204 किमी फीडर नहर तथा मसीतावाली से पूगल (बीकानेर) तक 189 किमी मुख्य नहर शामिल है।
2. द्वितीय चरण में सतासर (पूगल) से मोहनगढ़ (जैसलमेर) तथा 256 किमी मुख्य नहर निर्माण किया गया।

   अब इस नहर को 165 किमी गडरा रोड (बाड़मेर) तक बढ़ाना प्रस्तावित है।

46.	मोरेल बांध	■ यह बांध दौसा और सवाईमाधोपुर की सीमा पर बनास की सहायक नदी मोरेल पर बना है। ■ **यह बांध दौसा और सवाईमाधोपुर जिले की लाइफ लाइन माना जाता है।** ■ जल संसाधन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार मोरेल बांध दौसा में बताया गया है।
47.	मोरा सागर बांध	■ गंगापुर सिटी ■ **इस बांध से पान की खेती हेतु सिंचाई होती है।**
48.	बंध बारेठा बांध	■ बारैठा, बयाना (भरतपुर) में कुकुन्द नदी पर निर्मित है। ■ **इस बांध की आकृति जहाज से मिलती जुलती है।** यह भरतपुर जिले का सबसे बड़ा बांध है तथा इसका पानी बयाना तथा रूपावास तहसीलों में सिंचाई पेयजल के काम आता है। ■ बांध बरैठा के पास पहाड़ी एक महल **'किशन महल'** बना हुआ है।
49.	अजान बांध	■ बाणगंगा एवं गंभीर नदी पर यह बांध भरतपुर में बना है। ■ इसका निर्माण महाराजा सुरजमल द्वारा करवाया गया है। ■ इसका अतिरिक्त पानी घना पक्षी विहार अभयारण्य के लिए छोड़ा जाता है।
50.	बतीसा नाला सिंचाई परियोजना	■ सिरोही में (निर्माणाधीन)
51.	सरजु सागर बांध	■ उदयपुरवाटी (नीम का थाना) के निकट शाकम्भरी की पहाड़ियों में स्थित है। इसे **कोट बांध** भी कहा जाता है।
52.	वागन बांध	■ चित्तौड़गढ़ में
53.	सरेरी बांध	■ भीलवाड़ा में
54.	पबैलपुरा बांध	■ बूंदी में
55.	आलनिया बांध	■ कोटा में
56.	कालीसिल बांध	■ करौली में
57.	कराई बांध	■ बारां
58.	पीपलदा/पीललड़ा लिफ्ट नहर परियोजना	■ सवाईमाधोपुर में चम्बल नदी पर
59.	गोपालपुरा बांध	■ कोटा
60.	सूरवाल बांध	■ सवाईमाधोपुर
61.	हिण्डलोद बांध	■ बारां

-: यह भी जानें :-

- राजस्थान में मिट्टी से बने बांध **पांचना, चाकण, मोरेल, गुढा** एवं **विलास** है।
- पिकअप बांध उस बांध को कहते है जिसके गेट बेसिन में लगे होते है जिससे गेट खुलने के बाद एक बूंद भी पानी भी नहीं रहता।
- **माही बजाज सागर बाँध,** राजस्थान का **सबसे लम्बा बाँध** है।
- **जाखम बांध,** राजस्थान का **सबसे ऊँचा बाँध** है।
- **राणा प्रताप सागर बाँध,** राजस्थान का **सर्वाधिक जल संग्रहण क्षमता वाला बाँध** है।
- **हरिश्चन्द्र सागर बाँध,** राजस्थान का **सर्वाधिक गेटों वाला बाँध** है।
- **कोटा बैराज,** राजस्थान का **सर्वाधिक कैचमेन्ट एरिया वाला बाँध** है।

13 राजस्थान : खनिज संसाधन

(धात्विक एवं अधात्विक खनिज)

- खनिज से तात्पर्य भूमि से खनन क्रिया के द्वारा निकाले गये रासायनिक तथा भौतिक गुणों वाले पदार्थ से होता है।
- खनिज की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता और आर्थिक दृष्टि से गुणवता किसी भी क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिए आधार प्रस्तुत करते है।
- राजस्थान खनिजों की दृष्टि से एक **सम्पन्न राज्य** है।
- राजस्थान में पाये जाने वाले खनिजों की विविधता के कारण इसे **'खनिजों का अजायबघर'/ खनिजों का संग्रहालय** कहा जाता है।
- राजस्थान में लगभग **81 प्रकार** के खनिजों भण्डार, जिसमें से वर्तमान में **58 खनिजों का खनन** किया जा रहा हैं।
- राजस्थान का खनिज विविधता में प्रथम स्थान है।
- **देश में देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।**
- धात्विक एवं अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का योगदान क्रमशः 15% एवं 25% है।
- राज्य की GDP में खनिजों का योगदान 5% है।
- **खनिज भण्डारों की दृष्टि** से राजस्थान का स्थान झारखण्ड के बाद **द्वितीय** है जबकि **खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि** से राज्य का स्थान झारखण्ड एवं मध्यप्रदेश के बाद **तीसरा** है।
- अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का देश में **प्रथम स्थान** है।
- राजस्थान का अलौह धात्विक खनिज में प्रथम जबकि लौह धात्विक खनिज में **चतुर्थ** स्थान है।
- खनिजों की दृष्टि से राज्य की अरावली पहाड़ियाँ तथा दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश सम्पन्न हैं।
- विगत कुछ दशकों से राज्य के पश्चिमी भाग में शक्ति संसाधन/ऊर्जा संसाधन (पेट्रोलिय व प्राकृतिक गैस) के विपुल भण्डार मिले है।
- राजस्थान देश में **सीसा-जस्ता, सेलेनाइट** और **वोलेस्टोनाइट** का एकमात्र उत्पादक राज्य है।
- इसके अलावा निम्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का **एकाधिकार है - वोलस्टोनाइट, जास्पर, सीसा, जस्ता, फ्लोराइट/फ्लोर्सपार, जिप्सम, संगमरमर, एस्बेस्टॉस, घीया-पत्थर, रॉक-फॉस्फेट, सेलेनाइट, तामड़ा/गारनेट, चांदी, कैल्साइट।**
- **निम्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है - बॉलक्ले, फेल्सपार, एस्बेस्टॉस, टंगस्टन, सोपस्टोन, सैण्ड-स्टोन, स्लेटी पत्थर, मुल्तानी मिट्टी आदि।**
- मुख्या रूप से खनिज दो प्रकार के होते है - **धात्विक व अधात्विक**
- धात्विक खनिज आग्नेय चट्टानों/धारवाड़ क्रम की चट्टानों/गौडवाना लैण्ड क्रम की चट्टानों से प्राप्त होते हैं।
- **धात्विक खनिज** शुद्ध रूप से नहीं पाये जाते। यह अयस्क/यौगिक के रूप में मिलते है। उपयोग में लेने से पहले इनको परिष्कृत किया जाता है। उदाहरण लौह अयस्क, मैंगनीज, निकल, कोबाल्ट, तांबा, सीसा-जस्ता, सोना, चांदी, बॉक्साइट, टंगस्टन।
- धात्विक खनिज दो प्रकार के होते है - (i) **लौह धात्विक** - लौहा, मैंग्नीज, क्रोमियम, निकल (ii) **अलौह धात्विक** - बाकि सभी धात्विक खनिज इसमें आते है।
- **अधात्विक खनिजों** को परिष्कृत नहीं किया जाता है इनका उपयोग सीधे ही प्राकृतिक रूप में ही किया जाता है।

  उदाहरण : एस्बेस्टॉस, वोलेस्टोनाइट, फेल्सपार, जिप्सम, अभ्रक, नमक, पोटाश, सल्फर, चूना पत्थर, संगमरमर, बलुआ पत्थर, ऊर्जा/ईधन खनिज आदि।
- अधात्विक खनिजों को **औद्योगिक खनिज** भी कहा जाता है।
- अधात्विक खनिज अवसादी/परतदार चट्टानों में मिलते हैं।

उपयोग के आधार पर खनिजों का वर्गीकरण

1. आण्विक खनिज	2. रासायनिक खनिज	3. बहुमूल्य खनिज	4. ईंधन खनिज	5. उर्वरक खनिज	6. गौण खनिज
यूरेनियम, लिथियम, बेरिलियम, थोरियम, ग्रेफाइट	फ्लोराइट, नमक, चूना-पत्थर, बेराइट	हीरा, पन्ना, तामड़ा	कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस	जिप्सम, रॉक-फॉस्फेट, पोटाश, नाईट्रेट, गंधक पाइराइटस	संगमरमर, ग्रेनाइट बेटोनाइट, स्लेट पत्थर, मुलतानी मिट्टी, घीया पत्थर, कैल्साइट

◈ राज्य में सर्वाधिक लिग्नाइट कोयला भण्डार - बाड़मेर (शीर्ष), बीकानेर (द्वितीय)

◈ **बीकानेर के पलाना में सर्वश्रेष्ठ किस्म का लिग्नाइट कोयला निकलता है।**

◈ राजस्थान में लिग्नाइट खनन का कार्य मुख्य रूप से 'राजस्थान राज्य माइन्स एंड मिनरल्स' (RSMML), नैवली लिग्नाइट कॉपरपोरेशन लिमिटेड (NLC) और बाड़मेर लिग्नाइट माइनिंग कम्पनी लिमिटेड (BLMCL) द्वारा किया जा रहा है।

राजस्थान में लिग्नाइट आधारित विद्युत परियोजनाऐं -

(i) बरसिंहसर परियोजना - बीकानेर

(ii) गिरल परियोजना - बाड़मेर

(iii) भादरेस परियोजना - बाड़मेर

(iv) बीठनोक परियोजना - बीकानेर (निर्माणाधीन)

II. खनिज तेल - परतदार/अवसादी चट्टानों से प्राप्त होता है।

◈ राजस्थान में सर्वप्रथम तेल खोज का कार्य (जायल-नागौर) 1932 में एम. हैरोन ने किया।

◈ 1954 में ONGC द्वारा गुढ़ा मालानी (बाड़मेर) में तेल खोज का कार्य किया गया।

◈ राज्य सरकार द्वारा पेट्रोलियम खनन के 11 पट्टे जारी किये गये है।

◈ राजस्थान के 14 तेल क्षेत्रों से लगभग 1 लाख बैरल प्रतिदिन तेल का उत्पादन होता है।

◈ कच्चे तेल के सर्वाधिक भण्डारों में राजस्थान का स्थान **पांचवा** है।

◈ भारत के कुल पेट्रोलिम उत्पादन में राजस्थान का स्थान **द्वितीय** है।

◈ राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन व भण्डार - बाड़मेर जिले में है।

क्या आप जानते है -

राजस्थान में 4 पेट्रोलीफेरस (पेट्रोलियम संभाव्य) बेसिन है जो 14 जिलों में विस्तृत है।

(i) बाड़मेर-सांचौर बेसिन - बाड़मेर व जालौर जिला (खनन केयर्न एनर्जी व ONGC द्वारा)

नोट : नये जिले के गठन के बाद संभवत: इस बेसिन का विस्तार बाड़मेर, बालोतरा, जालौर व सांचौर जिले में होगा।

(ii) जैसलमेर बेसिन - जैसलमेर जिला (खनन ONGC व PDVSA वेनेजुएला द्वारा)

(iii) बीकानेर नागौर बेसिन - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, गंगानगर, नागौर जिले। (खनन - ऑयल इण्डिया लिमिटेड (OIL) तथा ESSAR/ NAYARA द्वारा)

नोट : इस बेसिन में संभवत: अनुपगढ़ व डीडवाना-कुचामन जिले नये जुड़ सकते है।

(iv) विध्यन बेसिन (हाड़ौती बेसिन) - कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ तथा भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ का कुछ भाग।

नोट : इस बेसिन में शाहपुरा नया जिला जुड़ सकता है।

◈ **गुढ़ामालानी (बाड़मेर)** - यहां विश्व में सबसे कम गहराई पर उत्तम श्रेणी का पेट्रोल मिलता है।

◈ जैसलमेर में बाघेवाला से टावरीवाला तक **भारी तेल** के भण्डार मिले है जिसका PDVSA व OIL द्वारा बाघेवाला में खनन किया जा रहा है।

◈ **बायतु (बालोतरा)** - गैसोलिन की मात्रा अधिक होने से वायुयानों का ईधन मिला है।

-: यह भी जानें :-

विभिन्न कम्पनियों को आवंटित तेल क्षेत्र -

- IOC - जैसलमेर-नागौर क्षेत्र
- एस्सार - श्री गंगानगर
- कैयर्न एनर्जी एण्ड फॉक्स एनर्जी - बाड़मेर-सांचौर
- ONGC - जैसलमेर व विंध्यन बेसिन
- फिनिक्स - जैसलमेर

राजस्थान के तेल एवं गैस क्षेत्र -

- **मंगला (बालोतरा)** - राजस्थान में व्यवसायिक तेल का सर्वप्रथम उत्पादन (2009 में) इसी क्षेत्र से हुआ। यह राज्य में सर्वाधिक तेल उत्पादन वाला क्षेत्र है। यह केयर्न एनर्जी द्वारा खोजा गया था।
- **ऐश्वर्या (बायतु, बालोतरा)** - केयर्न एनर्जी द्वारा खोजा गया, 2013 से तेल उत्पादन शुरू
- **सरस्वती (कौशलु क्षेत्र, बालोतरा)** - खोज कैयर्न एनर्जी द्वारा, तेल उत्पादन शुरू
- **रागेश्वरी (अडेल, बाड़मेर)** - खोज केयर्न एनर्जी द्वारा, गैस का उत्पादन शुरू
- **कामेश्वरी (अड्ेल, बाड़मेर)** - 2021 में तेल का उत्पादन शुरू
- **गुढ़ा (गुढ़ा मालानी, बाड़मेर)** - खोज शैल इण्डिया द्वारा, तेल उत्पादन शुरू
- **विजया व भाग्यम (बाड़मेर)** - 2012 में तेल का उत्पादन शुरू
- **शक्ति** - नागाणा, बालोतरा
- **पूनम** - बीकानेर-नागौर बेसिन में IOC द्वारा खोजा गया तेल क्षेत्र
- **वंदना** -
- **दुर्गा** - बाड़मेर में वेदान्ता ग्रुप द्वारा खोजा गया नवीनतम क्षेत्र
- अन्य तेल क्षेत्रों में तूकाराम, भाग्यम साउथ, गुढा, S-7, NR-3, बाड़मेर हिल, GSV, NC-वेस्ट, ABH, Y2Y चैनल प्रमुख है।

14 राजस्थान : ऊर्जा संसाधन

(नवीकरणीय एवं अनवीकरणीय स्त्रोत)

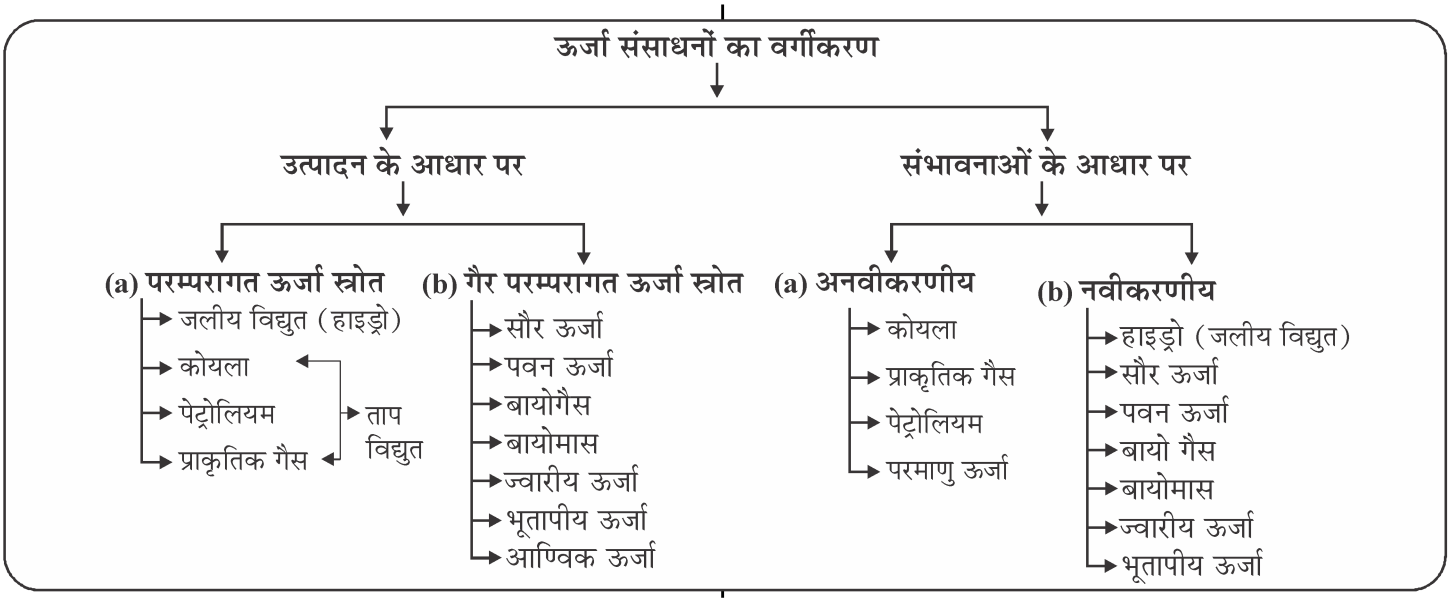

- राजस्थान राज्य के निर्माण के समय (1949 ई.) कुल स्थापित विद्युत क्षमता 13.27 मेगावाट थी। इस समय राजस्थान के सिर्फ 42 शहरों एवं गांवों में ही विद्युतीकरण हुआ था।
- 1 जुलाई, 1957 को **राजस्थान विद्युत मण्डल (RSEB)** की स्थापना की गई थी। बाद में 19 जुलाई, 2000 को इसे पाँच कम्पनियों में विभाजित कर दिया था।
- **राजस्थान विद्युत नियामक आयोग** का गठन 2 जनवरी, 2000 को किया गया।
- राजस्थान में ऊर्जा क्षेत्र को सर्वाधिक प्राथमिकता 12वीं पंचवर्षीय योजना में दी गई थी। उस योजना में कुल राशि का 36.92% व्यय ऊर्जा के क्षेत्र में किया गया था।
- राजस्थान में प्रतिवर्ष, **14 दिसम्बर को ऊर्जा संरक्षण दिवस** मनाया जाता है।
- **राजीव गांधी अक्षय ऊर्जा दिवस 20 अगस्त को मनाया जाता है**
- राज्य में प्रतिव्यक्ति विद्युत उपभोग 1282 मेगावाट (प्रतिवर्ष) है।
- राजस्थान में वर्तमान में अधिष्ठापित विद्युत क्षमता **23487.46 मेगावाट (23.48 गीगावाट)** है। (31 दिसम्बर, 2022 तक)

राज्य में ऊर्जा उत्पादन : एक नजर में

क्र.सं.	विद्युत का प्रकार	क्षमता (मेगावाट)	योगदान (प्रतिशत)	भारत में राजस्थान का स्थान
1.	तापीय विद्युत (कोयला)	13444.39	**57.78 (I)**	**7वाँ**
2.	सौर ऊर्जा	3348.60	**12.73 (III)**	**प्रथम**
3.	पवन ऊर्जा	3730.35	**16.01 (II)**	**चौथा**
4.	जल विद्युत	1805.6	7.53%	**13वाँ**
5.	गैसीय विद्युत	603.50	3.53%	**7वाँ**
6.	परमाणु विद्युत	456.74	1.95%	**5वाँ**
7.	बायोमास	101.95	0.43%	**14वाँ**
	कुल	**23487.46**	**100%**	**तीसरा**

(स्त्रोत : राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2022-23)

- ◈ **सौर ऊर्जा उत्पादन में वर्तमान में राज्य का देश में प्रथम स्थान है।**
- ◈ **विश्व का सबसे बड़ा सोलर पार्क भड़ला (फलौदी)** में स्थित है।
- भड़ला सौलर पार्क चार फेज में निर्मित है

  1st - 65 MW + 2nd - 680 MW + 3rd - 1000 MW + 4th - 500 = 2245 MW (कुल क्षमता)
- ◈ **खींवसर (नागौर)** में राजस्थान की निजी क्षेत्र में पहली और सबसे बड़ी सौर विद्युत परियोजना शुरू की गई है। (**रिलायंस** के द्वारा)
- ◈ राजस्थान में स्थापित अन्य सोलर पार्क - नांदिया कला (जोधपुर ग्रामीण), धुड़सर, फतेहगढ़, (जैसलमेर), नौख (फलौदी), पोकरण सोलर पार्क (जैसलमेर), पूगल (बीकानेर) आदि।
- ◈ धीरू भाई अम्बानी सोलर पावर पार्क - धुड़सर (जैसलमेर)
- ◈ **मथानियां (जोधपुर ग्रामीण) में देश का प्रथम (140 MW) का सौर ऊर्जा सयंत्र स्थापित किया गया।**
- ◈ विश्व की पहली सौर ऊर्जा से संचालित नाव उदयपुर की पिछोला झील में चलाई गई है।
- ◈ प्रथम सौर बिजलीघर - **खींवसर** (नागौर) में
- ◈ नौख (फलौदी) राज्य का पहला गांव है जहाँ सौर ऊर्जा का प्रयोग किया गया है।
- ◈ प्रथम सौर ऊर्जा आधारित **दूरदर्शन रिले केन्द्र** - रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
- ◈ **फतेहसागर झील (उदयपुर)** में **राजस्थान की सबसे बड़ी सौर वेधशाला** स्थापित की गई है। इसके पश्चात मथानिया (जोधपुर ग्रामीण) में दूसरी सौर वैधशाला स्थापित की गई है।
- ◈ राज्य का प्रथम सौर ऊर्जा विद्युतीकृत गाँव जयपुर ग्रामीण का **नया गाँव** है।
- ◈ पहला खारे पानी को मीठे पानी में बदलने का सौर संयंत्र - भालेरी (चूरू)
- ◈ **बालेसर (जोधपुर ग्रामीण)** में राजस्थान का पहला **सौर ऊर्जा आधारित फ्रिज** लगाया गया है।
- ◈ पहला सौर ऊर्जा से संचालित मिल्क चिलिंग प्लांट - भरतपुर में
- ◈ जयपुर ग्रामीण के मनोहरपुरा में राजस्थान का पहला **सौर ऊर्जा से संचालित ATM** लगाया गया है।
- ◈ सौर ऊर्जा से संचालित सबसे बड़ा वाटर हीटर बिड़ला इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी पिलानी (झुंझनूं) में स्थापित किया गया है।
- ◈ राजस्थान का पूर्णतया सौर ऊर्जा से संचालित प्रथम रेलवे स्टेशन **गौरमघाट रेलवे स्टेशन (अजमेर मण्डल)** है।
- ◈ दौसा में राज्य का प्रथम सोलर चरखा लगाया गया है।
- ◈ सौर ऊर्जा शोध केन्द्र - जोधपुर IIT (**फ्रांस** के सहयोग से)
- ◈ राजस्थान में सौर ऊर्जा उत्पादन के प्रमुख केन्द्र -

  जैसलमेर - धुड़सर, फतेहगढ़, सत्तासर, मोकला

  जोधपुर ग्रामीण - मथानियां, धूनिया

  नागौर - खींवसर जयपुर ग्रामीण - फागी

  बाड़मेर - आगोरिया फलौदी - भड़ला, नौख
- ◈ **जयपुर, अजमेर** व **जोधपुर** का चयन **सोलर सिटी योजना** में किया गया है इन जिलों का विकास सोलर सिटी के रूप में किया जायेगा।
- ◈ **जवाहर लाल नेहरू सोलर मिशन** - 2010 में भारत सरकार द्वारा सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु प्रारम्भ किया गया था।
- लक्ष्य 2022 तक 1 लाख MW सौर ऊर्जा उत्पादन

पवन ऊर्जा -

- ◈ राजस्थान में सर्वाधिक पवन ऊर्जा उत्पादन वाला जिला जैसलमेर है।
- ◈ राजस्थान में पवन ऊर्जा का **प्रथम संयंत्र अमर सागर (जैसलमेर)** में 1999 में लगाया गया है। इसके पश्चात् देवगढ़ (प्रतापगढ़) द्वितीय एवं फलौदी (जोधपुर) तृतीय संयंत्र है।
- ◈ राजस्थान का **सबसे बड़ा पवन ऊर्जा संयंत्र मोकला (जैसलमेर)** में है।
- ◈ भारत का पहला **हाईब्रिड विंड सौलर पावर प्लान्ट** - जैसलमेर में
- ◈ राज्य में निजी क्षेत्र की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना **बड़ा बाग** (जैसलमेर) में 2001 में शुरू की गई थी।
- ◈ राजस्थान में पवन निगरानी केन्द्र - **आकल** (जैसलमेर)
- ◈ भारत का दूसरा सबसे बड़ा पवन ऊर्जा पार्क सुजलोन एनर्जी कम्पनी द्वारा **बड़ा बाग, जैसलमेर** में स्थापित किया गया है।
- ◈ राजस्थान में पवन ऊर्जा में सर्वाधिक योगदान **सुजलॉन एनर्जी** का है।
- ◈ राजस्थान की **प्रथम पवन ऊर्जा नीति 2012** में जारी की गई थी।
- ◈ **नवीन राजस्थान पवन एवं हाइब्रिड ऊर्जा नीति 18 दिसम्बर, 2019** में जारी की गयी है। इस नीति में पवन ऊर्जा से 2024-25 तक 4000 MW उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।
- ◈ राज्य में रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र **कोडियासर** में स्थापित किया गया है।

@HPTAILOR1710

भूगोल से संबंधित जानकारी के लिए
एच. पी. टेलर सर के टेलीग्राम ग्रुप से जुड़े

इस योजना में केन्द्र व राज्य सरकार का वित्त अनुपात 60:40 है।

◈ **उदय योजना (उज्ज्वल डिस्कॉम इश्योरेंस योजना, प्रारम्भ-2015)** - इस योजना के तहत कर्ज में डूबी विद्युत कम्पनियों को वित्तीय सहायता करने तथा क्षमता सुधार करने के लिये केन्द्र, राज्य व तीनों डिस्कॉम कम्पनियों के बीच एक समझौता हुआ है।

◈ **कुसुम योजना** - भारत सरकार द्वारा किसानों के लिये सौलर पम्प और ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों को स्थापित करने के लिये 'किसान ऊर्जा सुरक्षा व उत्थान योजना' (कुसुम) 8 मार्च, 2019 से प्रारम्भ की गई है। इस योजना में सोलर पम्प लगाने वाले किसान लाभार्थी को 30% केन्द्र सरकार व 30% राज्य सरकार अनुदान देगी।

- PM कुसुम योजना के अन्तर्गत **भालोजी गांव** (कोटपूतली-बहरोड़) में देश के प्रथम सौर ऊर्जा संयंत्र से ऊर्जा उत्पादन शुरू हो गया है।

(राजस्थान की प्रमुख विद्युत परियोजनाएँ : एक दृष्टि में)

- राज्य की स्वयं की
  - जल विद्युत
    - (i) माही लघुपन परियोजनाएँ
    - (ii) अनास
    - (iii) जाखम बांध लघुपन परियोजना
  - तापीय
    - (i) कोटा
    - (ii) सूरतगढ़
    - (iii) गिरल
    - (iv) छबड़ा
    - (v) बरसिंहसर
    - (vi) कालीसिंध
  - गैस
    - (i) धौलपुर
    - (ii) रामगढ़
    - (iii) झामर-कोटड़ा
  - गैर परम्परागत
    - पवन ऊर्जा
      - देवगढ़ (प्रतापगढ़), बीठड़ी (जोधपुर), अमर सागर, सोढ़ा बाँधन, बड़ा बाग (जैसलमेर), सीकर
    - सौर ऊर्जा
      - खींवसर (नागौर में रिलायंस द्वारा स्थापित) धूड़सर (पोकरण, जैसलमेर), फागी (जयपुर) धूनिया (औसिया-जोधपुर)
    - बायोमास
      - **पदमपुर (गंगानगर), खातोली-उणियारा (टोंक), रंगपुर (कोटा), कोटपूतली (कोटपूतली-बहरोड़) चंदेरिया (चित्तौड़गढ़), पन्धार (बारां), संगरिया (हनुमानगढ़), रामपुरा (सिरोही), कचैला-सांचौर (सांचौर), मेड़ता (नागौर)**
- साझीदारी परियोजनाएँ
  - जलविद्युत
    - भाखड़ा नांगल, व्यास (राजस्थान पंजाब व हरियाणा) चम्बल (मध्यप्रदेश व राजस्थान), राहुघाट (मध्यप्रदेश-राजस्थान) तथा माही बजाज सागर (गुजरात-राजस्थान)
  - तापीय
    - सतपुड़ा
- केन्द्र संचालित
  - जल विद्युत
    - नाथपा-झाकरी सलाल, टनकपुर, चमेरा, उरी, धौली गंगा, टिहरी, दुलहस्ती, पार्वती
  - तापीय
    - सिंगरौली, रिहन्द ऊँचाहार, फरक्का, कहलगांव, तलचर, कोल बांध
  - गैस
    - अन्ता औरैया, दादरी
  - परमाणु
    - (i) राज. अणु विद्युत गृह
    - (ii) नरोरा अणु विद्युत गृह

⊡⊡⊡⊡⊡

राज्य की औद्योगिक नीतियाँ -

◈ अब तक सरकार द्वारा कुल 7 औद्योगिक नीतियां जारी हुई हैं -

- **प्रथम** - **24 जून 1978,** कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन (भैरोसिंह शेखावत के समय)
- **द्वितीय** - दिसम्बर 1990 में घोषित व अप्रैल 1991 से लागू
- **तृतीय** - 15 जून 1994 (तीव्र औद्योगिक विकास के लिए **निजीकरण** पर जोर)
- **चतुर्थ** - 4 जून 1998
- **पांचवीं - नई औद्योगिक व निवेश नीति** - अगस्त 2010
- **छठी - नई सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग नीति (MSME)** - 20 नवम्बर 2015
- **सातवीं - नई औद्योगिक विकास नीति - 1 जुलाई, 2019** को जारी की गई। इस नीति में सतत व पर्यावरण हितैषी औद्योगिक विकास, रोजगार सृजन, समावेशी व संतुलित विकास, औद्योगिक आधारभूत ढांचा तैयार करने का उद्देश्य रखा गया है।

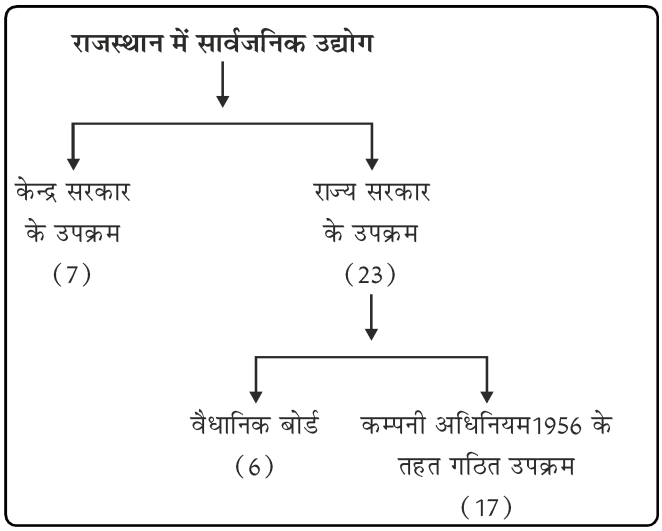

राजस्थान में केन्द्रीय औद्योगिक उपक्रम -

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL) -

◈ स्थापना - **देबारी (उदयपुर) में 10 जनवरी 1966**

पुराना नाम - मैटल कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया।

◈ यह इस समय भारत की सबसे बड़ी सीसा-जस्ता व चाँदी खनन करने वाली और **सल्फ्यूरिक एसिड उत्पादन** करने वाली कम्पनी है। अब इसका अधिग्रहण वेदान्ता रिसोर्सेज ने कर लिया है। HZL के निम्न 3 सयंत्र संचालित हैं-

(i) जिंक स्मेल्टर - **देबारी** (उदयपुर) 1968

(ii) सीसा-जस्ता स्मेल्टर - **चंदेरिया** (चितौड़गढ़) 1991

(iii) दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स - **दरीबा** (राजसमंद) 2010

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड (HCL) - खेतड़ी (नीम का थाना) -

◈ **9 नवम्बर 1967** को कोलकाता में इसकी स्थापना यूएसए की 'वेस्टर्न नेप इंजिनियरिंग कंपनी की सहायता से की गई थी। राजस्थान में HCL की ही एक यूनिट '**खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स**' के नाम से स्थापित है। यहाँ 5 फरवरी 1975 से ताँबे का उत्पादन शुरू हुआ था।

◈ 2008 को यह स्मेल्टर प्लांट बंद कर दिया गया।

- यहाँ से जनवरी 2018 से बनवास खान से पुन: ताँबा अयस्क का उत्पादन प्रारम्भ हो गया है, इसके अन्तर्गत तीन परियोजनाएँ कार्यरत हैं-

(i) खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स, खेतड़ी (नीम का थाना)

(ii) खो-दरीबा ताम्र परियोजना (अलवर)

(iii) चाँदमारी ताम्र परियोजना (झुंझुनूं)

हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (HMT) - अजमेर

◈ HMT की इसकी स्थापना **चेकोस्लोवाकिया** की सहायता से 1967 की गई थी। यहाँ मशीनों व घड़ियों का निर्माण होता था। यह वर्तमान में बंद है। उस समय HMT को **Jewel of Nation** कहा गया था।

सांभर साल्ट लिमिटेड (SSL) -

◈ स्थापना 30 सितम्बर 1964, मुख्यालय - जयपुर ग्रामीण

◈ इसमें केन्द्र व राज्य सरकार की अंशधारिता **60:40** है। यह हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड (HSL) की सहायक कम्पनी है तथा राजस्थान के 3 जिलों **डीडवाना-कुचामन, अजमेर** व **जयपुर ग्रामीण** में नमक उत्पादन का काम करती है।

◈ सांभर झील से सोडियम क्लोराईड के अलावा सोडियम सल्फेट, सोडियम कार्बोनेट व सोडियम बाई कार्बोनेट का उत्पादन भी करती है।

इन्स्ट्रूमेन्टेशन लिमिटेड (ILK)

◈ 1964 में यह रूस की सहायता से कोटा में स्थापित है।

◈ यहाँ मशीनों व यंत्रों का निर्माण होता था।

मॉर्डन बेकरिज इंडिया लिमिटेड

◈ स्थापना 1965 में, मुख्यालय - जयपुर

◈ यह फूड्स इंडस्ट्री है, जिसमें ब्रेड बनाने का कार्य होता है।

राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इन्स्ट्रूमेन्टेशन लिमिटेड (REIL रील)

◈ **1981 में कनकपुरा (जयपुर)** में स्थापित।

◈ यहाँ टेलीविजन सेट्स व अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण होता है। इसमें केन्द्र सरकार व राज्य की भागीदारी 51:49 है।

नोट : केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग एवं एमएसएमई मंत्री नितिन गडकरी ने **रील** को 'आईइआई शताब्दी इण्डस्ट्री एक्सीलेंस अवॉर्ड 2019' से सम्मानित किया है।

राजस्थान गैर कृषि विकास एजेन्सी (RUDA) -

◈ नवम्बर **1995** रूडा द्वारा DPIP परियोजना के तहत आने वाले 7 जिलों के गरीब परिवारों को दस्तकारी प्रशिक्षण दिया जाता है। यह संस्था निम्न परियोजनाओं का संचालन करती है -

- कोटा डोरिया कलस्टर विकास परियोजना
- ब्रास शिल्प प्रशिक्षण परियोजना
- बगरू हैण्डब्लॉक प्रिंटिंग क्लस्टर विकास परियोजना - बगरू (जयपुर)
- गोगुन्दा टेराकोटा क्लस्टर विकास परियोजना - गोगुंदा (उदयपुर)
- ब्लू पॉटरी के विकास हेतु रूरल बिजनेस हब्स योजना के तहत कोटजेवर गाँव (दूदू) का चयन किया गया है।
- चर्म कलस्टर- बानूसर (कोटपूतली-बहरोड़) में।

राजस्थान राज्य सहकारी बुनकर संघ -

◈ स्थापना 26 अगस्त 1957 में

◈ सहकारिता के माध्यम से हथकरघा से जुड़े बुनकरों की समस्या समाधान के लिए गठित की गई है।

राजस्थान राज्य हथकरघा विकास निगम (RSHDC) -

◈ 1984 बुनकरों को प्रशिक्षण, कच्चामाल, व सहायता प्रदान करता है।

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन ब्यूरो (BIP) -

◈ 8 जून, 2009 को BIDI (बीड़ी) के स्थान पर इस संस्था का गठन किया गया है। घरेलू एवं विदेशी कम्पनियों के सम्भावित निवेशकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करती है।

अन्य संस्थाएँ -

◈ **लघु उद्योग सेवा संस्थान (SISI)** - जयपुर, 1958
उद्योगों के संबंध में जानकारी व प्रशिक्षण प्रदान करना।

◈ **राजस्थान भूमि विकास निगम** - 1975 जयपुर

◈ राजस्थान कन्सल्टेन्सी ऑर्गेनाइजेशन लिमिटेड (RAJCON) - 1978

◈ उद्यम प्रोत्साहन संस्थान - 1995

◈ उद्यमिता एवं प्रबंध विकास संस्थान - 1996

◈ आर्थिक विकास बोर्ड - 1999

◈ निवेश संवर्द्धन ब्युरो - 1991

◈ राजस्थान फाउण्डेशन - 2001

◈ बुनकर सेवा संघ - 1978

◈ भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान - जोधपुर।

हस्तकला/हस्तशिल्प उद्योग

◈ हाथों द्वारा आकर्षक एवं कलात्मक वस्तुओं के बनाने को ही हस्तकला के नाम से जाना जाता है।

◈ सर्वप्रथम राज्य की 1998 की औद्योगिक नीति में हस्तशिल्प उद्योग पर विशेष बल दिया गया ताकि स्थानीय लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सके।

राजस्थान हस्तशिल्प नीति-2022

◈ लागू - 17 सितम्बर, 2022

◈ उद्देश्य - हस्तशिल्पियों व बनुकरों को तकनीकी सहायता, विपणन सहायता, वित्तीय सहायता, सामाजिक सहायता, आधारभूत सुविधाओं का विकास, रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना, निर्यात प्रोत्साहन, बेहतर मार्केटिंग, परम्परागत हस्तशिल्प को पुनः लाना, हस्तशिल्प सप्ताह का आयोजन आदि।

राजस्थान की प्रमुख हस्तकलाएँ एवं सम्बन्धित केन्द्र

हस्तकला	केन्द्र
अजरख प्रिंट	बाड़मेर
मीनाकारी	जयपुर, नाथद्वारा, अलवर
उस्ता कला	बीकानेर
दाबू प्रिंट	आकोला (चित्तौड़गढ़)
पिछवाई	नाथद्वारा (राजसमंद)
थेवा कला	प्रतापगढ़
नमदे	टोंक, बीकानेर
ब्लू पॉटरी	जयपुर
गोटा-किनारी	खण्डेला
लाख की चूड़ियाँ	जयपुर
डोरिया साड़ी	कैथून व मांगरोल (कोटा)
नांदणे	भीलवाड़ा
पाव रजाई	जयपुर
बादला	जोधपुर
मुरादाबादी बर्तन	जयपुर
मलमल	मथानियाँ (जोधपुर ग्रामीण)
दरियाँ	टाँकला (नागौर), सालावास (जोधपुर ग्रामीण), लवाण (दौसा)
कोफ्तगिरी	अलवर, जयपुर
कठपुतली	उदयपुर, जयपुर
रत्नाभूषण	जयपुर
पेपरमेशी	जयपुर, उदयपुर
बंधेज	जोधपुर, जयपुर

◈ **मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजना** - 13 दिसम्बर 2019 से प्रारम्भ की गई। इस योजना में लघु उद्योगों के उद्यमियों को 25 लाख तक ऋण 8% पर, 5 करोड़ रुपये तक का ऋण 6% पर, 10 करोड़ रुपये तक का ऋण 5% ब्याज अनुदान पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

विविध -

◈ **राजस्थान की औद्योगिक नगरी- कोटा**

◈ 2021 में उद्योग विभाग का नाम बदलकर **'उद्योग एवं वाणिज्य विभाग'** कर दिया गया है।

◈ **राजस्थान में 36 जिला उद्योग केन्द्र** (32 जिला व भिवाड़ी, फलौदी, जयपुर ग्रामीण व जयपुर शहर) व 8 उपकेन्द्र संचालित हैं (उपकेन्द्र- ब्यावर, फालना, आबू रोड़, बालोतरा, किशनगढ़, नीमराना, सुजानगढ़, मकराना)

◈ पांचवी पंचवर्षीय योजना (1978) में जिला स्तर पर जिला उद्योग केन्द्रों की स्थापना की गई।

◈ राजस्थान में किस पचंवर्षीय योजना में प्रथम बार औद्योगिक विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी - दूसरी पंचवर्षीय योजना में।

◈ **राजस्थान का स्कॉटलैण्ड - अलवर** (शराब उत्पादन के लिए)

◈ **राजस्थान औद्योगिक सुरक्षा बल (RISF)** की 3 बटालियन का राज्य में गठन किया गया है जिनका मुख्यालय **सीकर, बालोतरा** व **कोटपूतली-बहरोड़** में है।

◈ राष्ट्रीय हथकरघा दिवस- 7 अगस्त

◈ राष्ट्रीय लघु उद्योग दिवस- 30 अगस्त

◈ **स्पेशल इकॉनोमिक जोन (SEZ)** - यह एक विशेष क्षेत्र होता है, जिसे डीम्ड फोरन टेरटरी का दर्जा देकर सीमा उत्पाद शुल्क से मुक्त रखा जाता है।

- राजस्थान में सेज के विकास के लिए प्रमुख एजेन्सी RIICO है।
- राजस्थान की विशेष आर्थिक क्षेत्र नीति 13 मार्च 2003 को जारी की गई थी। अभी राजस्थान में 7 क्रियाशील सेज है।

क्र.सं.	सेज	संबंधित क्षेत्र	स्थिति
1.	बोरानाड़ा	ग्वारगम, हैण्डीक्राफ्ट	जोधपुर
2.	सीतापुरा-I	जेम्स एण्ड ज्वैलरी	जयपुर ग्रामीण
3.	सीतापुरा-II		
4.	महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी	I.T., हैण्डीक्राफ्ट	जयपुर
5.	सोमानी वर्सटेड लिमिटेड	हार्डवेयर एण्ड सॉफ्टवेयर	खुशखेड़ा (खैरथल-तिजारा)
6.	R.N.R. इन्फ्रास्ट्रेक्चर Pvt. Ltd.	टैक्सटाईल	बीकानेर
7.	वाटिका सेज	I.T.	जयपुर

-: यह भी जानें :-

◈ **दिल्ली मुम्बई इण्डस्ट्रीयल कॉरिडोर (DMIC) -**

- यह एक बड़ी महत्त्वाकांक्षी ढांचागत परियोजना है। जिसका लक्ष्य नए औद्योगिक शहरों को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित करना एवं आधारभूत ढांचे को विकसित करना है। यह परियोजना जापान की आर्थिक व तकनीकी सहायता से बनायी जा रही है। इस परियोजना के तहत दिल्ली से मुम्बई के मध्य 1483 कि.मी लम्बा एक कॉरिडोर बनाया जा रहा है, यह गलियारा जवाहरलाल नेहरू बन्दरगाह (मुम्बई) को दादरी (उत्तर प्रदेश) से जोड़ता है।
- इसे DFC Dedicated Freight Corridor भी कहा जाता है।
- यह कॉरिडोर दिल्ली से हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र से गुजरता है।
- इसकी कुल लम्बाई का 39% भाग राजस्थान में व 38% भाग गुजरात में है।
- डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की राजस्थान में लम्बाई- 576 किमी,
- यह कॉरिडोर राजस्थान के 10 जिलों से गुजेरगा - कोटपूतली-बहरोड़, नीम का थाना, सीकर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, ब्यावर, पाली, सिरोही
- इस कॉरिडोर के दोनों ओर 150 किमी का क्षेत्र औद्योगिक कॉरिडोर के रूप में विकसित किया जायेगा।
- DMIC की परिधि में राजस्थान के 22 जिले तथा 60% क्षेत्र आता है। राजस्थान में 5 नोड्स विकसित किये जायेंगे जिनमें से 2 इन्वेस्टमेंट रीजन व 3 औद्योगिक क्षेत्र हैं।

16 राजस्थान : व्यापार

- व्यापार से तात्पर्य है **वस्तुओं एवं सेवाओं का विनिमय** अथवा **क्रय/विक्रय** करना। राजस्थान के आर्थिक विकास में कृषि के साथ-साथ उद्योग एवं व्यापार का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- व्यापार की प्रकृति और मात्रा किसी भी प्रदेश के विकास को सर्वाधिक प्रभावित करती है।
- राज्य से वर्तमान समय में अन्तर्राज्यीय व्यापार के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापार किया जा रहा है। राज्य का निर्यात वर्ष 2011-12 में बढ़कर 32749 करोड़ रुपये हो गया। इसमें से लगभग एक-तिहाई (10785 करोड़) कृषि उत्पादक वस्तुओं का निर्यात किया गया।
- राजस्थान में वर्ष 2017-18 में यह निर्यात कारोबार बढ़कर 46500 करोड़ रुपये का तथा वर्ष 2022-23 में बढ़कर 77771.37 करोड़ का हो गया है।
- राजस्थान में कुल निर्यात का लगभग 15 प्रतिशत जवाहरात एवं आभूषण उत्पादों का है।
- राजस्थान से निर्यात किये जाने वाले उत्पादों में प्रमुख स्थान हीरे जवाहरात एवं आभूषणों का है क्योंकि कुल निर्यात मूल्य का लगभग 38.5 प्रतिशत भाग इन्हीं से निर्मित है।

राजस्थान से निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएँ

कृषि उत्पाद (Agricultural Products)

- राजस्थान में गंगनहर, इन्दिरा गाँधी नहर द्वारा पश्चिमी रेगिस्तानी भाग में सिंचाई जल की उपलब्धता के पश्चात् कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ विविध फसलों का उत्पादन भी होने लगा है।
- राजस्थान सरसों एवं ग्वार, अजवाइन, धनिया, मेथी, ईसबगोल, ऊन के उत्पादन में अग्रणी है। जीरा व मोटे अनाज सोयाबीन, दालों तथा तिलहन, सब्जियों, लहसुन संतरे व दुग्ध उत्पादन में भी राज्य का प्रमुख योगदान है। इनमें से कई वस्तुओं को इसी रूप में व कुछ को प्रसंस्कृत रूप में राज्यों से बाहर भेजा जाता है। फल-सब्जी, डेयरी उत्पाद का प्रसंस्करण किया जाता है जिसका उपयोग डिब्बा बंद भोजन, पेय पदार्थ के रूप में किया जाता है।
- चावल, दाल, ग्वारगम पाउडर, कपास, अजवायन, धनिया, तेल रहित खली, ईसबगोल की भूसी, मैथी, किन्नू, मेहंदी पाउडर, गुलाब, माल्टा, संतरा आदि ऐसे कृषि उत्पाद हैं जिनका राजस्थान से भारत के अन्य राज्यों में निर्यात किया जा रहा है।
- राज्य से ग्वारगम पाउडर तथा दाल का निर्यात अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैण्ड, इटली, स्वीडन, कोरिया, जापान, दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों तथा आस्ट्रेलिया में किया जा रहा है। ग्वारगम एवं दाल उत्पादन में राज्य का भारत में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

खनिज (Minerals) -

- खनिजों के पर्याप्त भण्डार होने के कारण राजस्थान खनिजों का **अजायबघर या भारत का म्यूजियम** कहा जाता है। कई खनिज तो ऐसे हैं जो भारत में केवल राजस्थान में ही पाए जाते हैं, जिनके उत्पादन में राज्य को एकाधिकार प्राप्त है।
- दुर्लभ तथा प्रचुर मात्रा में जिन खनिजों के भण्डार हैं उनका निर्यात अन्य राज्यों तथा विश्व के कई देशों में किया जा रहा है। जैसे **संगमरमर** का जापान, नेपाल, बांग्लादेश, मॉरीशस, मध्य-पूर्व के देशों, जर्मनी; **टेल्क** का कीनिया, आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश में; **फेल्सपार** का दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, जापान, इटली, थाइलैण्ड, सऊदी अरब आदि में निर्यात किया जा रहा है।
- पर्याप्त खनिज होने के कारण राज्य में इलेक्ट्रॉनिक उद्योग की स्थापना की भी अत्यधिक सम्भावनाएँ हैं ताकि इनसे उत्पादित वस्तुओं का निर्यात किया जा सके।

पशुपालन से सम्बन्धित उत्पाद (Animal Products) -

- राजस्थान में कृषि एवं पशुपालन मुख्य व्यवसाय है जहाँ वर्तमान में भी लगभग 65 से 70 प्रतिशत जनसंख्या जीवन निर्वाह कर रही है।
- पशुपालन से सम्बन्धित उत्पाद जैसे दूध से निर्मित दूध पाउडर, विशिष्ट मिठाइयाँ, मावे से बनी वस्तुएँ, पनीर, ऊन एवं ऊन से बने वस्त्र, भेड़, बकरी का मांस, चमड़ा तथा चमड़े से बनी वस्तुओं का निर्यात किया जा रहा है।

विनिर्मित उत्पाद (Manufacturing Products) -

- ऊनी वस्त्र, ऊन, टायर, प्रशोधित मांस, रेयॉन ग्रे फैब्रिक, रासायनिक पदार्थ, प्लास्टिक, लिनोलियम, दवाइयाँ, इंजीनियरिंग सामान, आचार, चटनी, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, सॉफ्टवेयर सॉल्यूशन, मोल्डेड चेयर तथा टेबिल, पेस्टीसाइड्स, ऑनसाइट केलिबेटर्स, कन्ज्यूमर्स एनर्जी मीटर्स आदि विनिर्मित उत्पाद है जिनका राज्य से निर्यात किया जा रहा है।
- राजस्थान से कई वस्तुएं दूसरे देशों को भी निर्यात की जाती है। इनमें मुख्य रूप से **कपड़ा, जवाहरात, एवं आभूषण, संगमरमर पत्थर, ग्रेनाइट तथा अभ्रक, पत्थर की वस्तुऐं, ऊन एवं ऊनी कपड़े, हाथ**

17 राजस्थान : परिवहन

सड़क परिवहन

◈ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात वर्ष 1949 ई. में राजस्थान में सड़कों की कुल लम्बाई 13553 कि.मी. थी। 31 मार्च, 2022 तक राज्य में सड़कों की कुल लम्बाई 278813.23 कि.मी. हो गयी है।

◈ देश के राष्ट्रीय राजमार्गो की लम्बाई का 7.61% हिस्सा राजस्थान में है। इस प्रकार NH (राष्ट्रीय राजमार्ग) की लम्बाई की दृष्टि से राजस्थान महाराष्ट्र एवं उत्तरप्रदेश के बाद **तीसरे स्थान** पर है।

◈ **राजस्थान में सड़क परिवहन से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य –**

• राजस्थान में सड़कों की लम्बाई	**278813.23 कि.मी.**
• राजस्थान में सड़कों का घनत्व	81.47 कि.मी. (प्रति 100 वर्ग कि.मी.) (31 मार्च, 2022 तक)
• राजस्थान में सड़क घनत्व प्रति लाख व्यक्ति	406.7 कि.मी.
• राजस्थान में NH (राष्ट्रीय राजमार्ग) की संख्या	**52**
• राजस्थान में NH की कुल लम्बाई	**10618.09 कि.मी.**
• राजस्थान में सबसे लम्बा NH –	(i) N.H. 52 (793.5 कि.मी.) संगरू से अंकोला (ii) N.H. 11 (763.61 कि.मी.) म्याजलार से रेवाड़ी
• राजस्थान में सबसे छोटा NH –	(i) N.H. 919 – 5 कि.मी. (ii) N.H. 148B
• राजस्थान में सबसे व्यस्तम NH	N.H. 48 तथा N.H. 58
• पूर्णतया राजस्थान से गुजरने वाला सबसे बड़ा NH	N.H. 25 (481 कि.मी.) ब्यावर – मुनाबाब
• पूर्णतया राजस्थान से गुजरने वाला सबसे छोटा NH	N.H.-156 (12 कि.मी.) निम्बाहेड़ा – MP सीमा
• सर्वाधिक जिलों से गुजरने वाला NH	N.H. 48–12 जिलों से तथा N.H. 52–9 जिलों से
• राजस्थान के 8–8 जिलों से गुजरने वाले NH	NH-754K, NH-58, NH-62
• राजस्थान के 7–7 जिलों से गुजरने वाले NH	NH-27, NH-148N
• राजस्थान में NH की सर्वाधिक लम्बाई वाले जिले	बाड़मेर (879.39 कि.मी.) बीकानेर (866.66 कि.मी.), जैसलमेर (770 कि.मी.)
• राजस्थान में NH की न्यूनतम लम्बाई वाले जिले	करौली (58 कि.मी.), प्रतापगढ़ (105 कि.मी.), डूंगरपुर (111 कि.मी.)
• राजस्थान में सर्वाधिक NH वाला जिला	जयपुर ग्रामीण (8 NH), बाड़मेर (5 NH), राजसमंद (5 NH), ब्यावर (5 NH)
• राजस्थान में केवल एक ही जिले तक सीमित NH की संख्या	12
• राजस्थान का ऐसा जिला जहां से कोई NH नहीं गुजरता	सलुम्बर
• राजस्थान के कितने जिले ऐसे है जिनसे सिर्फ 1–1 NH गुजरते है	8 जिले

47	162A	-	मावली - फतेहनगर - दरीबा - रेलमगरा - खांडेल (NH-162 से NH-758 में)	50.5	उदयपुर, राजसमंद
48	68	15	तनोट (जैसलमेर) - फतेहगढ़ - शिव - बाड़मेर - धोरीमन्ना - सांचोर - गुजरात सीमा	422.2	जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर
49	168	-	गुजरात सीमा - मंडार - रेवदर - करोंटी - अनादरा - कृष्णगंज - सिरोही (NH-68 से NH-62 में)	72	सिरोही
50	168A	-	सांचोर (धानेरा को) - पलादर - गुजरात सीमा (NH-68 से NH-27 में)	11.8	जालौर
51	70	-	मुनाबाव - सुंदरा - म्याजलार - धनाना - आसू का तला - घोटारू - लोंगेवाला - सादेवाला - तनोट	273.8	बाड़मेर, जैसलमेर
52	968	-	भादासर से सरकारी तला	67.95	जैसलमेर

-: यह भी जाने :-

- राजस्थान के **25 NH** ऐसे है जो राजस्थान के भू-भाग से शुरू होकर राजस्थान में ही समाप्त होते है।
- NH-925, NH-925A, NH-911, NH-911A, 968 व 70 का निर्माण **भारतमाला परियोजना** के तहत पूर्ण हो गया है तथा NH - 148N व NH-754K का निर्माण भारतमाला परियोजना के तहत हो रहा है।
- NH-25 **बर दर्रा** (पाली) से होकर गुजरता है। पहले यह बाड़मेर तक ही था। वर्तमान में इसका विस्तार मुनाबाव तक कर दिया गया है।
- NH-925A भारत का पहला राष्ट्रीय राजमार्ग है जिस पर **वायुसेना के विमानों** के लिए आपात स्थित में उतरने के लिए **इमरजेंसी लैंडिग स्ट्रिप (ELF)** बनाई गई है।
- **NH-27 पूर्वी-पश्चिमी कॉरीडोर (पोरबंदर - गुजरात से सिलचर - असम तक) तथा NH-44 उत्तर-दक्षिण कॉरीडोर (श्रीनगर - जम्मू-कश्मीर से कन्या कुमारी - तमिलनाडू तक) का हिस्सा है।**
- **NH-48 स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का हिस्सा है।**
- **NH-76** स्वर्णिम चतुर्भुज योजना तथा पूर्व-पश्चिमी कॉरिडोर दोनों का हिस्सा है।
- भारतमाला परियोजना के तहत दो **एक्सप्रेस-वे** का निर्माण किया जा रहा है - (i) NH - 148N (ii) NH-754K
- **NH-148-N राष्ट्रीय राजमार्ग दिल्ली बड़ोदरा ग्रीन फिल्ड एक्सप्रेस वे का हिस्सा है।** यह एक्सप्रेस-वे मुकुन्दरा हिल्स टाइगर रिजर्व के भूमिगत सुरंग के रूप में गुजरेगा।
- **NH-754K देश का पहला एक्सप्रेस वे होगा जो तीन रिफायनरियों अमृतसर, पचपदरा व जामनगर को जोड़ेगा।** यह NH अमृतसर - जामनगर 6 लेन ग्रीनफिल्ड एक्सप्रेस-वे का हिस्सा है।
- **चीरवा घाट सुरंग (उदयपुर)** NH-58 पर बनायी गई है।
- **NH-162 देसूरी की नाल** (पाली) से होकर गुजरता है।

राजस्थान में सड़क विकास हेतु संचालित परियोजनाऐं -

- **चेतक परियोजना** - यह परियोजना सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा **1962** में शुरू की गयी थी जिसका **मुख्यालय बीछवाल (बीकानेर)** में है। इस परियोजना के तहत सीमावर्ती जिलों (गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर) में सामरिक महत्व की सीमावर्ती सड़के बनाने व उनके रख रखाव का कार्य किया जाता है।
- **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना** - यह सड़क योजना वाजपेयी सरकार के समय **25 दिसम्बर, 2000** में शुरू की गई। इस योजना के तहत 500 से अधिक आबादी वाले गांवों (मरू/दुर्गम पहाड़ी/जनजातिय क्षेत्रों के लियें आबादी 250) को सड़क से जिला मुख्यालय को जोड़ने का कार्य हो रहा है। शुरूआत में यह योजना 100% केन्द्र द्वारा वित्त पोषित थी लेकिन वर्तमान में इसका वित्तीय पैटर्न केन्द्र व राज्य का क्रमश: **60:40** है।
- **मेगा हाईवे परियोजना** - मेगा हाइवे परियोजना का रिडकोर **(RIDCOR)** के माध्यम से संचालन किया जा रहा है। **रिडकोर, राजस्थान सरकार** एवं **मैसर्स आई. एल. एण्ड एफ. एल.** के मध्य 50:50 प्रतिशत की भागीदारी से निर्मित एक संयुक्त उपक्रम है जिसकी स्थापना **2004** में की गई थी।
- **ग्रामीण गौरव पथ योजना** - इस योजना के तहत प्रत्येक **ग्राम पंचायत** में औसतन 1 किमी लम्बाई तक की सीमेन्ट-कंक्रीट सड़क मय नाली का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना **2014-15** में प्रारम्भ हुयी थी।
- **शहरी गौरव पथ योजना** - इस योजना के तहत **शहरी निकायों** में 1 से 2 किमी लम्बाई की डामर सड़क, फुटपाथ व नाली का निर्माण किया जा रहा है। यह योजना **2016-17** में प्रारम्भ हुई थी।
- **भारत माला परियोजना** - **23 जुलाई, 2015** से शुरू की गई भारत सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत देश के 17 राज्यों व 7 तटीय प्रदेशों को जोड़ा जाना है। इस योजना के तहत निर्मित सड़के

18 राजस्थान : पर्यटन

◈ पर्यटन उद्योग को **निर्धूम उद्योग (धुंआ रहित)** कहते हैं। प्राय: देखा जाता है कि भारत में आने वाला प्रत्येक तीसरा पर्यटक राजस्थान भ्रमण के लिए अवश्य आता है। अपनी ऐतिहासिक विरासत एवं सांस्कृतिक धरोहर के कारण पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान अग्रणी राज्यों में से एक है। विश्व के पर्यटन मानचित्र पर राजस्थान विशेष महत्व रखता है इसी कारण राजस्थान को **सैलानियों का स्वर्ग** कहते है।

◈ पग-पग पर फैली वीरता व साहस की कहानियाँ और उनसे जुड़े ऐतिहासिक स्थल, जैसा कि इंग्लैण्ड के विख्यात कवि रुडयार्ड किप्लिंग ने कहा था - ''यदि विश्व में कोई ऐसा स्थान है जहाँ वीरों की हड्डियाँ मार्ग की धूल बनी हैं तो वह राजस्थान ही कहा जा सकता है।''

◈ किसी भी राज्य अथवा प्रदेश के लिए पर्यटन का आर्थिक महत्व है पर्यटन से एक ओर रोजगार मिलता है तो दूसरी ओर विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इसी के साथ पर्यटन उद्योग से सामाजिक सद्भाव एवं विश्व शांति का संदेश जाता है।

- वर्ष 2017 को द्वारा '**अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष**' के रूप में मनाया गया।
- विश्व पर्यटन दिवस - 27 सितम्बर
- भारतीय पर्यटन दिवस- 25 जनवरी

◈ राजस्थान के पर्यटन विभाग का ध्येय वाक्य/पंचवाक्य (टेग लाईन) है - **राजस्थानः भारत का अतुल्य राज्य।**

◈ डॉ. सी.वी. रमन ने जयपुर को **रंगश्री द्वीप (Island of Glory)** की संज्ञा दी थी।

◈ '**ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इंडिया (पश्चिमी भारत की यात्रा)**' नामक पुस्तक के लेखक **कर्नल जेम्स टॉड** है।

◈ **4 मार्च, 1989** में राजस्थान में **पर्यटन को उद्योग (निर्धूम उद्योग)** का दर्जा **मोहम्मद युनूस समिति** की सिफारिश पर दिया गया। राजस्थान देश का **पहला राज्य** है जहां पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया है।

◈ 18 मई, 2022 को राज्य सरकार ने **ट्युरिज्म एवं हॉस्पिटैलिटी सेक्टर** का विकास करने एवं सम्बल प्रदान करने के उद्देश्य से इन्हें **पूर्ण उद्योग** का दर्जा दिया है। इसके साथ ही अब पर्यटन एवं हॉस्पिटैलटी क्षेत्र में अन्य उद्योगों के साथ ही इण्डस्ट्रियल नोर्म्स के अनुसार ही सरकारी टैरिफ एवं लैवीज देय होंगे।

-: यह भी जाने :-

◈ **ट्यरिज्म लोगो (पर्यटन लोगों) -**

- '**ढोला मारू**' 1978 में लॉन्च किया गया। (राजस्थान का पहला पर्यटन लोगो)
- '**पधारो म्हारे देश**' - 1993 में लॉन्च
- '**कलरफूल राजस्थान**' - 2008 में लॉन्च
- '**जाने क्या दिख जाये**' - 2016 में लॉन्च
- **30 जनवरी, 2019 को पुनः 'पधारे म्हारे देश'** को राजस्थान का पर्यटन लोगो के रूप में अपनाया गया।

◈ वर्ष 2004-05 में पर्यटन को **जन उद्योग** का दर्जा दिया गया है तथा इसके लिये A Liberal Tourist Friendly Excise Policy की घोषणा की गई है।

◈ मुख्यमंत्री वसंधरा राजे ने 4 जून, 2016 को नई दिल्ली में आयोजित 'एम्बेसडर्स राउण्ड टेबल कॉफ्रेंस' में नई **राजस्थान पर्यटन ईकाई नीति 2015** जारी की।

◈ देश में विदेशी पर्यटकों के आगमन की दृष्टि से राजस्थान का स्थान **5वाँ** है।

◈ राज्य में सर्वाधिक राजस्व जुटाने वाला पर्यटन स्थल आमेर महल (जयपुर) है।

◈ राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों के आगमन नवम्बर माह में होता है।

◈ राजस्थान में सर्वाधिक स्वदेशी पर्यटकों का आगमन अगस्त माह में होता है।

◈ स्वदेशी पर्यटकों में सर्वाधिक पर्यटक गुजरात से आते है।

◈ **यूनेस्को समझौता** - राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा 5 सितम्बर 2019 को प्रदेश के जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर जिलों में **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं सांस्कृतिक पर्यटन** को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्कों के साथ समझौता किया गया है। इसके तहत इन जिलों के 10 सांस्कृतिक स्थलों का विकास किया जायेगा। इस योजना को '**प्रमोटिंग इन्टेन्जेबल कल्चरल हैरिटेज ऑफ राजस्थान**' नाम दिया गया है।

पर्यटन परिपथ (सर्किट) -

- राजस्थान को पर्यटन की दृष्टि से मुख्यत: **10 सर्किटों** में विभाजित किया गया है -

◈ **मानगढ़ धाम (बांसवाड़ा)** - यह स्थान आदिवासी श्रद्धा का केन्द्र है। राज्य सरकार यहाँ जनजाति संग्रहालय व शहीद स्मारक बना कर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित कर रही है।

◈ शौर्य उद्यान - दौरासर (झुंझुनूं)

◈ देश का पहला वंशावली म्युजियम जयपुर में बनाया जा रहा है।

◈ शेखावाटी क्षेत्र को **ओपन एयर आर्ट गैलेरी** के नाम से जाना जाता है। राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र चित्रित हवेलियों व भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

◈ विवेकानन्द संग्रहालय (अजीत विवेक राष्ट्रीय संग्रहालय)- खेतड़ी (झुंझुनूं)

◈ मीरा संग्रहालय की स्थापना - उदयपुर

◈ राज्य का पहला जियोलोजिकल (भू-विज्ञान) पार्क - झालाना डूंगरी (जयपुर)

राजस्थान के प्रमुख जियोहेरिटेज साईट

क्र.सं.	जियोहेरिटेज साईट	स्थान
1.	जावर	उदयपुर
2.	स्ट्रोमेटोलाईट पार्क	झामर कोटड़ा (उदयपुर)
3.	स्ट्रोमेटोलाईट पार्क	भोजुण्डा (चित्तौड़गढ़)
4.	ग्रेट बाउण्ड्री फॉल्ट	सातूर (बून्दी)
5.	रामगढ़ उल्कापिण्ड क्रेटर	रामगढ़ (बारां)
6.	जोधपुर मालानी ग्रुप आग्नेय चट्टानें	जोधपुर
7.	वेल्डेड डफ	जोधपुर
8.	सैंड्रा/सेंदड़ा ग्रेनाइट	पाली
9.	बर कांग्लोमेरेट	पाली
10.	आकल, वुड फॉसिल पार्क	जैसलमेर
11.	पोसाण राजपुरा दरिबा	राजसमंद
12.	नेफेलाइन साइनाइट	किशनगढ़ (अजमेर)

शाही रेलगाड़ियाँ -

◈ **पैलेस ऑन व्हीलस** - यह एक राजसी ठाठ-बाट वाली शाही रेलगाड़ी है जिसका संचालन 26 जनवरी **1982** से प्रारम्भ हुआ। भारतीय रेलवे व RTDC के संयुक्त तत्वाधान में चलायी जा रही है। इस रेलगाड़ी में **14 सैलून (कोच)** हैं जिनके नाम राजस्थान की पूर्व रियासतों के नाम पर रखे गये हैं। इसका स्लोगन - **वन वीक इन वंडरलैण्ड** है। 2006 से इसका संचालन बड़ी लाइन पर किया जा रहा है।

- यह गाड़ी नई दिल्ली से चलती है जो राजस्थान में जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सवाईमाधोपुर एवं आगरा (उत्तरप्रदेश) में रूकती है। इसमें कुल 7 दिन की यात्रा होती है।

  सितम्बर 2017 से इसका नया नाम - **हैरिटेज पैलेस ऑन व्हील्स** कर दिया गया है।

◈ **फेरी क्वीन/हैरिटेज ऑन व्हील्स** - 2003, शेखावाटी क्षेत्र में उत्तर पश्चिमी रेलवे एवं RTDC द्वारा संचालित है। वर्तमान में बंद है।

◈ **रॉयल राजस्थान ऑन व्हीलस** - 2009 से प्रारम्भ, भारतीय रेलवे व RTDC द्वारा संयुक्त रूप से संचालित है।

- यह भारत की सबसे मंहगी व लग्जरी ट्रेन है। रूट- जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, सवाईमाधोपुर, जयपुर, भरतपुर, आगरा व दिल्ली का है। 2017 से इसका नया नाम - **पैलेस ऑन व्हील्स** कर दिया गया है।

◈ **द ग्रेट अरावली ट्रेन सफारी** - यह ट्रेन अजमेर, राजसमंद और उदयपुर के बीच कामली घाट की नयनाभिराम वादियों में चलाई जाएगी।

◈ **हैंगिंग ब्रिज** - देश का चौथा एवं राज्य का पहला हैंगिंग ब्रिज कोटा में चम्बल नदी पर 6 लेन का है। इस पर से राष्ट्रीय राजमार्ग नं 76 (नया नम्बर 27) गुजरता है।

- राज्य का दूसरा हैगिंग ब्रिज माही नदी पर बनाया जा रहा है।

◈ **हाथी गाँव** - आमेर (जयपुर) का **कुण्डा गाँव** (एशिया का तीसरा हाथी गांव)

◈ **राजस्थान में यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल** -

1. केवलादेव घना पक्षी विहार
2. कालबेलिया नृत्य
3. जन्तर मंतर वेधशाला
4. गागरोन किला
5. जैसलमेर का किला
6. रणथम्भौर का किला, सवाईमाधोपुर
7. चित्तौड़गढ़ किला
8. कुम्भलगढ़ किला
9. आमेर किला
10. सिटी वॉल परकोटा, जयपुर शहर

◈ **कालबेलिया नृत्य** - इस नृत्य को 2010 में यूनेस्को की **अमूर्त सांस्कृतिक विरासत** की प्रतिनिधि सूची में शामिल किया गया है।

- जयपुर में हाथी गांव के पास 'कालबेलिया स्कूल ऑफ डांस' स्थापित किया गया है।

◈ आगरा के बाद **जयपुर** देश का दूसरा शहर है जहां **तीन विश्व विरासतें** है-

1. जन्तर मन्तर (2010 में विश्व विरासत में शामिल)
2. आमेर फोर्ट (2013 में विश्व विरासत में शामिल)
3. जयपुर परकोटा (2019 में विश्व विरासत में शामिल)

◈ **जन्तर मन्तर** एक खगोलीय वैधशाला है, जो जयपुर में स्थित है। इसका निर्माण जयपुर शासक **सवाई जयसिंह** ने **1724** से **1734** के मध्य करवाया था। इसमें 19 खगोलीय उपकरण लगे हैं, जो समय मापने, ग्रहण की भविष्यवाणी करने, किसी तारे की गति व स्थिति जानने में सहायक हैं।

19 राजस्थान : जनगणना-2011

- किसी भी देश का आर्थिक विकास उस देश के मानव संसाधन पर आश्रित होता है। मानव ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है। इसलिए राज्य में मानव का संसाधन के रूप में जनसंख्या का अध्ययन एवं विश्लेषण करना अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है।
- ब्रिटिश भारत में पहली जनगणना 1872 में लार्ड मेयो के काल में हुई।
- **1881 में लार्ड रिपन** के समय से प्रत्येक 10 वर्ष के अन्तराल पर जनगणना का क्रमवार आकलन प्रारम्भ हुआ।
- जनगणना **संघ सूची** का विषय है तथा संविधान की सातवीं अनुसूची में शामिल है।
- 1948 में जनसंख्या, जनगणना अधिनियम पारित किया गया।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन 1993 में किया गया।
- अब तक भारत में 15 जनगणना हो चुकी है।
- जनगणना 2011 भारत की **15वीं जनगणना** है (व्यवस्थित/दशकीय 14वीं) तथा आजाद भारत की **सातवीं** जनगणना है। इसके साथ ही 21 वीं सदी की **दूसरी** जनगणना हैं।
- **राजस्थान की जनगणना 2011 का तुलनात्मक अध्ययन** –
- 15वीं जनगणना 2011 का नारा है – **'हमारी जनगणना, हमारा भविष्य' तथा शुभंकर है – प्रगणक शिक्षिका**
- भारत में जनगणना अधिनियम 1948 के अन्तर्गत जनगणना करवायी जाती हैं।
- देश की जनगणना का दायित्व सविधान के अनुच्छेद 246 में केन्द्र सरकार को दिया गया है।
- 1961 में जनगणना कार्य की महत्ता को देखते हुये गृह मंत्रालय के अधीन 'जनगणना विभाग' का गठन किया गया है, जो जनगणना का कार्य करवाता है।
- केन्द्रीय स्तर पर इस कार्य के लिये इस विभाग का शीर्ष अधिकारी **'महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त'** को नियुक्त किया गया है।
- जनगणना 2011 की संदर्भ तिथि 1 मार्च 2011 की मध्य रात्री निर्धारित की गयी तथा जनगणना काल 9 फरवरी से 28 फरवरी, 2011 निर्धारित था।
- जनगणना 2011 में जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड की संदर्भ तिथि 1 अक्टूबर थी (बर्फ बारी के कारण इन राज्यों में जनगणना बाद में हुयी।)
- साक्षरता दर का मापन का आधार 7 वर्ष से ऊपर की आयु की जनसंख्या है।

विवरण	2011 की जनगणना	2001 की जनगणना	अन्तर	राजस्थान का भारत में स्थान
कुल जनसंख्या	**6,85,48,437 (6.85 करोड़)**	5,65,07,188 (5.6 करोड़)	1,20,41,249 (1.20 करोड़)	**7वाँ**
पुरूष	**3,55,50,997 (51.86%)**	–	–	
महिला	**3,29,97,440 (48.13%)**	–	–	
लिंगानुपात	**928**	921	7 की वृद्धि	**22वाँ**
जनघनत्व	**200**	165	35 की वृद्धि	**19वाँ**
0-6 आबादी	**15.54%**	–	–	–
0-6 लिंगानुपात	**888**	909	21 की कमी	**25वाँ**
साक्षरता	**66.11%**	60.41%	5.70% की वृद्धि	**26वाँ**
पुरूष साक्षरता	**79.20%**	75.7%	3.5% की वृद्धि	**19वाँ**
महिला साक्षरता	**52.12%**	43.9%	8.22% की वृद्धि	**27वाँ**
दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर	**21.3%**	28.4%	7.10% की कमी	**9वाँ**

धार्मिक जनसंख्या -

- सर्वाधिक हिन्दू जनसंख्या वाला जिला- जयपुर (58.20 लाख)
- सर्वाधिक हिन्दू जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला -
  (i) डूंगरपुर (96,81%)
  (ii) दौसा (96.51%)
- सवार्धिक मुस्लिम जनसंख्या वाला जिला - जयपुर (6.87 लाख)
- सवार्धिक मुस्लिम जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला-जैसलमेर (25.1%)

धार्मिक समुदाय	जनसंख्या % में (2011)
हिन्दू	88.49
मुस्लिम	9.07
सिक्ख	1.27
जैन	0.91
ईसाई	0.14
बौद्ध	0.02
अन्य	0.01
जिन्होंने धर्म का उल्लेख नहीं किया।	0.10

- सर्वाधिक ईसाई जनसंख्या वाला जिला - बाँसवाड़ा
- सर्वाधिक ईसाई जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - बाँसवाड़ा(1.24%)
- सर्वाधिक सिक्ख जनसंख्या वाला जिला - गंगानगर (4.75 लाख)
- सर्वाधिक सिक्ख जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - गंगानगर (24.11%)
- सर्वाधिक जैन जनसंख्या वाला जिला - जयपुर
- सर्वाधिक जैन जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - उदयपुर (2.56%)
- सर्वाधिक बौद्ध जनसंख्या वाला जिला - अलवर
- सर्वाधिक बौद्ध जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - अलवर(0.12%)

कार्यशील जनसंख्या -

- राजस्थान में **कार्य सहभागिता दर 43.60% (भारत - 39.8)**
- कार्यशील जनसंख्या (कार्य सहभागिता दर) के प्रतिशत की दृष्टि से राजस्थान का देश में **स्थान 11वाँ** हैं।
- सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या वाला जिला - जयपुर
- न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या वाला जिला - जैसलमेर
- सर्वाधिक कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - (i) प्रतापगढ़ (55.46%) (ii) चित्तौड़गढ़ (51.98%) (iii) बाँसवाड़ा (50.99%)
- न्यूनतम कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला - (i) जयपुर (37.20%) (ii) सीकर (37.59%) (iii) कोटा (38.38%)

विवरण	राजस्थान	भारत
अशोधित जन्म दर (प्रति हजार जनसंख्या) (वर्ष 2020)	23.5	19.5
अशोधित मृत्यु दर (प्रति हजार जनसंख्या) (वर्ष 2020)	5.6	6
शिशु मृत्यु दर (प्रति हजार जीवित जन्मों पर) (वर्ष 2020)	32	28
मातृ मृत्यु अनुपात (प्रति लाख जीवित जन्म) (वर्ष 2018-2020)	113	97
जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (वर्ष) (वर्ष 2016-2020)	69.4	70.0

स्रोत-आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट, 2022-23

- वी.एस. व्यास समिति की रिपोर्ट के आधार पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राजस्थान की **प्रथम जनसंख्या नीति** 20 जनवरी 2000 को जारी की गयी। राजस्थान आन्ध्रप्रदेश के बाद दूसरा राज्य है जिसने स्वयं की जनसंख्या नीति घोषित की।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति - 15 फरवरी, 2000

20 राजस्थान : प्रमुख जनजातियां

- वर्तमान में जो समाज जंगलों अथवा पर्वतों पर रहता है, जिनका प्रकृति के साथ निकट का नाता है तथा आधुनिक सुविधाओं से वंचित जो समाज है, उन्हे जनजाति समाज कहा जाता है। इन्हें **आदिवासी** अथवा **गिरिवासी** भी कहते हैं।
- जनजाति मूलत: प्रकृति प्रेमी होते हैं। प्रकृति को परमात्मा समझ कर उसकी पूजा करते हैं। वृक्ष, पानी, भूमि व पर्यावरण को ये अपना परिवार समझते हैं।
- यद्यपि आज इनकी बस्तियों में विद्युत, सड़क, विद्यालय आदि की सुविधाएं होने लगी है, किन्तु पहले ऐसा नहीं था। ये प्राय: जंगलों एवं गिरिकन्दराओं में रहते थे। घास-फूस से आशियाना बनाकर रहते थे तथा कबिलाई जीवन जीते थे।
- जल, जंगल व जमीन की परिधि में सिमटे समाज की इनकी अपनी परम्पराएँ, रीति-रिवाज तथा संस्कृति हुआ करती थी, जिसकी झलक कमोबेश आज भी हमको देखने को मिलती है।
- राजस्थान के सतरंगी सांस्कृतिक वातावरण को राज्य की जनजातियां ओर भी आकर्षक बनाती है। जनजाति को **वनवासी** या **गिरिजन** के नाम से भी जाना जाता है।
- प्रत्येक जनजाति की अपनी विशिष्ट पहचान, सामाजिक व्यवस्था एवं संस्कृति होती है। जिससे हमें राजस्थान की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर का ज्ञान होता है।
- जनजातियां मुख्यत: पहाड़ों, पठारों, जंगलों व वन क्षेत्रों में निवास करती है।
- वनोत्पाद व आखेट तथा आदिम प्रकार की कृषि व पशुपालन जनजातियों की आजिविका के साधन है।
- भारत में सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाले पाँच राज्य मध्यप्रदेश (1.53 करोड़), महाराष्ट्र (1.05 करोड़), उड़ीसा (95.9 लाख), **राजस्थान (92.38 लाख)** एवं गुजरात (89.45 लाख) है। भारत में कुल जनजाति जनसंख्या **10.46 करोड़** है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में जनजातीय जनसंख्या 92.38 लाख है। जो कुल जनसंख्या का **13.5 प्रतिशत** है।
- राजस्थान का जनजातिय जनसंख्या की दृष्टि से भारत में **चौथा स्थान** है जबकि कुल जनसंख्या में प्रतिशत की दृष्टि से **15वाँ** स्थान है।
- राजस्थान में कुल जनजाति जनसंख्या का 94.6 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है।
- राजस्थान में वर्तमान में कुल **12 जनजातियाँ** अधिसूचित हैं—मीणा (सर्वाधिक जनसंख्या), भील, गरासिया, सहरिया, डामोर, भीलमीणा, कोलीढ़ोर (सबसे कम जनसंख्या), पटेलिया, नायकड़ा, कथौड़ी, कोकना एवं धानका।
- राजस्थान की जनजातियो में सर्वाधिक जनसंख्या मीणा जनजाति (कुल जनजाति जनसंख्या का **47 प्रतिशत** एवं राज्य की कुल जनसंख्या का **6.34** प्रतिशत) की है। जनसंख्या की दृष्टि से इसके पश्चात् क्रमश: भील (41 लाख), गरासिया (3.14 लाख) और सहरिया (1.11 लाख) व डामोर (91.5 हजार) जनजातियों का स्थान आता है।
- राज्य की सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाले जिले **उदयपुर** (15.25 लाख), बांसवाड़ा (13.73 लाख) है। जबकि न्यूनतम जनसंख्या वाले जिले बीकानेर, नागौर व चूरू है।
- राजस्थान में जनजातियों की जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात **बांसवाड़ा** (76.4 प्रतिशत), डूंगरपुर, प्रतापगढ़ और न्यूनतम **नागौर** (0.20 प्रतिशत) बीकानेर व चूरू जिलों में पाया जाता है।
- राजस्थान में जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या वाले जिले-मीणा (उदयपुर), भील (बाँसवाड़ा), गरासिया (सिरोही), सहरिया (बारां), डामोर (डूंगरपुर), कथौड़ी (उदयपुर), भील मीना (डूंगरपुर), धानका (जयपुर), कोकना (जोधपुर), कोलीढोर (जयपुर), नायकड़ा (बीकानेर) एवं पटेलिया (कोटा)।
- राजस्थान में **सबसे प्राचीन जनजाति भील मानी जाती है।** भारत सरकार के **आदिम जनजाति समूह (Primate Tribe Group) की सूची में शामिल राजस्थान की एकमात्र जनजाति सहरिया है।**
- राजस्थान में सांसी एवं कंजर जातियां SC (अनुसूचित जाति) वर्ग में शामिल है।
- 25 अप्रैल, 2018 को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल ने संविधान की पाँचवीं अनुसूची के विस्तार को मंजूरी दी है। अब राज्य के बाँसवाड़ डूंगरपुर एवं प्रतापगढ़ जिले पूर्णत: अनुसूचित जिले बन गये हैं। इन अलावा उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, पाली एवं सिरोही जिलों के कुछ ब्लॉक को भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

राजस्थान में जनजातियों का भौगोलिक वितरण -

(i) **<u>पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र</u> :** राज्य के अलवर, भरतपुर, धौलपुर, जयपुर, दौसा, सवाईमाधोपुर, करौली, अजमेर, भीलवाड़ा, टोंक, कोटा, बारां, बूंदी, झालावाड़ जिले इस क्षेत्र में आते है।

मीणा जनजाति में बंटाईदारी कृषि व्यवस्था के प्रकार -

(i) छोटा बट्ट : बंटाईदारी व्यवस्था में भूमि स्वामी जोतने के लिए केवल, भूमि देता है और उसके बदले में एक चौथाई पैदावार लेता है।

(ii) हाड़ी बट्ट : इस व्यवस्था में भूमि-स्वामी राजस्व देता है और इसके अतिरिक्त बीज, सिंचाई आदि की भी व्यवस्था करता है।

(iii) हासिल बट्ट : इस व्यवस्था में भूमि-स्वामी केवल राजस्व देता है और उसके बदले में एक तिहाई उपज लेता है।

- **कीकमारी** - संकट के समय मुंह पर हथेली लगाते हुए जोर से चिल्लाना।
- **गेली/डीडीया** - मीणा युवकों के गेर खेलने की छड़ी को कहते है।
- **मेवासे** - मीणाओं के जंगल में बने हुए घर।
- मीणा जनजाति हिन्दू राजपूतों के अति निकट रहे हैं। ये लोग जयपुर राज्य के कछवाहा राजपूतों द्वारा आधिपत्य जमानें के पहले वहां के शासक थे।
- ये जनजाति हिन्दुओं के सभी त्यौहार मनाती है।
- **इष्ट देवी** - जीणमाता (सीकर)
- **बुझ देवता :** मीणा जाति के लोक देवता
- **भूरिया बाबा : गौतमेश्वर** (भूरिया बाबा) सिरोही इनके आराध्य देवता है। भूरिया बाबा की सौगन्ध खा कर यह कभी झूठ नहीं बोलते है।
- **प्रमुख मेले** - गौतमजी (सिरोही) रामेश्वर घाट, **चौथ माता**, रणथंभौर गणेशजी (सवाईमाधोपुर), नई का नाथ, शीतला माता. दाँत माता, बाँकी माता (जयपुर), **जीणमाता (सीकर)**, डिग्गी कल्याण जी (टोंक) नारायणी माता (अलवर), **कैलादेवी (करौली)**, भर्तृहरि (अलवर), बीजासण खुर्रा माता, पिपलाज माता (दौसा), बीजासण इन्द्रगढ़ माता (बूंदी) दानाराम महाराज (बस्सी, पाली) इत्यादि।
- कैलादेवी (करौली) मेले में मीणा जनजाति द्वारा **लांगूरिया नृत्य** किया जाता है।
- **प्रमुख नृत्य - लांगूरिया नृत्य, रसिया नृत्य, बम्ब नृत्य, नेजा नृत्य**
- सरकारी आरक्षण नीति के फलस्वरूप मीणा जनजाति के लोग अब उच्च सरकारी पदों पर आसीन हैं।

2. भील (Bhil) -

- भील जनसंख्या की दृष्टि से राज्य की **दूसरी सबसे बड़ी जनजाति (जनसंख्या 41 लाख)** है। राजस्थान की कुल **जनजाति जनसंख्या में 44.38 प्रतिशत** एवं राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग **5.9%** भील जनजाति है।
- राज्य में भील जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, सलूम्बर एवं उदयपुर जिलों में मिलती है। इसके अलावा यह जनजाति राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, सिरोही, जोधपुर जिलों में भी निवास करती है। जनगणना-2011 के अनुसार यह **देश** में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति हैं।
- भारत में भीलों का संकेन्द्रण मध्यप्रदेश (सर्वाधिक), गुजरात, राजस्थान महाराष्ट्र एवं छत्तीसगढ़ राज्यों में पाया जाता है।

-: यह भी जाने :-

भीलों के उद्भव से संबंधित तथ्य -

- वाल्मिकी एवं कालीदास ने रामायण एवं रघुवंश में भीलों का उल्लेख **किरात** के नाम से किया है।
- मानवशास्त्री इन्हें **मुण्डा (Munda)** जाति के वंशज मानते हैं क्योंकि इनकी भाषा में मुंडारी शब्दों का अधिक प्रयोग किया जाता है।
- **रिजले** एवं **क्रुक** भीलों की उत्पत्ति **द्रविड़ों** से मानते है जबकि **थॉमसन** के अनुसार यह **गुजराती** है।
- कर्नल **जेम्स टॉड** में वनवासी भीलों को **'वनपुत्र'** कहा है जबकि टॉलमी ने भीलों को **फिलाइट (तीरंदाज)** कहा है।
- 'Wild Tribes of India' नामक पुस्तक के लेखक **रोने** ने भीलों का मूल निवास मारवाड़ को बताया है।
- **राबर्ट शेफर** ने निषादों को भीलों का पूर्वज माना है।
- भील स्वयं को महादेव की सन्तान मानते हैं। शाब्दिक अर्थ से **'भील' का अर्थ 'तीर' चलाने वाला व्यक्ति** से लिया गया है। ये द्रविड़ भाषा का शब्द है जिसकी उत्पत्ति बिल (Bil) या विल (Vil) अर्थात् तीर से हुई है।

- आर्थिक दृष्टि से ये लोग स्थायी रूप से कृषक, सामाजिक दृष्टि से पितृसत्तात्मक जनजाति एवं परम्परागत रूप से **अच्छे तीरंदाज** होते हैं।
- राजस्थान में आदिवासियों में प्रचलित 'तीर-कमान', **चन्दूजी का गुढ़ा** (बाँसवाड़ा) एवं **बोडीगामा** (डूंगरपुर) में सर्वाधिक बनाये जाते हैं। यह एक प्रकार का जनजातीय हस्तशिल्प है।
- भील जनजाति में राजपूतों के रक्त मिश्रण की पूर्ण संभावनाएं हैं।
- भील जाति अनेक छोटे-मोटे समूह में विभक्त होती है जिन्हें **अटक, ओदाख, गौत्र** या **कुल** कहते हैं।
- **अटक :** भीलों का एक गौत्र।
- ऊंची पहाड़ियों पर रहने वाले भीलों को **पालवी** तथा मैदानी भागों में रहने वाले भीलों को **वागड़ी** कहते हैं।
- **मसार :** कल्याणपुर के ओवरी ग्राम के भील मसार कहलाते हैं। वे अपने आपको धार के पंवार बताते हैं।
- पारड़ा क्षेत्र के भील अपनी उत्पत्ति गुर्जरों से मानते हैं।
- **पारगी :** महुवाड़ा, खेजड़ और सराड़ा क्षेत्र में भील पारगी कहलाते है।
- **सिसोदिया :** देपरा के भील अपने आप को सिसोदिया कहते है।
- **गरासिया भील :** जो गरासिया भीलों में विवाह कर उन्हीं में शरीक हो गए, ये गरासिया भील कहलाए।

- सामाजिक परिवेश की दृष्टि से गरासिया तीन वर्गो में बंटे हुये है - (1) **मोटी नियात** (उच्च वर्ग) (2) **नेनकी नियात** (3) **निचली नियात** (निम्न वर्ग)
- गरासिया समाज से भागों में विभाजित है - (1) भील गरासिया (2) गमेती गरासिया
- **भील गरासिया :** यदि कोई गरासियों पुरुष किसी भील स्त्री से विवाह कर लेता है तो ऐसे परिवार को **भील गरासिया** कहते हैं।
- **गमेती गरासिया :** भील पुरूष द्वारा किसी गरासिया स्त्री से विवाह करने पर वह भील **गमेती गरासिया** कहलाता है।
- गरासिया जनजाति में **जाति पंचायत** का विशेष महत्त्व है।
- **सहलोत/पटेल** - गरासियों के गाँव या बस्ती का मुखिया।
- **घेर (घोर)** - गरासियों के घर को घेर और घरों के समुह को **फालिया** (फली/फलियाँ) कहते हैं।

-: यह भी जाने :-

गरासिया जनजाति में प्रचलित विवाह के प्रकार -

1. **ताणना विवाह** - गणगौर मेले से लड़का लड़की को भगाकर ले जात है। तत्पश्चात पंचों द्वारा निर्धारित **दापा** (वधू मूल्य), वर पक्ष चूकाता है।
2. **मोरबंधिया विवाह** - ब्राह्मण की उपस्थिति में मौर (मौड़) बाँधकर चंवरी में फेरे लेकर विवाह करना।
3. **खेवणा (नाता) विवाह** - किसी कारणवश कोई विवाहित स्त्री किस अन्य पुरुष के साथ रहने लग जाती है और प्रेमी उसके पति को दण्ड की राशि देता है।
4. **पहरावना विवाह** - ब्राह्मण की अनुपस्थिति में नाममात्र के फेरे लेकर किया गया विवाह।
5. **छेड़ा छूट** - पति द्वारा दण्ड चूकाकर पत्नी को तलाक देने की प्रथा।
6. **जीवित नाता** - कोई पुरुष किसी भी स्त्री के पति और उसके परिवार को राशि देकर उससे विवाह कर सकता है। यह ठीक वैसे ही होता है जैसे भीलों में नातरा होता है और झगड़ा राशी व मायस चुकाना पड़ा है।

- **प्रमुख नृत्य - वालर नृत्य, कूद नृत्य, गौर नृत्य, लूर नृत्य, रायण नृत्य, मांदल नृत्य, जवारा नृत्य, गरबा नृत्य, मोरिया नृत्य, गैर नृत्य आदि।**
- ये अत्यंत अंधविश्वासी होते हैं।
- मृत्यु के **12वें दिन** गरासिया **शव का अन्तिम संस्कार** करते हैं।
- आबू की **नक्की झील** इनका वह पवित्र स्थान है जहाँ ये अपने पूर्वजों का **अस्थि विसर्जन** करते हैं।
- **कांधिया (मेक)** - मृत्यु के बारहवें दिन रिश्तेदारों को माँस व मक्के का दलिया खिलाना।
- गरासिया लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति हेतु प्रस्तर प्रतिमा बनवाकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन विधिवत प्रतिष्ठापित करते हैं। इन प्रतिमाओं को यह अपनी भाषा में **हूरा या मोगी** कहते हैं अर्थात् गरासियों द्वारा व्यक्ति की मृत्यु पर बनाया गया स्मारक।
- गरासिया मुख्य रूप से पशुपालन और कृषि करते हैं।
- **थावरी/भावरी (हारी)** - गरासियों में प्रचलित सामूहिक कृषि पद्धति।
- **मोर** - मोर को आदर्श पक्षी मानते हैं और सफेद पशुओं को पवित्र मानते हैं।
- **आखातीज** - गरासियों के नववर्ष की शुरुआत इसी दिन होती है।
- **सोहरी** - गरासियों के अनाज भण्डारण की कोठी।
- **झूलकी** - गरासिया स्त्री व पुरुषों का कमीज जैसा वस्त्र।
- गरासियों में एकी आन्दोलन का सूत्रपात करने वाले व्यक्ति मोतीलाल तेजावत थे।
- **भाखर बावसी** - गरासियों के लोकप्रिय देवता।
- गरासिया जनजाति के लोग प्रतिवर्ष माघ महीने में **'देवरा बावसी'** (भैरूजी महाराज) की विशेष पूजा अर्चना करते हैं।
- गरासिया जनजाति के लोग शिव, भैरव और दुर्गा की पूजा करते हैं।
- इनके जनजाति क्षेत्र में प्रतिवर्ष कई **स्थानीय, संभागीय** व **बड़े मेले भरते हैं**। बड़े मेलों को मनखा रो मेलों नाम से पुकारते है।
- **मनखों रो मेलो** - आबूरोड (सिरोही) के निकट **सियावा** में गरासियों का सबसे बड़ा मेला।
- सिरोही में **सारकेश्वर** के मेले में गरासिया अपने लिये जीवन साथी चुनने के लिए सम्मिलित होते है।
- राजस्थान में गरासिया बाहुल्य क्षेत्र में लगने वाले मेलों में **सियावा** (सिरोही) का गणगौर मेला, **भाखर वाराजी का मेला,** कोटेश्वर का मेला, नेवटी का मेला, दोयतरा का मेला, अम्बाजी का मेला, ऋषिकेश का मेला (सिरोही) तथा देवला का मेला, **चेतर विचितर मेला,** कोटड़ा (उदयपुर) आदि प्रसिद्ध हैं।
- **अन्य मेले नक्की** - आबू, सियावा, मारकुण्डेश्वरजी - अजारी (सिरोही), गोगून्दा का गणगौर मेला आदि।
- **हेलरू** - गरासिया जनजाति के विकास के लिए संचालित सहकारी संस्था।

4. सहरिया (Sahariya) -

- राज्य में सहरिया जनजाति बारां जिले की **शाहबाद** व **किशनगंज तहसीलों** में रहती है। भारत के अधिकांश सहरिया मध्यप्रदेश (6.15 लाख) एवं **राजस्थान (1.11 लाख)** राज्यों में निवास करते हैं। मध्यप्रदेश राज्य में ये लोग मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, भिण्ड, ग्वालियर, दतिया, विदिशा एवं गुना जिलों में निवास करते हैं।

21 राजस्थान : विशेष क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम

◈ भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान अनेक विविधताओं वाला प्रदेश है, जहाँ मरूस्थलीय, पर्वतीय मैदानी तथा पठारी क्षेत्र पाए जाते हैं। इन भौतिक क्षेत्रों की अपनी अलग-अलग समस्याएँ हैं। इन क्षेत्रों में निवास करने वाली विभिन्न जातियों तथा जनजातियों की भी अलग-अलग समस्याएँ हैं। अत: इन क्षेत्रों की विशिष्ट समस्याओं के समाधान के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा समय-समय विशेष क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं।

मरु विकास कार्यक्रम
(Desert Development Programme DDP) -

- केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष **1977-78** में **राष्ट्रीय कृषि आयोग** की सिफारिश से यह कार्यक्रम शुरू किया गया।
- D.D.P. को संचालित करने का मुख्य उद्देश्य मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया पर नियन्त्रण कर इस क्षेत्र के पारिस्थितिकीय सन्तुलन को बनाए रखने के साथ-साथ भूमि उत्पादकता एवं जल संसाधनों में वृद्धि करना रहा है।
- योजना के प्रारम्भ में केन्द्र तथा **राज्य सरकार का वित्तीय पैटर्न का 50:50** था। लेकिन वर्ष 1985-86 के पश्चात् इसका सम्पूर्ण व्यय केन्द्र सरकार द्वारा ही किया जाता रहा है। प्रारम्भ में राज्य के **11 जिलों** में ही यह कार्यक्रम चलाया गया था। लेकिन वर्ष 1994-96 से राज्य के **16 जिलों** अजमेर, जयपुर, सीकर, चूरू, झुन्झुनूं, नागौर, पाली, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, गंगानगर, सिरोही, उदयपुर, राजसमन्द, जैसलमेर के **85 विकास खण्डों** में संचालित किया जा रहा है ।
- मरु विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नांकित कार्य किये जा रहे हैं -

(i) कृषि, वानिकी तथा चारागाह का विकास
(ii) पशुपालन, भेड़पालन तथा डेयरी का विकास
(iii) पशुओं के लिए पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करना एव जल संरक्षण
(iv) लघु सिंचाई परियोजनाओं का विकास
(v) ग्रामीण विद्युतीकरण
(vi) सतही एवं भूमिगत जल संसाधनों का विकास
(vii) बालुका स्तूपों के स्थिरीकरण सम्बन्धी कार्यक्रम

सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम
(Drought Prone Area Programme - D.P.A.P.) -

- केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष **1974-75** में राज्य के पश्चिमी शुष्क क्षेत्र के 8 जिलों में प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में यह कार्यक्रम राज्य के 13 पश्चिमी जिलों (जालौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, चूरू, नागौर) के अतिरिक्त डूंगरपुर, बांसवाड़ा, अजमेर (1-1 तहसील), झुंझुनूं (2 तहसील) तथा उदयपुर (3 तहसील) के **79 विकास खण्डों** में कार्यान्वित किया जा रहा है।
- वर्तमान में केन्द्र तथा राज्य सरकार द्वारा **50 : 50** के अनुपात में वित्तीय भार वहन किया जा रहा है।

उद्देश्य -

- D.P.A.P. का मुख्य उद्देश्य राज्य के सूखा सम्भावित क्षेत्र में सूखे के प्रभाव को कम कर सामाजिक परिसम्पत्तियों का निर्माण करना है जिससे इन क्षेत्रों के ग्रामीण निवासियों को रोजगार प्राप्त हो सकें तथा उनकी आय में वृद्धि हो। इसके अन्तर्गत निम्नांकित कार्य किये जा रहे हैं -

(i) सघन वृक्षारोपण कर मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया पर नियन्त्रण।
(ii) उपलब्ध जल संसाधनों का वैज्ञानिक ढंग से नियोजित उपयोग।
(iii) सिंचाई सुविधाओं का विस्तार।
(iv) मानव तथा पशुओं के लिए पेयजल आपूर्ति तथा पशुओं के लिए घास एवं चारे की व्यवस्था करना।
(v) मिट्टी अपरदन को नियन्त्रित करना एवं मृदा की नमी को संरक्षित करना।
(vi) रोजगार के अतिरिक्त साधनों का विकास कर आय बढ़ाना।

अरावली विकास कार्यक्रम
(Aravali Development Programme) -

- केन्द्र सरकार द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों के विकास सम्बन्धी कार्यक्रमों तथा पहाड़ी क्षेत्रों के पारिस्थितिकी तन्त्र की सुरक्षा के लिए यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया।
- इसके अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण, परिवेश सन्तुलन, सन्तुलित आर्थिक-सामाजिक- सांस्कृतिक विकास तथा पारिस्थितिकी सन्तुलन पर विशेष बल दिया जाता है।

- इस कार्यक्रम के तहत कृषि, लघु सिंचाई परियोजना, वानिकी, पशुपालन, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, पुनर्वास सहायता आदि पर व्यय किया जा रहा है ताकि सहरिया जनजाति का चहुँमुखी विकास किया जा सके।

4. माडा क्लस्टर योजना (MADA Cluster Scheme) -

- यह कार्यक्रम राज्य के **7 जिलों** में **11 माडा क्लस्टर केन्द्रों** पर संचालित किया जा रहा है जिनकी कुल जनसंख्या 5 हजार या इससे अधिक है तथा जिसमें 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ST की है।
- यह योजना **बूँदी** (पीपलदा), **बारां** (दीगोद, अटरू, बाँस), **झालावाड़** (खानपुरा, पूर्वी अकलेरा, दक्षिणी अकलेरा), **अजमेर** (केकड़ी), **राजसमन्द** (नाथद्वारा, राजसमन्द), **भरतपुर** (उत्तरी एवं दक्षिणी वैर), **सवाईमाधोपुर** (खण्डार) जिलों में यह योजना चलायी गयी है।

5. बिखरी जनजाति विकास कार्यक्रम (Scattered Tribal Development Programme) -

- इस योजना का **प्रारम्भ 1979** में किया। डूंगरपुर, बाँसवाड़ा को छोड़कर राज्य के 31 जिलों में यह योजना चलाई गयी है।
- इन **31 जिलों** में लगभग 12.48 लाख जनजातियां जनसंख्या अलग-अलग क्षेत्रों में बिखरे हुए रूप में निवास करती है। जिनके लिए जन कल्याणकारी योजनाएँ इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चलाई जा रही हैं।

6. जनजाति क्षेत्र रेशम कीट पालन कार्यक्रम (Tribal Area Sericulture Programme) -

- जनजाति के लोगों के लिए आय के लिए अतिरिक्त साधन के रूप में यह कार्यक्रम चलाया गया है। इसके अन्तर्गत उन्नत किस्म के शहतूत के पौधे उपलब्ध करवाने के साथ-साथ रेशम कीट पालन का प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि ये अतिरिक्त आय अर्जित कर सके।

7. समन्वित नारू रोग उन्मूलन परियोजना (स्वच्छ परियोजना) (Integrated Naroo Disease Eradication Project) -

- राज्य सरकार ने **यूनिसेफ** के सहयोग से **1985** में पाँच वर्षीय समन्वित नारू उन्मूलन परियोजना चालू की गयी जो 31 मार्च, 1992 को समाप्त हो गयी थी। इसके अन्तर्गत राजसमन्द, उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा जिलों को सम्मिलित किया गया था।

8. एकलव्य योजना (Eklavya Yojana) -

- भारत विकास परिषद् द्वारा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में इनके बच्चों के विकास के लिए क्रियान्वित की गयी है। इस योजना के तहत विद्यालय, छात्रावास तथा स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना की गयी है।

9. रूख भायला कार्यक्रम -

- इसे **वृक्ष मित्र कार्यक्रम** के नाम से भी जाना जाता है। यह कार्यक्रम जनजातीय क्षेत्रों में सामाजिक वानिकी योजना के विस्तार तथा पेड़-पौधों की अवैध कटाई पर नियंत्रण इसका प्रमुख उद्देश्य है।

जनजाति क्षेत्रीय विकास से सम्बन्धित अन्य गतिविधियाँ -

(i) एक जनजाति अनुसंधान संस्थान (Tribal Research Institute, TRI)

- यह संस्थान उदयपुर में स्थापित किया गया है। इसमें जनजाति के लोगों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान किए जाते हैं। यह केन्द्र-प्रवर्तित स्कीम है। जिसमें केन्द्र व राज्यों का वित्तीय पैर्टन **50:50** है।

(ii) पोषण कार्यक्रम -

- यह कार्यक्रम एकीकृत बाल विकास कार्यक्रम के तहत आँगनबाड़ी केन्द्रों में संचालित किया जाता है जिसमें स्त्रियों व बच्चों के पोषण के सुधार पर ध्यान दिया जाता है। इससे माताओं व शिशुओं के स्वास्थ्य में सुधार आता है।

-: यह भी जाने :-

जनजातीय विकास हेतु प्रमुख संस्थाऐं -

1. **वनवासी कल्याण परिषद, उदयपुर - आदिवासी को गले लगाओ इसका प्रसिद्ध नारा रहा है।**
2. **माणिक्य लाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर- 1964**
3. **जनजाति विकास विभाग- 1974**
4. राजस्थान जनजातीय क्षेत्रीय विकास सहकारी संघ **(राजसं संघ)** प्रतापनगर (उदयपुर) - मार्च 1976
5. ट्राइबल को-ऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट ऑफ इंडिया **(TRIFED)** - अगस्त, 1987
6. अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास सहकारी निगम-1989
7. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं जनजाति वित्त विकास निगम (NSFDC) 8 फरवरी, 1989
8. राजस्थान अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग - 2001
9. जनजातीय सलाहकार परिषद (TAC) - स्थापना 6 जून, 2014 को, 15 जून, 2016 पुर्नगठन के उपरांत **मुख्यमंत्री** राजस्थान सरकार को पदेन अध्यक्ष बनाया गया।

मेवात प्रादेशिक विकास परियोजना

(Mewat Regional Development Project) -

- राजस्थान सरकार ने अलवर - भरतपुर जिलों में निवास करने वाले **मेव जाति** के लोगों के सामाजिक-आर्थिक विकास के उद्देश्य से वर्ष **1987-88** में इस परियोजना का शुभारम्भ किया गया।
- इसके लिए सर्वप्रथम **1987 ई.** में राज्य सरकार द्वारा **मेवात प्रादेशिक विकास बोर्ड** की स्थापना की गयी।

22 राजस्थान : मरूस्थलीकरण

- मरूस्थलीकरण से तात्पर्य है उपजाऊ एवं अमरूस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप से शुष्क प्रदेश अथवा मरूस्थल में परिवर्तित हो जाना। अर्थात् मरूस्थलीय एक **प्रक्रिया** है जिसके द्वारा किसी भू-भाग में रेगिस्तान या मरूभूमि का निर्माण या विस्तार होता है।
- सर्वप्रथम 1949में ऑबरविले नामक प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री ने मरूस्थलीकरण की ओर संकेत किया था।
- **मैन (Mann)** के अनुसार - ''मरूस्थलीकरण जलवायवीय मृदीय तथा जैविक कारको की अन्तर्क्रिया से उत्पन्न होता है।''
- ICAR के आकलन के अनुसार देश की लगभग 187.7 मिलियन हैक्टयर भूमि तथा राज्य का 57.1% भौगोलिक क्षेत्रफल किसी न किसी रूप में भूमि ह्रास का शिकार है।
- मरूस्थलीकरण की स्थिति के वैज्ञानिक रूप से आंकलन के लिये 2001 में भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय दिल्ली ने एक राष्ट्रीय प्रोजेक्ट पर कार्य करते हुए **इसरो** (ISRO-SAC) को इसकी जिम्मेदारी दी गई।
- 17 जून, 1994 में पेरिस में मरूस्थलीकरण को बढ़ने से रोकने एवं उसके दुष्प्रभावों पर चर्चा के लिए एक सम्मेलन हुआ था। भारत सरकार ने इस पर सहमति जताते हुए इसका क्रियान्वयन 1997 में Thematic programme Network-I (TPN-I) के अन्तर्गत किया गया।
- **इसरो** (ISRO-SAC) द्वारा 2001 में इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के रूप में मरूस्थलीकरण प्रोजेक्ट पर कार्य करना प्रारम्भ किया।
- इसरो **(ISRO-SAC अहमदाबाद)** द्वारा इस संदर्भ में 2007 में रेगिस्तानीकरण एवं भूमिरक्षण एटलस के रूप में एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें बताया गया की **राजस्थान का 67% क्षेत्र रेगिस्तानीकरण के अन्तर्गत आता है।** इसमे से 44.42% पवन अपरदन, 11.22% जल अपरदन 6.25% वनस्पति अवक्रमण तथा 1.07% लवणीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत आता है।
- राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में सर्वाधिक क्षेत्रफल मरूस्थलीकरण/भू-अवक्रमण का है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र में द्वितीय स्थान रखता है।
- **रेगिस्तानीकरण एवं भूमिरक्षण एटलस** (desertification/Land Degradation Atlas) 2016 के अनुसार **2011-13 में राज्य का 62.90% क्षेत्र रेगिस्तानीकरण से प्रभावित है** जो पूर्व निर्धारित 67% से कम है। इसमें से 44.14% पवन अपरदन, 7.62% वनस्पति अवक्रमण, 6.18% जल अपरदन तथा 1.06% लवणीयता के प्रक्रम का हिस्सा है। इस एटलस का विमोचन AFRI द्वारा किया गया।
- राजस्थान में मरूस्थलीकरण से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र **पश्चिमी राजस्थान** है जिसमें बाड़मेर जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, जालौर, जिले है। इसके अलावा अर्द्धशुष्क क्षेत्र में नागौर, सीकर, जयपुर झुंझुनूं, चुरू, अजमेर, दौसा पाली जिले है। गंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों में यद्यपि सिंचाई सुविधाओं का विस्तार हआ है किन्तु यह भी मरूस्थलीकरण से अछूते नहीं है।
- वर्तमान में मरूस्थलीय क्षेत्र की वृद्धि मरूस्थलीय क्षेत्रों में सिंचित भूमि की लवणता में वृद्धि, रिसाव तथा सेम की समस्या के रूप में भी प्रकट हो रही है।

मरूस्थलीकरण एवं सुखा -

- यह भ्रम है कि मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया मरूस्थल से ही शुरू होती है या आस-पास मरूस्थल होना जरूरी है। वास्तव में मरूस्थलीकरणकी प्रक्रिया मृदा-विनाश, अतिचारण, अतिहलन आदि से शुरू होकर समस्त क्षेत्र में फैल जाती है।
- दूसरा यह भ्रम है कि मरूस्थलीकरण की शुरूआत सूखे के कारण होती है। लेकिन मरूस्थलीकरण मुख्यत: अतिचारण, अति वन दोहन, अतिहलन, अतिकृषण, अनुचित मृदा और जल-प्रबंधन और भूमि प्रदूषण द्वारा ही शुरू व प्रोत्साहित होता है।

मरूस्थलीकरण के कारण -

(A) मानवीय कारण -

- भूमि उपयोग परिवर्तन तथा अतिहलन (Over Ploughing)
- चरागाहों पर दबाव एवं अनियंत्रित पशुचारण
- भौम जल का अंधाधुंध दोहन के परिणामस्वरूप भू-जल स्तर में गिरावट
- वृक्षों की अंधाधुंध कटाई
- जनसंख्या दबाव
- संसाधनों का अत्यधिक विदोहन

23 राजस्थान : सुखा-अकाल, पर्यावरणीय समस्याएं, आपदा-प्रबंधन और महामारियां

सुखा एवं अकाल

◈ सुखा एवं अकाल एक प्राकृतिक आपदा है सामान्यत: वर्षा की कमी के कारण क्षेत्र में जल की कमी की स्थिति को **सुखा** तथा सुखे की स्थिति के कारण क्षेत्र में मनुष्यों व पशु पक्षियों के लिए खाद्यान्न चारा व पीने के पानी की कमी हो जाती है उसे **अकाल** कहा जाता है।

◈ अकाल राजस्थान की स्थायी त्रासदी है। राज्य का ज्यादातर भाग रेगिस्तानी एवं कम वर्षा वाला है। भौगोलिक स्थिति के कारण राज्य में मानसून सबसे अन्त में पहुंचता है और सबसे पहले वापस चला जाता है। वर्षा की न्यूनता,अनियमितता और अनिश्चितता के कारण राज्य में अधिकांशत: अकाल की स्थिति हरदम बनी रहती है। इन्हीं सब के कारण अकाल एवं राजस्थान को एक दूसरे का पर्याय कहा जाता रहा है। यहां के निवासियों को किसी ना किसी रूप में हमेशा ही अकाल का सामना करना पड़ता है।

◈ राज्य में किसी वर्ष अकाल अधिक भयावह होता है तो किसी वर्ष कुछ कम। 1662 में मेवाड़ में भयंकर अकाल पड़ा जिसके तहत **राजसमंद झील का निर्माण** कराया गया। यह देश का सर्वप्रथम अकाल राहत कार्य था।

◈ 1899 में भी भयंकर अकाल पड़ा। यह विक्रम सम्वत् 1956 का वर्ष था इसलिए इसे **छप्पनियाँ अकाल** नाम दिया गया। जन व पशुधन की हानि व पलायन की अधिकता से इस कुख्यात अकाल को आज तक लोग भूले नहीं हैं।

◈ राजस्थान गत 100 वर्षों के सबसे भीषण अकाल की चपेट में आ गया था। इसे **'मैक्रो ड्रॉट'** यानि **'वृहद् अकाल'** की संज्ञा दी गई है। राजस्थान बनने के बाद से वर्ष 1959-60, 1973-74, 1975-76, 1976-77, 1990-91 व 1994-95 को छोड़कर अन्य वर्षों में अकाल की स्थिति राज्य के किसी न किसी भाग में कमोवेश लगातार विद्यमान रही है।

◈ राज्य की 75 प्रतिशत खेती वर्षा पर निर्भर रहती है। प्रदेश में कुओं का जलस्तर बहुत नीचे है तथा कुछ जगह पानी फ्लोराइड युक्त व खारा भी है जो कि सिंचाई एवं पेयजल हेतु उपयुक्त नहीं होता है। राज्य के अधिकतर क्षेत्र में सिंचाई कुओं व नलकूपों से होती है तथा कम वर्षा के समय अक्सर कुएँ व नलकूप सूख जाते हैं अथवा जल स्तर बहुत नीचे चला जाता है। समय पर पर्याप्त वर्षा न होने के कारण खरीफ व रबी दोनों ही फसलें खराब हो जाती है।

◈ राजस्थान में अकाल के संदर्भ में एक प्रसिद्ध उक्ति है - **'तीजो कुरियो आठों काल'** अर्थात् प्रत्येक तीसरे वर्ष छोटा/अर्द्ध अकाल और आठवें वर्ष भंयकर अकाल होता है।

◈ **त्रिकाल :** अकाल का वह रूप जिसमें भोजन, पानी व चारे का संकट उत्पन्न हो जाता है। यह सबसे भयंकर अकाल माना जाता है। 1987-1988 में त्रिकाल पड़ा था। यह अकाल **20वीं शताब्दी में राजस्थान का सबसे भीषण अकाल** रहा, जिसने 28 में से 27 जिलों के 36252 गांवों की 3.17 करोड़ जनता व अधिकांश: पशुओं को अपनी चपेट में ले लिया था।

◈ **कुछ प्रमुख अकाल** -

- चालिसा अकाल - 1783 ई.
- पंचकाल - 1812-13 ई.
- सहसा भुदूसा - 1843-44 ई. (1900-01 वि.स.)
- छप्पिनयां अकाल - 1899 - 1900 (1956 विक्रम संवत्)

◈ **वर्ष 2002-03** में राज्य के 40990 गाँव अप्रत्याशित अकाल व सूखे से प्रभावित रहे। इस वर्ष राजस्थान मे अब तक के सुखे एवं अकाल से प्रभावित गाँवों की संख्या व राज्य की जनसंख्या (4.4 करोड़) सर्वाधिक रही थी।

◈ एक प्रसिद्ध राजस्थानी कहावत के अनुसार -

''पग पुगल, धड़ कोटड़े, बाहु बाड़मेर
जावे लादे जोधपुर, ठावो जैसलमेर।''

अर्थात् पश्चिमी राजस्थान सर्वाधिक अकाल एवं सुखे की संभावनाओं वाला क्षेत्र है।

सूखा व अकाल के कारण -

◈ राज्य की अर्थव्यवस्था मानसून पर आधारित है, इसलिये अकाल का प्रमुख कारण मानसून की अनियमितता एवं अनिश्चितता है लेकिन इसके अतिरिक्त भी अन्य निम्न कारण हो सकते हैं जो अकाल की स्थिति उत्पन्न होने में सहायक हैं -

(A) प्राकृतिक कारण - (i) शुष्क जलवायु, (ii) उच्च तापमान, (iii) वर्षा की कम मात्रा, (iv) वर्षा की प्रकृति में अनियमितता, (v) वनों की कमी, (vi) ओलावृष्टी, (vii) पर्यावरण में असन्तुलन, (viii) नित्यवाही नदियों के प्रवाह क्षेत्र के बाहर वाले क्षेत्रों की स्थिति।

(B) आर्थिक कारण - (i) मरूस्थली प्रदेश की कमजोर अर्थव्यवस्था, (ii) सीमित संसाधन, (iii) फसलों का रोगग्रस्त हो जाना, (iv) पशुओं की संख्या में वृद्धि, (v) जनसंख्या की वृद्धि का बोझ

24 शब्दावली

- **जल विभाजक रेखा** - राजस्थान की अपवाह प्रणाली में अरावली पर्वतमाला एक महान जल विभाजक रेखा है जो नदियों के जल को बंगाल की खाड़ी व अरब सागर में बांटती है। इसके पूर्व की नदियां अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा पश्चिम की नदियां अपना जल अरब सागर में डालती है।
- **गौडवार प्रदेश** - यह लूनी व उसकी सहायक नदियों का अपवाह बेसिन है जिसमें पाली, जोधपुर, सांचौर, जालौर, बालोतरा व बाड़मेर जिलों का कुछ क्षेत्र सम्मिलित है। इस क्षेत्र में जैनों के **पंच तीर्थ** स्थल स्थित है।
- **थार** - भारत का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (गुजरात, राजस्थान, पंजाब व हरियाणा) से लेकर पाकिस्तान के सिंध प्रान्त तक का मरूस्थलीय क्षेत्र थार कहलाता है। यहाँ वनस्पतिविहीन क्षेत्र पर बालू रेत का विस्तार पाया जाता है।
- **थली** - पश्चिमी मरुस्थल का वनस्पतिविहिन पूर्णत: रेतीला भू-भाग जिसमें मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी बीकानेर, दक्षिण-पूर्वी गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू के अधिकांश भाग व फलौदी शामिल है तथा यहाँ बालुका स्तूपों की प्रधानता है, थली कहलाता है।
- **राजस्थान बांगड़** - अरावली और शुष्क मरूस्थलीय प्रदेश के बीच फैला अर्द्ध शुष्क मैदान जहाँ औसत वर्षा 25-50 सेमी. होती है एवं यह आन्तरिक प्रवाह का क्षेत्र।
- **बालसन** - मरुस्थल का वह भाग जो पर्वतों या चट्टानों से घिरा हो, इसके मध्य जल का इक्कट्ठा होने से बनी झीलें बालसन कहलाती है।
- **कुबड़ पट्टी** - नागौर व अजमेर जिले में भूगर्भीय जल में फ्लोराइड की अधिकता से **फ्लोरोसिस रोग** के कारण लोग कुबड़े हो रहे हैं, यह अत्यधिक फ्लोरोसिस प्रभावित क्षेत्र ही कुबड़ पट्टी कहलाता है।
- **मेरवाड़ा** - अंग्रेजों ने मेवाड़ और मारवाड़ रियासतों का उपद्रवग्रस्त क्षेत्र जो उस समय मेर जाति का निवास स्थल था, उसे अंग्रेजों ने एक प्रशासनिक जिले में बदल दिया। वर्तमान में यह क्षेत्र अजमेर, पाली, राजसमंद, भीलवाड़ा में फैला हुआ है।
- **रन** - मरुस्थल में बालुका स्तूपों के बीच कहीं-कहीं निम्न भूमियों में वर्षा जल भर जाने से अस्थायी झीलें बन जाती है। इन क्षेत्रों में लवणता का उच्च प्रतिशत मिलता है। कनोड़, पोकरन, बाप, थोब, व ताल छापर आदि प्रमुख रन क्षेत्र है।
- **तापान्तर** - तापमान के उच्चतम व न्यून बिन्दू के मध्य के अन्तर को तापान्तर कहते है।
- **दैनिक तापान्तर** - दिन-रात के सर्वाधिक तापमान एवं न्यूनतम तापमान के अन्तर को दैनिक तापान्तर कहा जाता है।
- **समदाब रेखा** - मानचित्र पर समान वायु दाब वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा को समदाब रेखा कहते है।
- **समताप रेखा** - मानचित्र पर समान तापमान वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा को समताप रेखा कहते है।
- **मरुद्भिद वनस्पति** - मरुस्थलीय जलवायु में उच्चताप, कम वर्षा में उगने वाली कंटीली, लम्बी जड़ों व छोटी पत्ती वाली वनस्पति को मरूद्भिद वनस्पति कहा जाता है। उदाहरण - कैर, खेजड़ी, देशी बबूल, थोर आदि।
- **थोर** - यह एक मरुस्थल एवं चट्टानी ढालों पर उगने वाली कंटीली झाड़ी होती है जिसका उपयोग सूखने पर ईंधन के रूप में किया जाता है।
- **रथ प्रदेश** - उत्तर-पूर्वी राजस्थान के अलवर, भरतपुर, धौलपुर का पश्चिमी भाग जो रथ नस्ल के चौपाया पशुओं के लिये जाना जाता है। इस क्षेत्र में **मुर्रा भैंस** व **अलवरी बकरी** ज्यादा पाली जाती है।
- **शुष्क खेती** - वर्षा की कमी वाले शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षा की नमी को संरक्षित कर बगैर सिंचाई के कृषि करना, शुष्क कृषि कहलाता है।
- **नाचना** - रेगिस्तान के प्रसार के लिए विख्यात नाचना जैसलमेर जिले का एक गांव है। नाचना का ऊँट सवारी के लिए देश भर में प्रसिद्ध है।
- **नाली** - हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी का पाट नाली कहलाता है। इसके अलावा नाली एक भेड़ की नस्ल भी है जिससे लम्बे रेशे वाली ऊन प्राप्त होती है। यह भेड़ श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ चूरू व बीकानेर में पाली जाती है।
- **मानसून का प्रत्यावर्तन** - अक्टूबर महीने में मानसूनी हवाएं स्थल भाग से वापस हिन्द महासागर की ओर लौटने लगती है इसे ही मानसून का प्रत्यावर्तन कहा जाता है।
- **उत्पादकता** - फसलों का प्रति हैक्टर उत्पादन उत्पादकता कहलाता है।
- **जनसंख्या घनत्व** - प्रति वर्ग किलोमीटर में निवास करने वाली जनसंख्या को जनसंख्या घनत्व कहा जाता है।

राजस्थान जनगणना-2011 (संशोधित अन्तिम आँकड़े)

क्र. सं.	जिले	क्षेत्रफल	जनसंख्या			जनसंख्या अनुपात	ग्रामीण			शहरी			दशकीय वृद्धि दर %	लिंगानुपात	घनत्व	0-6 आयु की जनसंख्या		शिशु (0-6) लिंगानुपात	0-6 आयु में लिंगानुपात	
			कुल	पुरूष	स्त्री		जनसंख्या	प्रतिशत	लिंगानुपात	जनसंख्या	प्रतिशत	लिंगानुपात				कुल	प्रतिशत		ग्रामीण	शहरी
	राजस्थान	**342239**	**68548437**	**35550997**	**329974440**	**100**	**51500352**	**75.13**	**933**	**17048085**	**24.87**	**914**	**21.3**	**928**	**200**	**10649504**	**15.54**	**888**	**892**	**874**
1	गंगानगर	10978	1969168	1043340	925828	2.87	1433736	72.81	890	535432	27.19	878	L 10.0	887	179	255475	L 12.97	854	859	842
2	हनुमानगढ़	9656	1774692	931184	843508	2.59	1424228	80.25	907	350464	19.75	902	16.9	906	184	234226	13.20	878	884	852
3	बीकानेर	II 30239	2363937	1240801	1123136	3.45	1563553	66.14	903	800384	33.86	909	24.3	905	78	400554	16.94	908	909	II 906
4	चुरू	13835	2039547	1051446	988101	2.97	1463312	71.75	938	576235	28.25	944	20.3	940	147	317813	15.58	902	903	899
5	झुंझुनूं	5928	2137045	1095896	1041149	3.12	1647966	77.11	956	489079	22.89	932	11.7	950	361	288470	13.50	L 837	L 832	854
6	अलवर	8380	III 3674179	II 1939026	III 1735153	III 5.36	II 3019728	82.19	900	654451	17.81	872	22.8	895	IV 438	III 587959	16.00	865	867	851
7	भरतपुर	5066	2548462	1355726	1192736	3.72	2053363	80.57	878	495099	19.43	887	21.4	880	II 503	436165	17.11	869	873	852
8	धौलपुर	L 3035	1206570	653647	552869	1.76	959066	79.49	L 841	247450	20.51	865	22.7	L 846	398	217613	IV 18.04	857	860	L 841
9	करौली	5524	1458248	783639	674609	2.13	1240143	85.04	856	218105	14.96	889	20.9	861	264	241357	16.55	852	850	866
10	सवाईमाधोपुर	4498	1335551	704031	631520	1.95	1069084	80.05	894	266467	19.95	911	19.6	897	297	201188	15.06	871	871	868
11	दौसा	3432	1634409	857787	776622	2.38	1432616	87.65	905	201793	12.35	906	23.5	905	III 476	258144	15.79	865	867	847
12	जयपुर	11143	H 6626178	H 3468507	H 3157671	H 9.67	H 3154331	L 47.60	920	H 3471847	II 52.40	902	26.2	910	H 595	H 929926	14.03	861	869	853
13	सीकर	7732	2677333	1374990	1302343	3.90	2043427	76.32	951	633906	23.68	935	17	947	346	379874	14.19	848	843	865
14	नागौर	17718	IV 3307743	IV 1696325	IV 1611418	IV 4.82	III 2670539	80.74	951	637204	19.26	945	19.2	950	187	507176	15.33	897	894	H 907
15	जोधपुर	IV 22850	II 3687165	III 1923928	II 1763237	II 5.38	2422551	65.7	922	II 1264614	IV 34.40	906	III 27.7	916	161	II 606490	16.44	891	892	888
16	जैसलमेर	H 38401	L 669919	L 361708	L 308211	L 0.98	L 580894	86.71	859	89025	13.29	L 807	II 31.8	852	L 17	L 130463	H 19.47	874	873	881
17	बाड़मेर	III 28387	2603751	1369022	1234729	3.8	2421914	II 93.02	902	181837	6.98	899	H 32.5	902	92	501522	II 19.26	904	905	896
18	जालौर	10640	1828730	936634	892096	2.67	1676975	91.7	955	151755	8.3	921	26.2	952	172	316455	17.30	895	895	893
19	सिरोही	5136	1036346	534231	502115	1.51	827692	79.87	951	208654	20.13	897	21.8	940	202	173364	16.73	897	904	863
20	पाली	12387	2037573	1025422	1012151	2.97	1577567	77.42	H 1003	460006	22.58	934	11.9	III 987	164	297434	14.60	899	905	880
21	अजमेर	8481	2583052	1324085	1258967	3.77	1547642	59.92	961	IV 1035410	III 40.08	936	18.6	951	305	381167	14.76	901	907	890
22	टोंक	7194	1421326	728136	693190	2.07	1103603	77.64	943	317723	22.35	H 985	17.3	952	198	204038	14.40	892	897	872
23	बूंदी	5776	1110906	577260	533746	1.62	888205	79.95	924	222701	20.05	929	15.4	925	192	159884	14.39	894	895	887
24	भीलवाड़ा	10455	2408523	1220736	1187767	3.51	1895869	78.72	IV 984	512654	21.28	932	19.2	973	230	301683	15.02	III 928	III 933	III 904
25	राजसमंद	4655	1156597	581339	575258	1.69	972777	84.11	II 998	183820	15.89	948	17.7	II 990	248	176041	15.22	903	905	890
26	डूंगरपुर	3770	1388552	696532	692020	2.03	1299809	H 93.61	III 996	88743	L 6.39	IV 951	25.4	H 994	368	242239	17.44	922	925	861
27	बांसवाड़ा	4522	1797485	907754	889731	2.62	1669864	III 92.90	981	127621	7.1	II 964	IV 26.5	980	397	325283	III 18.10	H 934	H 937	869
28	चित्तौड़गढ़	7822	1544338	783171	761167	2.25	1259074	81.53	978	285264	18.47	944	16.1	972	197	212507	13.76	912	IV 916	892
29	कोटा	5217	1951014	1021161	929853	2.85	774410	39.69	930	III 1176604	H 60.31	898	24.4	911	374	255056	13.07	899	910	890
30	बारां	6992	1222755	633945	588810	1.78	968541	79.21	928	254214	20.79	930	19.7	929	175	182665	14.94	912	914	IV 901
31	झालावाड़	6219	1411129	725143	685986	2.06	1181838	83.75	949	229291	16.25	933	19.6	946	227	208205	14.75	912	IV 916	888
32	उदयपुर	11724	3068420	1566801	1501619	4.48	IV 2459694	80.16	966	608426	19.83	929	23.7	958	262	IV 508550	16.57	IV 924	III 933	865
33	प्रतापगढ़	4449	867848	437744	430104	1.27	796041	IV 91.73	IV 984	L 71807	8.27	III 963	22.8	IV 983	195	150518	17.34	II 933	II 936	898

नवीन राजस्थान का मानचित्र

(अभ्यास हेतु)

भूगोल से संबंधित जानकारी के लिए एच. पी. टेलर सर के टेलीग्राम ग्रुप से जुड़े

हरि प्रसाद टेलर (व्याख्याता भूगोल)

बिरानियां, तहसील : फतेहपुर शेखावाटी जिला : सीकर

शैक्षणिक योग्यता : B.Sc., M.Sc. (Geography), NET, SET

चयन : RPSC द्वारा आयोजित स्कूल व्याख्याता (भूगोल) परीक्षा 2015

RPSC द्वारा आयोजित वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान) परीक्षा 2011

RPSC द्वारा आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल परीक्षा 2018 & 2021 में साक्षात्कार हेतु चयन

लेखन : असिस्टेंट प्रोफेसर तृतीय प्रश्न-पत्र हेतु 'राजस्थान का सामान्य ज्ञान'

I ग्रेड प्रथम प्रश्न-पत्र हेतु 'राजस्थान का भूगोल एवं भारतीय राजव्यवस्था'

II ग्रेड प्रथम प्रश्न-पत्र हेतु 'सामान्य ज्ञान' (G.K.)

II ग्रेड द्वितीय प्रश्न-पत्र हेतु 'सामाजिक विज्ञान' (भूगोल)

III ग्रेड अध्यापक भर्ती परीक्षा हेतु 'राजस्थान का भूगोल'

LDC प्रथम प्रश्न-पत्र हेतु 'सामान्य ज्ञान'

कृषि पर्यवेक्षक परीक्षा हेतु 'सामान्य ज्ञान'

@HPTAILOR1710

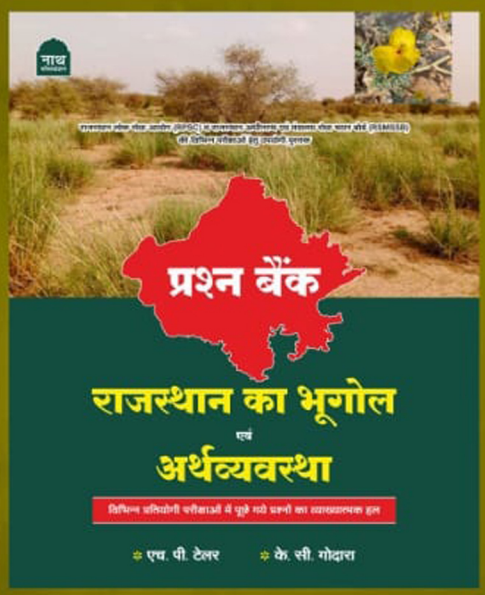

नाथ पब्लिकेशन

नाथ पब्लिकेशन, सीकर

Helpline 9784649918